०।४७।५१।०

५।१०।१२।०

५।५८।३ अर्थात् बृहस्पतिवार को ५८ घटी ३ पल इष्टकाल पर वर्षप्रवेश हुआ माना जायेगा।

अन्य उदाहरण—२००३ वर्तमान संवत् में से

१९७२ जन्म संवत् को घटाया

३१ गतवर्ष संख्या हुई; इसके नीचे वर्षप्रवेश सारणी में ४।१।३६।३० लिखा है, इसमें जन्मसमय की वारादि संख्या को जोड़ दिया तो—

४। १।३६।३० सारणी के वारादि

५।५२।४१।५३ जन्म के वारादि

९।५४।१८।२३ यहाँ वार स्थान में ७ से अधिक होने के कारण ७ का भाग दिया तो शेष २।५४।१८।१३ वर्षप्रवेशकालीन वारादि इष्ट हुआ, अर्थात् सोमवार को ५४ घटी १८ पल २३ विपल पर वर्षप्रवेश माना जायेगा।

वर्षप्रवेश सारणी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६
१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८
३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५
२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६
५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४
३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२२
१९	५१	२२	५४	२४	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१५
०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४
५	६	१	२	३	४	६	०	०	३	४	५	६	१	२	३
४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३
४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६
३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१
५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०
३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

वर्षप्रवेश की तिथि का साधन

गतवर्ष की संख्या को ११ से गुणा करके दो स्थानों में रखें। प्रथम स्थान की राशि में १७० का भाग देने से जो लब्धि आवे उसे द्वितीय स्थान की राशि में जोड़ दें। इस योगफल में जन्मकालिक तिथि को शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से गिनने पर जो संख्या हो उसे भी जोड़कर ३० का भाग दें। जो शेष बचे, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से गिनने पर उस संख्यक तिथि में वर्षप्रवेश जानना चाहिए। पहले निकाले गये वार में यह तिथि प्रायः मिल जाती है, लेकिन कभी-कभी एक तिथि का अन्तर भी पड़ जाता है। जब-जब अन्तर आवे उस समय वार को ही प्रधान मानकर उस वार की तिथि को ग्रहण करना चाहिए।

उदाहरण—गतवर्ष संख्या ३४ है। ३४ × ११ = ३७४

३७४ ÷ १७० = २ लब्धि और शेष ३४; ३७४ + २ = ३७६, इसमें जन्म-तिथि की संख्या अभीष्ट उदाहरण के अनुसार शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से गिनकर १२ जोड़ दी।

अतः ३७६ + १२ = ३८८ ÷ ३० = १२ लब्धि, शेष २८। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से २८ संख्या तक तिथि गणना की तो यह संख्या—२८वीं संख्या कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को आयी। अतः वर्षप्रवेश प्रस्तुत उदाहरण का मार्गशीर्ष वदी १३ बृहस्पतिवार को ५७ घटी ३ पल इष्टकाल पर माना जायेगा।

वर्षप्रवेश के तिथि, नक्षत्र, वार आदि जानने की एक सरल विधि

ज्योतिष-शास्त्र में वर्षप्रवेशकालीन तिथि, वार निकालने का एक सरल नियम यह भी बताया गया है कि जन्मकाल का सूर्य और वर्षप्रवेशकाल की सूर्य राशि, अंशादि में समान होता है। जिस दिन उस संवत् में जन्मकालीन सूर्य के राशि, अंशादि मिल

जायें, उसी दिन उतने ही मिश्रमानकालिक इष्टकाल पर वर्षप्रवेश समझना चाहिए। प्रस्तुत उदाहरण में जन्मकालीन सूर्य ७।५।४१।४१ है, यह मार्गशीर्ष कृष्ण १३ गुरुवार की रात को ५८।३ इष्टकाल पर मिल जाता है, अतः इसी दिन वर्षप्रवेश माना जायेगा।

वर्षकुण्डली का लग्न जन्मकुण्डली के लग्न के समान ही बनाया जाता है। यहाँ पर लग्नसारणी के अनुसार लग्न का उदाहरण दिखलाया जा रहा है—

५८।३ वर्षप्रवेश का इष्टकाल
४०।४३।१६ सारणी में प्राप्त सूर्यफल

३८।४६।१६ योगफल

इस योगफल को पुनः लग्नसारणी में देखा तो ६।२३ का फल ३८।३६।२३ और ६।२४ का ३८।४७।५२ मिला। अभीष्ट योगफल ३८।४६।१६ है; अतः इसे २३ और २४ अंश के मध्य का समझना चाहिए। कला, विकला को निकालने के लिए प्रक्रिया की—

३८।४७।५२, २४ अंश के फल में से
३८।३६।२३, २३ अंश के फल को घटाया

११।२९ सजातीय संख्या बनायी।
६०

६६०+२९=६८९

३८।४६।१६, अभीष्ट योग फल में से
३८।३६।२२, २३ अंश के फल को घटाया
९।५३ सजातीय संख्या बनायी
६०

५४०+५३=५९३

यहाँ अनुपात किया कि ६८९ प्रतिविकला में ६० कला फल मिलता है तो ५९३ प्रति विकला में क्या ?

$$\frac{५९३ \times ६०}{६८९} = \frac{३५५८०}{६८९} = ५१\frac{४४१}{६८९} \times \frac{६०}{१}; \quad ३८\frac{२७८}{६८९}$$

अर्थात् ५१ कला ३८ विकला। इस प्रकार वर्षप्रवेश का लग्न ६।२३।५१।३८ हुआ।

वर्षप्रवेशकालीन इष्टकाल पर से ग्रहस्पष्ट जन्मकुण्डली के गणित के समान ही कर लेना चाहिए। नीचे गणित कर केवल ग्रहस्पष्ट चक्र लिखा जा रहा है।

वर्षप्रवेशकालीन ग्रहस्पष्ट चक्र

सू.	चं.	भौ.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्र.
७	६	७	७	६	६	३	१	७	राशि
५	१६	१७	०	२३	८	१२	२२	२२	अंश
४१	१२	२	३९	१०	४७	७	५३	५३	कला
४१	५१	३५	५६	२९	३९	३०	२८	२८	विकला
६०	७४५	४३	४१	३	४	०	३	३	कलात्मक गति
४९	३६	२२	२०	१८	३३	५५	११	११	
		व.		व.	व.				

वर्षकुण्डली

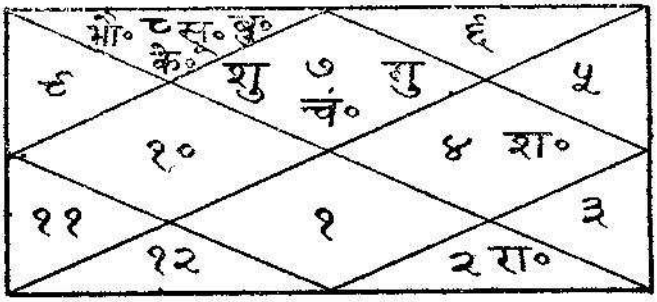

वर्षकुण्डली के अन्य गणित, द्वादश भाव चक्र, चलित चक्र आदि का साधन जन्मकुण्डली के गणित के समान करना चाहिए। वर्षपत्र के लिखने की विधि भी जन्मपत्र के लिखने के समान ही है। सिर्फ़ गताब्द और प्रवेशाब्द अधिक लिखे जाते हैं तथा जन्म के स्थान पर वर्षप्रवेश लिखा जाता है।

मुन्था-साधन

नवग्रहों के समान ताजिक शास्त्र में मुन्था भी एक ग्रह माना गया है। इसकी वार्षिक गति १ राशि, मासिक २॥ अंश और दैनिक ५ कला है। गणित द्वारा इसका साधन करने के लिए गत वर्ष-संख्या में १ जोड़कर १२ का भाग देना चाहिए। जन्म-लग्न राशि से शेष संख्या तक गिनने पर मुन्था की राशि आती है। मुन्थालग्न स्पष्ट करने की यह प्रक्रिया है कि स्पष्ट जन्मलग्न में गत वर्ष-संख्या को जोड़कर १२ का भाग देने पर शेष तुल्य स्पष्ट मुन्था का लग्न आता है।

उदाहरण—गत वर्ष-संख्या ३४ + १ = ३५ ÷ १२ = २ लब्धि और शेष ११ आया। अभीष्ट कुण्डली की लग्नराशि मकर है, अतएव मकर से आगे ११ राशियों की गणना करने पर वृश्चिक राशि मुन्था की आयी।

मुन्था साधन का अन्य नियम

जन्मलग्न में गतवर्ष की संख्या को जोड़कर १२ का भाग देने से शेष तुल्य मुन्थालग्न होता है।

उदाहरण—९।३।१०।९ जन्मलग्न
३४।०।०।० गतवर्ष संख्या
४३।३।१०।० योगफल संख्या

४३।३।१०।० ÷ १२ = २ लब्धि और शेष ७।३।१०।० अर्थात् वृश्चिक राशि मुन्थालग्न हुई—

मुन्थाकुण्डली चक्र

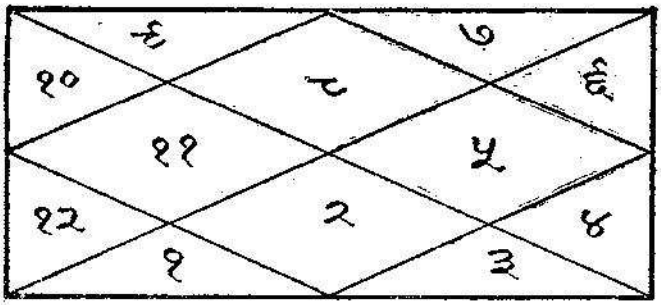

भावस्पष्ट—इस गणित की विधि जन्मकुण्डली के गणित में विस्तार से प्रतिपादित की गयी है। यहाँ पर सिर्फ़ 'लग्न के दशम भावसाधन सारणी' द्वारा वर्षलग्न के राशि, अंशों का फल लेकर दशम भाव का साधन किया जा रहा है। वर्षलग्न ६।२३।५१।३८ है, इसका फल उक्त सारणी में ३।२७।१५।५६ दशम भाव का लग्न मिला।

३।२७।१५।५६ दशम भाव
६। ०। ०। ०
९।२७।१५।५६ चतुर्थ भाव में से
६।२३।५१।३८ लग्न को घटाया
३।३।२४।१८ ÷ ६ =

६) ३।३।२४।१८ (०
०
---
३ × ३० = ९० + ३ =
६) ९३ (१५
६

३३
३०
---
३ × ६० = १८० + २४ =
६) २०४ (३४
१८

२४
२४
---
० × ६० = ० + १८ =
६) १८ (३
१८

×

०।१५।३४। ३ षष्ठांश हुआ
६।२३।५१।३८ लग्न में
१५।३४। ३ षष्ठांश को जोड़ा

७। ९।२५।४१ लग्न की सन्धि में
१५।३४। ३ षष्ठांश को जोड़ा

७।२४।५९।४४ द्वितीय भाव में
१५।३४। ३ षष्ठांश को जोड़ा

८।१०।३३।४७ द्वितीय भाव की सन्धि में
१५।३४। ३ षष्ठांश को जोड़ा

८।२६। ७।५० तृतीय भाव में
१५।३४। ३ षष्ठांश को जोड़ा

९।११।४१।५३ तृतीय भाव की सन्धि में
१५।३४। ३ षष्ठांश को जोड़ा

९।२७।१५।५६ चतुर्थ भाव
३०।०।० में से
१५।३४।३ षडंश को घटाया

१४।२५।५७ शेष
९।२७।१५।५६ चतुर्थ भाव में
१४।२५।५७ शेष को जोड़ा

१०।११।४१।५३ चतुर्थ भाव की सन्धि में
१४।२५।५७ शेष को जोड़ा

१०।२६।७।५० पंचम भाव
१०।२६।७।५० पंचम भाव में
१४।२५।५७ शेष को जोड़ा

११।१०।३३।४७ पंचम भाव की सन्धि में
१४।२५।५७ शेष को जोड़ा

११।२४।५९।४४ षष्ठ भाव में
१४।२५।५७ शेष को जोड़ा

०।९।२५।४१ षष्ठ भाव की सन्धि में
१४।२५।५७ शेष को जोड़ा

०।२३।५१।३८ सप्तम भाव

लग्न में छह राशि जोड़ने पर भी सप्तम भाव आता है। यदि उपर्युक्त गणित द्वारा साधित सप्तम भाव, इस छह राशि के योगवाले सप्तम भाव से मिल जाये तो अपना गणित शुद्ध समझना चाहिए।

६।२३।५१।२८
६।०। ०। ०

०।२३।५१।३८ यह सप्तम भाव पहलेवाले गणित से मिल गया, अतः गणित क्रिया शुद्ध है।

७।९।२५।४१ लग्न सन्धि में
६।०। ०। ० जोड़ा
१।९।२५।४१ सप्तम भाव सन्धि
७।२४।५९।४४ द्वितीय भाव में
६। ०। ०। ० जोड़ा

१।२४।५९।४४ अष्टम भाव
८।१०।३३।४७ द्वितीय भाव की सन्धि
६। ०। ०। ० जोड़ा

२।१०।३३।४७ अष्टम भाव की सन्धि
८।२६।७।५० तृतीय भाव में
६। ०। ०। ० जोड़ा

२।२६।७।५० नवम भाव
९।११।४१।५३ तृतीय भाव की सन्धि में
६। ०। ०। ०

३।११।४१।५३ नवम भाव की सन्धि
९।२७।१५।५६ चतुर्थ भाव में
६। ०। ०। ०

३।२७।१५।५६ दशम भाव। यह दशम भाव पहलेवाले दशम भाव से मिल जाये तो गणित शुद्ध समझना चाहिए, अन्यथा अशुद्ध।

१०।११।४१।५३ चतुर्थ भाव की सन्धि में
६। ०। ०। ० जोड़ा

४।११।४१।५३ दशम भाव की सन्धि
१०।२६। ७।५० पंचम भाव में
६। ०। ०। ० जोड़ा

४।२६। ७। ५ एकादश भाव
११।१०।३३।४७ पंचम भाव की सन्धि में
६। ०। ०। ० जोड़ा

५।१०।३३।४७ एकादश भाव की सन्धि
११।२४।५९।४४ षष्ठ भाव में
६। ०। ०। ० जोड़ा

५।२४।५९।४४ द्वादश भाव
०। ९।२५।४१ षष्ठ भाव की सन्धि में
६। ०। ०। ० जोड़ा

६। ९।२५।४१ द्वादश भाव की सन्धि

द्वादश भाव स्पष्ट चक्र

ल.	सं.	ध.	सं.	स.	सं.	सु.	सं.	पु.	सं.	रि.	सं.	भा.
६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	०	राश्यादयः
२३	९	२४	१०	२६	११	२७	११	२६	१०	२४	९	
५१	२५	५९	३३	७	४१	१५	४१	७	३३	५९	२५	
३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	५३	५०	४७	४४	४१	
स्त्री.	सं.	आ.	सं.	ध.	सं.	क.	सं.	ला.	सं.	व्य.	सं.	भा.
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	राश्यादयः
२३	९	२४	१०	२६	११	२७	११	२६	१०	२४	९	
५१	२५	५९	३३	७	४१	१५	४१	७	३३	५९	२५	
३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	५३	५०	४७	४४	४१	

ताजिक मित्रादि-संज्ञा

प्रत्येक ग्रह अपने भाव से ३, ५, ९ और ११वें भाव को मित्र दृष्टि से, २, ६, ८ और १२वें भाव को समदृष्टि से एवं १, ४, ७ और १०वें भाव को शत्रु दृष्टि से देखता है। अभिप्राय यह है कि जो ग्रह जहाँ पर हो उसके ३, ५, ९, और ११वें स्थान में रहनेवाले ग्रह मित्र; २, ६, ८ और १२वें स्थान में रहनेवाले ग्रह सम एवं १, ४, ७ और १०वें भाव में रहनेवाले ग्रह शत्रु होते हैं। यह विचार वर्षकुण्डली से किया जाता है।

पंचवर्ग

वर्षपत्र में पंचवर्ग का गणित लिखा जाता है। इसके पंचवर्गों में गृह, उच्च, हद्दा, द्रेष्काण और नवांश ये पाँच गिनाये गये हैं। इनमें गृह, द्रेष्काण एवं नवांश साधन की विधि पहले लिखी जा चुकी है। यहाँ पर हद्दा साधन का प्रकार लिखा जाता है।

हद्दा-साधन

मेष के ६ अंश तक गुरु, ७ से १२ अंश तक शुक्र, १३ से २० अंश तक बुध, २१ से २५ अंश तक भौम और २६ से ३० अंश तक शनि हद्देश होता है। वृष के ८ अंश तक शुक्र, ९ से १४ अंश तक बुध, १५ से २२ अंश तक गुरु, २३ से २७ अंश तक शनि और २८ से ३० अंश तक मंगल हद्देश होता है। मिथुन के ६ अंश तक बुध, ७ से १२ अंश तक शुक्र, १३ से १७ अंश तक गुरु, १८ से २४ अंश तक मंगल और

२५ से ३० अंश तक शनि हद्देश होता है। कर्क के ७ अंश तक मंगल, ८ से १३ अंश तक शुक्र, १४ से १९ अंश तक बुध, २० से २६ अंश तक गुरु और २७ से ३० अंश तक शनि हद्देश होता है। सिंह के ६ अंश तक गुरु, ७ से ११ अंश तक शुक्र, १२ से १८ अंश तक शनि, १९ से २४ अंश तक बुध और २५ से ३० अंश तक मंगल हद्देश होता है। कन्या के ७ अंश तक बुध, ८ से १७ अंश तक शुक्र, १८ से २१ अंश तक गुरु, २२ से २८ अंश तक मंगल और २९ से ३० अंश तक शनि हद्देश होता है। तुला के ६ अंश तक शनि, ७ से १४ अंश तक बुध, १५ से २१ अंश तक गुरु, २२ से २८ अंश तक शुक्र और २९ से ३० अंश तक मंगल हद्देश होता है। वृश्चिक के ७ अंश तक मंगल, ८ से ११ अंश तक शुक्र, १२ से १९ अंश तक बुध, २० से २४ अंश तक गुरु और २५ से ३० अंश तक शनि हद्देश होता है। धनु के १२ अंश तक गुरु, १३ से १७ अंश तक शुक्र, १८ से २१ अंश तक बुध, २२ से २६ अंश तक मंगल और २७ से ३० अंश तक शनि हद्देश होता है। मकर के ७ अंश तक बुध, ८ से १४ अंश तक गुरु, १५ से २२ अंश तक शुक्र, २३ से २६ अंश तक शनि और २७ से ३० अंश तक मंगल हद्देश होता है। कुम्भ के ७ अंश तक शुक्र, ८ से १३ अंश तक बुध, १४ से २० अंश तक गुरु, २१ से २५ अंश तक मंगल और २६ से ३० अंश तक शनि हद्देश होता है। मीन के १२ अंश तक शुक्र, १३ से १६ अंश तक गुरु, १७ से १९ अंश तक बुध, २० से २८ अंश तक मंगल और २९ से ३० अंश तक शनि हद्देश होता है।

मेषादि राशियों के हद्देश

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशियाँ
गु. ६	शु. ८	बु. ६	मं. ७	गु. ६	बु. ७	श. ६	मं. ७	गु. १२	बु. ७	शु. ७	शु. १२	सग्रहांक
शु. ६	बु. ६	शु. ६	शु. ६	शु. ५	शु. १०	बु. ८	शु. ४	शु. ५	गु. ७	बु. ६	गु. ४	सग्रहांक
बु. ८	गु. ८	गु. ५	बु. ६	श. ७	गु. ४	गु. ७	बु. ८	बु. ४	शु. ८	गु. ७	बु. ३	सग्रहांक
मं. ५	श. ५	मं. ७	गु. ७	बु. ६	मं. ७	शु. ७	गु. ५	मं. ५	श. ४	मं. ५	मं. ९	सग्रहांक
श. ५	मं. ३	श. ६	श. ६	मं. ६	श. २	मं. २	श. ६	श. ४	मं. ४	श. ५	श. २	सग्रहांक

वर्षकालीन स्पष्टग्रहों से प्रत्येक ग्रह का हद्दा अवगत कर नवग्रहों का हद्दाचक्र बना लेना चाहिए।

उदाहरण—सूर्य ७।५ है—अर्थात् वृश्चिक राशि के ५ अंश का है, अतः मंगल के हद्दा में माना जायेगा। चन्द्रमा ६।१६—अर्थात् तुला राशि के १६ अंश हैं तथा तुला राशि के १६वें अंश से २१वें अंश तक गुरु का हद्दा होता है, अतः चन्द्रमा गुरु के हद्दा में समझा जायेगा। मंगल ७।१७—अर्थात् वृश्चिक राशि के १८ अंश हैं तथा वृश्चिक के १२वें अंश से १९वें अंश तक बुध का हद्दा होता है अतः मंगल बुध के हद्दा में समझा जायेगा। इसी प्रकार बुध मंगल के हद्दा में, गुरु शुक्र के हद्दा में, शुक्र बुध के हद्दा में, शनि शुक्र के हद्दा में, राहु शनि के हद्दा में और केतु गुरु के हद्दा में माना जायेगा। प्रस्तुत उदाहरण का हद्देश चक्र निम्न प्रकार है—

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
मंगल	गुरु	बुध	मंगल	शुक्र	बुध	शुक्र	शनि	गुरु	हद्देश

उच्चबल साधन

द्वितीय अध्याय में उच्चबल साधन की जो प्रक्रिया बतायी गयी है, उससे प्रत्येक ग्रह का उच्चबल निकाल लेना चाहिए। जो कलात्मक उच्चबल आये उसमें तीन का भाग देने से ताजिक का उच्चबल आ जाता है। उदाहरण में पहले सूर्य का उच्चबल ५९।२९ आया है। अतएव—५९।२९ ÷ ३ = १९।५० यह वर्षपत्र के लिए उच्चबल हुआ।

सारणी द्वारा उच्चबल साधन

जिस ग्रह का उच्चबल साधन करना हो उसकी उच्चबल साधनसारणी में राशि के सामने और अंश के नीचे जो फल लिखा हो उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। कला, विकला के फल के लिए आगे और पीछे के अंशों का अन्तर करने से जो आये, उससे कला, विकला को गुणा कर ६० का भाग देने से कला, विकला का फल आ जाता है; दोनों फलों का योग करने से उच्चबल हो जाता है।

उदाहरण—वर्षप्रवेशकालीन सूर्य ७।५।४१।४१ है, सूर्य उच्चबल साधन सारणी में सात राशि के सामने और पाँच अंश के नीचे २।४६ दिया है, कला-विकला का फल निकालने के लिए पाँच अंश और छह अंशवाले कोष्ठक का अन्तर किया—२।५३

२।४६

०। ७

४।१४१ × ७ = २८७ । २८७ ÷ ६० = ४।५१
४।५१ विकलात्मक फल । २।४६ प्रथम फल में
४।५१ द्वितीय फल जोड़ा

२।५०।५१

अर्थात् २।५०।५१ सूर्य का उच्चबल ।

चन्द्रमा—६।१६।१२।५१ है, चन्द्र उच्चबल सारणी में ६ राशि के सामने और १६ अंश के नीचे १।५३ है ।

१।५३—१६ अंश का फल
१।४६—१५ अंश का फल

०। ७

१२।५१। × ७ = ८४।३५७ ÷ ६० = १।२९,
१।५३

१।२९
१।५४।२९ चन्द्र उच्चबल

मंगल—७।१७।२।३५ है । मंगल उच्चबल सारणी में ७ राशि और १७ अंश के नीचे १२।६ है ।

१२।१३—१८ अंश का फल
१२। ६—१७ अंश का फल

०। ७ २।३५ × ७ = १४।२४५ ÷ ५० = ०।१८
१२।१३
०।१८

१२।१३।१८ मंगल का उच्चबल

इसी प्रकार बुध का उच्चबल १४।५७, गुरु का ८।२, शुक्र का १।१८, शनि का ९।७ है ।

पंचवर्गी बल साधन

अपनी राशि में जो ग्रह हो उसका ३० विश्वाबल, जो अपने उच्च में हो उसका २० विश्वाबल, जो अपने हद्दा में हो उसका १५ विश्वाबल, जो अपने द्रेष्काण में

हो उसका १० विश्वाबल और जो अपने नवमांश में हो उसका ५ विश्वाबल होता है। इन पाँचों अधिकारियों के बलों को जोड़कर चार का भाग देने से विश्वाबल या विंशोपकबल निकलता है।

यदि कोई ग्रह अपनी राशि, अपने उच्च, अपने हद्दा, अपने द्रेष्काण और अपने नवमांश में न पड़ा हो तो उसके बल का विचार निम्न प्रकार करना चाहिए।

जो ग्रह अपने मित्र के घर में हो वह तीन चौथाई बलवान्, समराशि में हो तो आधा बलवान् एवं शत्रुराशि में हो तो, चौथाई बलवान् होता है। यह बलसाधन की प्रक्रिया गृह, हद्दा, उच्च, नवमांश और द्रेष्काण में एक-सी होती है।

बल-बोधक चक्र

पतयः	स्व.	मि.	सम	शत्रु
गृहेश	३० ०	२२ ३०	१५ ०	७ ३०
हद्देश	१५ ०	११ १५	७ ३०	३ ४५
द्रेष्काणेश	१० ०	७ ३०	५ ०	२ ३०
नवमांशेश	५ ०	३ ४५	२ ३०	१ १५

सूर्य मंगल के गृह में है और मंगल उसका शत्रु है, अतः सूर्य का गृहबल ७।३० हुआ। चन्द्रमा वर्षकुण्डली में शुक्र के गृह में है, शुक्र चन्द्रमा का शत्रु है, अतः चन्द्रमा का गृहबल ७।३० हुआ। मंगल स्वगृही है, अतः मंगल का ३०।० हुआ। बुध मंगल के गृह में है और मंगल बुध का शत्रु है, अतः शत्रुगृही होने से बुध का गृहबल ७।३० हुआ। इसी प्रकार गुरु का ७।३०, शुक्र का ७।३० और शनि का ७।३० हुआ। उच्चबल—पहले साधन किया है।

सभी ग्रहों की उच्चबल साधन-सारणी आगे दी जाती है।

सूर्य-उच्चबल सारणी (परमोच्च ०।१०)

अंश :	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
मे.०	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	मे.०
	५३	००	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	
वृ.१	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	वृ.१
	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	
मि.२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	११	मि.२
	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	
क.३	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	क.३
	५३	००	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	
सिं.४	७	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	सिं.४
	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	
क.५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	क.५
	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	००	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	

सूर्य-उच्चबल सारणी (परमोच्च ०।१०)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
तु. ६	१ ६	१ ०	० ५३	० ४६	० ४०	० ३३	० २६	० २०	० १३	० ६	० ००	० ६	० १३	० २०	० २६	० ३३	० ४०	० ४६	० ५३	१ ०	१ ६	१ १३	१ २०	१ २६	१ ३३	१ ४०	१ ४६	१ ५३	२ ००	२ ६	तु. ६
वृ. ७	२ १३	२ २०	२ २६	२ ३३	२ ४०	२ ४६	२ ५३	३ ०	३ ६	३ १३	३ २०	३ २६	३ ३३	३ ४०	३ ४६	३ ५३	४ ०	४ ६	४ १३	४ २०	४ २६	४ ३३	४ ४०	४ ४६	४ ५३	५ ०	५ ६	५ १३	५ २०	५ २६	वृ. ७
ध. ८	५ ३३	५ ४०	५ ४६	५ ५३	६ ०	६ ६	६ १३	६ २०	६ २६	६ ३३	६ ४०	६ ४६	६ ५३	७ ०	७ ६	७ १३	७ २०	७ २६	७ ३३	७ ४०	७ ४६	७ ५३	८ ०	८ ६	८ १३	८ २०	८ २६	८ ३३	८ ४०	८ ४६	ध. ८
म. ९	८ ५३	९ ०	९ ६	९ १३	९ २०	९ २६	९ ३३	९ ४०	९ ४६	९ ५३	१० ०	१० ६	१० १३	१० २०	१० २६	१० ३३	१० ४०	१० ४६	१० ५३	११ ०	११ ६	११ १३	११ २०	११ २६	११ ३३	११ ४०	११ ४६	११ ५३	१२ ०	१२ ६	म. ९
कुं. १०	१२ १३	१२ २०	१२ २६	१२ ३३	१२ ४०	१२ ४६	१२ ५३	१३ ०	१३ ६	१३ १३	१३ २०	१३ २६	१३ ३३	१३ ४०	१३ ४६	१३ ५३	१४ ०	१४ ६	१४ १३	१४ २०	१४ २६	१४ ३३	१४ ४०	१४ ४६	१४ ५३	१५ ०	१५ ६	१५ १३	१५ २०	१५ २६	कुं. १०
मी. ११	१५ ३३	१५ ४०	१५ ४६	१५ ५३	१६ ०	१६ ६	१६ १३	१६ २०	१६ २६	१६ ३३	१६ ४०	१६ ४६	१६ ५३	१७ ०	१७ ६	१७ १३	१७ २०	१७ २६	१७ ३३	१७ ४०	१७ ४६	१७ ५३	१८ ०	१८ ६	१८ १३	१८ २०	१८ २६	१८ ३३	१८ ४०	१८ ४६	मी. ११

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
मे. ०	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	मे. ०
	२०	२५	३३	४०	४६	५३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३			
वृ. १	१९	१९	१९	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	वृ. १
	४०	४६	५३	०	३३	१०	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३			
मि. २	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	मि. २
	०	५३	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३			
क. ३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	क. ३
	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०			
सिं. ४	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	सिं. ४
	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	
क. ५	७	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	क. ५
	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
बु.४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	बु.४
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
शु.७	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	शु.७
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
श.८	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	श.८
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
म.९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	म.९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
कें.१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	कें.१०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
मी.११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	मी.११
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
मे.०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मे.०
वृ.१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	वृ.१
मि.२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मि.२
क.३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	क.३
सिं.४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सिं.४
क.५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	क.५

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
तु.६	६ ५३	७ ०	७ ६	७ १३	७ २०	७ २६	७ ३३	७ ४०	७ ४६	७ ५३	८ ०	८ ६	८ १३	८ २०	८ २६	८ ३३	८ ४०	८ ४६	८ ५३	९ ०	९ ६	९ १३	९ २०	९ २६	९ ३३	९ ४०	९ ४६	९ ५३	१० ०	१० ६	तु.६
वृ.७	१० १३	१० २०	१० २६	१० ३३	१० ४०	१० ४६	१० ५३	११ ०	११ ६	११ १३	११ २०	११ २६	११ ३३	११ ४०	११ ४६	११ ५३	१२ ०	१२ ६	१२ १३	१२ २०	१२ २६	१२ ३३	१२ ४०	१२ ४६	१२ ५३	१३ ०	१३ ६	१३ १३	१३ २०	१३ २६	वृ.७
ध.८	१३ ३३	१३ ४०	१३ ४६	१३ ५३	१४ ०	१४ ६	१४ १३	१४ २०	१४ २६	१४ ३३	१४ ४०	१४ ४६	१४ ५३	१५ ०	१५ ६	१५ १३	१५ २०	१५ २६	१५ ३३	१५ ४०	१५ ४६	१५ ५३	१६ ०	१६ ६	१६ १३	१६ २०	१६ २६	१६ ३३	१६ ४०	१६ ४६	ध.८
म.९	१६ ५३	१७ ०	१७ ६	१७ १३	१७ २०	१७ २६	१७ ३३	१७ ४०	१७ ४६	१७ ५३	१८ ०	१८ ६	१८ १३	१८ २०	१८ २६	१८ ३३	१८ ४०	१८ ४६	१८ ५३	१९ ०	१९ ६	१९ १३	१९ २०	१९ २६	१९ ३३	१९ ४०	१९ ४६	१९ ५३	२० ०	१९ ५३	म.९
कुं.१०	१९ ४६	१९ ४०	१९ ३३	१९ २६	१९ २०	१९ १३	१९ ६	१९ ००	१८ ५३	१८ ४६	१८ ४०	१८ ३३	१८ २६	१८ २०	१८ १३	१८ ६	१८ ००	१७ ५३	१७ ४६	१७ ४०	१७ ३३	१७ २६	१७ २०	१७ १३	१७ ६	१७ ००	१६ ५३	१६ ४६	१६ ४०	१६ ३३	कुं.१०
मी.११	१६ २६	१६ २०	१६ १३	१६ ६	१६ ००	१५ ५३	१५ ४६	१५ ४०	१५ ३३	१५ २६	१५ २०	१५ १३	१५ ६	१५ ००	१४ ५३	१४ ४६	१४ ४०	१४ ३३	१४ २६	१४ २०	१४ १३	१४ ६	१४ ००	१३ ५३	१३ ४६	१३ ४०	१३ ३३	१३ २६	१३ २०	१३ १३	मी.११

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
मे.°	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	मे.°
	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	
वृ.१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	वृ.१
	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	
मि.२	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	मि.२
	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	
क.३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	क.३
	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	
सिं.४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	सिं.४
	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	
क.५	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	क.५
	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
तु. ६	१८ २०	१८ १३	१८ ६	१८ ०	१७ ५३	१७ ४६	१७ ४०	१७ ३३	१७ २६	१७ २०	१७ १३	१७ ६	१७ ०	१६ ५३	१६ ४६	१६ ४०	१६ ३३	१६ २६	१६ २०	१६ १३	१६ ६	१६ ०	१५ ५३	१५ ४६	१५ ४०	१५ ३३	१५ २६	१५ २०	१५ १३	१५ ६	तु. ६
वृ. ७	१५ ०	१४ ५३	१४ ४६	१४ ४०	१४ ३३	१४ २६	१४ २०	१४ १३	१४ ६	१४ ०	१३ ५३	१३ ४६	१३ ४०	१३ ३३	१३ २६	१३ २०	१३ १३	१३ ६	१३ ०	१२ ५३	१२ ४६	१२ ४०	१२ ३३	१२ २६	१२ २०	१२ १३	१२ ६	१२ ०	११ ५३	११ ४६	वृ. ७
ध. ८	११ ४०	११ ३३	११ २६	११ २०	११ १३	११ ६	११ ०	१० ५३	१० ४६	१० ४०	१० ३३	१० २६	१० २०	१० १३	१० ६	१० ०	९ ५३	९ ४६	९ ४०	९ ३३	९ २६	९ २०	९ १३	९ ६	९ ०	८ ५३	८ ४६	८ ४०	८ ३३	८ २६	ध. ८
म. ९	८ २०	८ १३	८ ६	८ ०	७ ५३	७ ४६	७ ४०	७ ३३	७ २६	७ २०	७ १३	७ ६	७ ०	६ ५३	६ ४६	६ ४०	६ ३३	६ २६	६ २०	६ १३	६ ६	६ ०	५ ५३	५ ४६	५ ४०	५ ३३	५ २६	५ २०	५ १३	५ ६	म. ९
कुं. १०	५ ०	४ ५३	४ ४६	४ ४०	४ ३३	४ २६	४ २०	४ १३	४ ६	४ ०	३ ५३	३ ४६	३ ४०	३ ३३	३ २६	३ २०	३ १३	३ ६	३ ०	२ ५३	२ ४६	२ ४०	२ ३३	२ २६	२ २०	२ १३	२ ६	२ ०	१ ५३	१ ४६	कुं. १०
मी. ११	१ ४०	१ ३३	१ २६	१ २०	१ १३	१ ६	१ ०	० ५३	० ४६	० ४०	० ३३	० २६	० २०	० १३	० ६	० ००	० ६	० १३	० २०	० २६	० ३३	० ४०	० ४६	० ५३	१ ०	१ ६	१ १३	१ २०	१ २६	१ ३३	मी. ११

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
मे. ०	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	मे. ०
	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	
वृ. १	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	वृ. १
	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	
मि. २	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	मि. २
	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	
क. ३	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	क. ३
	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	
सिं. ४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	सिं. ४
	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	
क. ५	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	क. ५
	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
शु.६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	शु.६
	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	
बु.७	७	७	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	बु.७
	१३	५	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	
ब.८	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	ब.८
	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	
म.९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	म.९
	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	
कें.१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	कें.१०
	४६	४३	०	५६	५३	०	६	३	०	४६	४३	०	५६	५३	०	६	३	०	४६	४३	०	५६	५३	०	६	३	०	४६	४३	०	
मी.११	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	मी.११
	५३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	

शुक्र-उच्चबल सारणी (परमोच्च ११।२७)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
मे.०	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	मे.०
	४०	४५	५०	५५	००	०५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	०५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	०५	
वृ.१	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	वृ.१
	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	
मि.२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	मि.२
	००	०५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	०५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	०५	१०	१५	२०	२५	
क.३	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	६	६	क.३
	४०	४५	५०	५५	००	०५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	०५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	०५	
सि.४	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	३	३	सि.४
	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	०५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	०५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	
क.५	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	क.५
	००	०५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	०५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	०५	१०	१५	२०	२५	

शुक्र-उच्चबल सारणी (परमोच्च ११।२७)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
कु.६	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	कु.६
	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	
कु.७	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	कु.७
	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	
कु.८	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	कु.८
	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	
मी.९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	मी.९
	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	
मी.१०	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	मी.१०
	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	
धनु.११	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	धनु.११
	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	
धनु.१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	धनु.१२
	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२५	३३	४०	४६	५३	

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
मे.°	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	मे.°
	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	
कृ.१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	कृ.१
	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	
मि.२	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	७	मि.२
	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	
क.३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	क.३
	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	
सिं.४	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	सिं.४
	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	
क.५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	क.५
	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	

शनि-उच्चबल सारणी (परमोच्च ६।२२।०)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
चं. ४	२७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	चं. ४
	४	५५	५३	०	६	१२	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	
बु. ७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	बु. ७
	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	
श. ६	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	श. ६
	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	
म. ९	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	म. ९
	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	
कें. १०	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	कें. १०
	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	
मी. ११	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	मी. ११
	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	

हद्दाबल—सूर्य मंगल के हद्दा में है और सूर्य का मंगल शत्रु है, अतः शत्रु के हद्दा में होने के कारण सूर्य का हद्दाबल ३।४५ हुआ। चन्द्रमा गुरु के हद्दा में है और गुरु चन्द्रमा का शत्रु है, अतः शत्रु के हद्दा में होने के कारण चन्द्रमा का हद्दाबल ३।४५ हुआ। मंगल बुध के हद्दा में है और बुध मंगल का शत्रु है अतः भौम का हद्दाबल ३।४५ हुआ। इसी प्रकार बुध का हद्दाबल ३।४५, गुरु का ३।४५, शुक्र का ३।४५ और शनि का ३।४५ हुआ।

द्रेष्काण—द्वितीय अध्याय में बतायी गयी विधि से द्रेष्काण लाकर तब विचार करना चाहिए। यहाँ सूर्य भौम के द्रेष्काण में है अतः उसका २।३० बल हुआ। चन्द्रमा शनि के द्रेष्काण में है अतः २।३० बल हुआ। मंगल गुरु के द्रेष्काण में है अतः समगृही द्रेष्काण होने के कारण ५।० बल हुआ। बुध मंगल के द्रेष्काण में है अतः उसका २।३० बल हुआ। इसी प्रकार गुरु का द्रेष्काणबल ५।०, शुक्र का १०।० और शनि का ७।३० है।

नवमांश बल—द्वितीय अध्याय में बतायी विधि से सूर्य अपने ही नवमांश में है अतः उसका नवमांशबल ५।० हुआ। चन्द्रमा शनि के नवमांश में है और शनि चन्द्रमा का शत्रु है, अतः शत्रुगृही नवमांश होने से इसका नवमांशबल १।१५ हुआ। मंगल गुरु के नवमांश में है और गुरु मंगल का सम है अतः इसका बल २।३० हुआ। इसी प्रकार बुध का नवमांश बल २।३०, गुरु का २।३०, शुक्र का १।१५ और शनि का १।१५ हुआ।

बलीग्रह का निर्णय

जिस ग्रह का विंशोपक बल ११ से २० अंश तक हो वह पूर्णबली, जिसका ६ से १० अंश तक हो वह मध्यबली, जिसका १ से ५ अंश तक हो वह अल्पबली और जिसका विंशोपक बल शून्य हो वह निर्बल कहलाता है। कहीं-कहीं ५ अंश से कम विंशोपकवाले ग्रह को ही निर्बल माना है। स्वयं का अनुभव भी यही है कि ५ अंश से कम विंशोपकवाला ग्रह निर्बल होता है।

पंचाधिकारी

जन्मलग्नेश, वर्षलग्नेश, मुन्थाधिप, त्रिराशिपति और दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्यराशिपति तथा रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रराशिपति ये पाँच ग्रह वर्षपत्रिका में विशेषाधिकारी माने जाते हैं।

त्रिराशिपति विचार

नीचे चक्र में से दिन में वर्षप्रवेश हो तो वर्ष लग्न की राशि के अनुसार दिवा-त्रिराशिपति और रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो रात्रि का त्रिराशिपति ग्रहण करना चाहिए।

त्रिराशिपति चक्र

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिवा त्रिराशिपति	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्रि त्रिराशिपति	गु.	चं.	बृ.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

उदाहरण कुण्डली के पंचाधिकारी निम्न प्रकार हैं

जन्मलग्नेश	वर्षलग्नेश	मुन्थेश	त्रिराशीश	चन्द्रराशीश
भौम	शुक्र	भौम	भौम	शुक्र
१३	५	१३	७	५
२२	५७	२२	१६	५७
०	०	०	५	०
पूर्णबली	अल्पबली	पूर्णबली	मध्यबली	अल्पबली

उदाहरण कुण्डली का पंचवर्गीबलचक्र निम्न प्रकार हुआ—

सू.	चं.	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
७	७	३०	७	७	७	७	गृहबल
३०	३०	०	३०	३०	३०	३०	
२	१	१२	१४	८	१	९	उच्चबल
५०	५४	१३	५७	२	१८	७	
३	३	३	३	३	३	३	हद्दाबल
४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	
२	२	५	२	५	१०	७	द्रेष्काणबल
३०	३०	०	३०	०	०	३०	
५	१	२	२	२	१	१	नवमांशबल
०	१५	३०	३०	३०	१५	१५	
२१	१६	५३	३१	२६	२३	२९	योगबल
३५	५४	२८	१२	४७	४८	७	
५	४	१३	७	६	५	७	विश्वाबल
२३	१३	२२	४८	४१	५७	१६	
४५	३०	०	०	४५	०	४५	

ताजिक शास्त्रानुसार ग्रहों की दृष्टि

ताजिक में ग्रहों की दृष्टि प्रत्यक्षस्नेहा, गुप्तस्नेहा, गुप्तवैरा और प्रत्यक्षवैरा, इस प्रकार चार तरह की होती है। वर्षकुण्डली में ग्रह जहाँ रहता है उससे नौवें और

पाँचवें स्थान में स्थित ग्रह को प्रत्यक्षस्नेहा ४५ कलावाली दृष्टि से देखता है। यह दृष्टि सम्पूर्ण कार्यों में सिद्धि देनेवाली, मेलापक संज्ञावाली बतायी गयी है।

कोई ग्रह अपने स्थान से तीसरे और ग्यारहवें स्थान में स्थित ग्रह को गुप्तस्नेहा दृष्टि से देखता है। तीसरे भाव की दृष्टि ४० कलावाली और ११वें भाव की दृष्टि १० कलावाली होती है। ग्रह दृष्टि कार्यसिद्धि करनेवाली और स्नेहवर्द्धिनी बतायी गयी है।

चौथे और दशवें भाव में गुप्तवैरा एवं १५ कलावाली दृष्टि होती है। पहले और सातवें भाव में प्रत्यक्षवैरा एवं ६० कलावाली दृष्टि होती है। ये दोनों ही दृष्टियाँ क्षुत संज्ञक कार्य नाश करनेवाली बतायी गयी हैं।

विशेष—दृश्य, द्रष्टा का अन्तर द्वादशांश (बारह भाग) से अधिक न हो तो दृष्टियों का फल ठीक घटता है, अन्यथा नहीं घटता।

बलवती दृष्टि

वाम भागस्थ—छठे से बारहवें भाग तक रहनेवाले ग्रह की दक्षिण भागस्थ—लग्न से छठे भाग तक स्थित ग्रह के ऊपर बलवती दृष्टि होती है। दक्षिण भागस्थ ग्रह की वाम भागस्थ ग्रह के ऊपर निर्बल होती है।

विशेष दृष्टि

द्रष्टा ग्रह के दीप्तांश के मध्य में ही दृश्य ग्रह आगे व पीछे स्थित हो तो विशेष दृष्टि का फल होता है और दीप्तांशों से अधिक दृश्य ग्रह आगे-पीछे स्थित हो तो मध्यम दृष्टि का फल होता है।

दीप्तांश

सूर्य के १५ अंश, चन्द्र के १२ अंश, मंगल के ८ अंश, बुध के ७ अंश, गुरु के ९ अंश, शुक्र के ७ अंश और शनि के ९ अंश दीप्तांश होते हैं।

उदाहरण—वर्षकुण्डली में सूर्य, मंगल और बुध की राशि के ऊपर प्रत्यक्षस्नेही दृष्टि है। सूर्य वर्षकालीन स्पष्टग्रह में वृश्चिक राशि के पाँच अंश का आया है और शनि कर्क राशि के बारह अंश का आया है। अंशों के मान में सूर्य से शनि ७ अंश आगे है। सूर्य के दीप्तांश १५ हैं, अतः शनि सूर्य के दीप्तांश के भीतर हुआ अतएव सूर्य की दृष्टि का पूर्ण फल समझना चाहिए।

मंगल का स्पष्टमान ७।१७ और शनि का ३।१२ है। दोनों में अंशों में ५ का अन्तर है। मंगल के दीप्तांश ८ हैं, अतएव दृश्यग्रह दीप्तांश के भीतर होने से पूर्ण फलवाली दृष्टि मानी जायेगी। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की दृष्टि भी समझ लेनी चाहिए।

वर्षेश का निर्णय

वर्ष के पंच अधिकारियों में जो ग्रह बलवान् होकर लग्न को देखता हो वही वर्षेश होता है। यदि पंचाधिकारियों में कई ग्रहों का बल समान हो तो जो लग्न को देखता है, वही ग्रह वर्षेश होता है।

पंचाधिकारियों की लग्न पर समान दृष्टि हो और बल भी बराबर हो अथवा पाँचों निर्बली हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होता है। यदि पाँचों की ही दृष्टि लग्न पर न हो तो उनमें जो अधिक बली होता है वही वर्षेश होता है।

कई आचार्यों का मत है कि पंचाधिकारियों की दृष्टि एवं बल समान हो तो समयाधिपति—दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्यराशीश और रात में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्र-राशीश वर्षेश होता है।

चन्द्रवर्षेश का निर्णय

ताजिक शास्त्र के आचार्यों ने चन्द्रमा को वर्षेश होना नहीं माना है। उनका अभिमत है कि कोमल प्रकृति जलीय चन्द्र अनुशासन का कार्य नहीं कर सकता है। दूसरी बात यह भी है कि चन्द्रमा मन का स्वामी है, और शासन मन से नहीं होता है, उसके लिए शारीरिक बल की भी आवश्यकता होती है। इसीलिए इस शास्त्र के वेत्ताओं ने चन्द्रमा को वर्षेश स्वीकार नहीं किया है।

यदि पूर्वोक्त नियमों के अनुसार चन्द्रमा वर्षेश आता हो तो वह जिस ग्रह के साथ इत्थशाल योग करता है, वही ग्रह वर्षेश होता है, यदि चन्द्र किसी ग्रह के साथ इत्थशाल नहीं करता हो तो वर्षकुण्डली का चन्द्र राशीश ही वर्षेश होता है। उदाहरण—पूर्वोक्त उदाहरण वर्षकुण्डली के पंचाधिकारियों में सबसे बली मंगल आया है, मंगल की लग्न पर दृष्टि भी है अतएव मंगल ही वर्षेश होगा।

हर्षबल साधन

ग्रहों के हर्षस्थान चार प्रकार के होते हैं।

१—वर्ष लग्न से सूर्य ९वें, चन्द्र ३रे, मंगल ६ठे, बुध लग्न में, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२वें स्थान में हों तो ये ग्रह हर्षित होते हैं।

२—स्वगृह और स्वोच्च में ग्रह हर्षित होते हैं।

३—वर्ष लग्न से १।२।३।७।८।९वें भावों में स्त्रीग्रह और ४।५।६।१०।११।१२वें भावों में पुरुषग्रह हर्षित होते हैं।

४—पुरुषग्रह—रवि, मंगल, गुरु दिन में और स्त्रीग्रह तथा नपुंसक ग्रह—शुक्र, चन्द्र, बुध, शनि रात में वर्षप्रवेश होने पर हर्षित होते हैं।

जहाँ हर्षबल प्राप्त हो वहाँ ५ विश्वात्मक बल होता है।

उदाहरण—प्रस्तुत वर्ष कुण्डली में प्रथम प्रकार का हर्षबल किसी ग्रह का नहीं है। द्वितीय प्रकार का हर्षबल स्वगृही होने से शुक्र और मंगल का है। तृतीय प्रकार का हर्षबल शुक्र, चन्द्र, बुध का है, और चतुर्थ प्रकार का रात में वर्षप्रवेश होने के कारण चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि इन चारों ग्रहों का है।

---

१. यहाँ स्त्रीग्रहों में शुक्र, बुध, शनि और चन्द्र इन चारों को ग्रहण किया है।

सू.	चं.	भौ.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	प्रथम
०	०	५	०	०	५	०	द्वितीय
०	५	०	५	०	५	०	तृतीय
०	५	०	५	०	५	५	चतुर्थ
०	१०	५	१०	०	१५	५	ऐक्य

जिस ग्रह का हर्षबल ५ विश्वा हो वह अल्पबली, १० विश्वा हो वह मध्यबली, १५ विश्वा हो वह पूर्णबली और शून्य विश्वा हो वह निर्बल माना जाता है। हर्षित ग्रह अपनी दशा में अच्छा फल देता है।

षोडश योगों का फलसहित लक्षण

ताजिक शास्त्र में लग्न के स्वामी को लग्नेश और शेष भावों के स्वामियों को कार्येश कहा गया है। इन दोनों के योग से षोडश योग बनते हैं।

१. इक्कवाल—केन्द्र और पणफर में सभी ग्रह हों तो इक्कवाल योग होता है, इस योग के होने से जातक की उन्नति होती है, उसे यश, धन और सन्तान की प्राप्ति होती है।

२. इन्दुवार—आपोक्लिम में सभी ग्रह हो तो इन्दुवार योग होता है। इसके होने से सामान्य सुख की प्राप्ति होती है।

३. इत्थशाल—इस योग के इत्थशाल पूर्ण, इत्थशाल और भविष्यत् इत्थशाल ये तीन भेद हैं।

(क) लग्नेश तथा कार्येश दोनों में जो ग्रह मन्दगति हों वह शीघ्रगति ग्रह से अधिक अंश पर हो तथा दोनों की परस्पर दृष्टि हो तो इत्थशाल योग होता है और दोनों में दीप्तांश तुल्य अन्तर हो तो मुन्थशिल योग होता है।

(ख) लग्नेश और कार्येश में मन्दगति ग्रह से शीघ्रगति ग्रह १ विकला से ३० विकला तक न्यून हो तो पूर्ण इत्थशाल योग होता है।

(ग) मन्दगति[1] ग्रह जिस राशि में हो उससे पिछली राशि में शीघ्रगति ग्रह उस मन्दगति ग्रह से दीप्तांश तुल्य अन्तर पर हो।

जैसे चन्द्रमा ३।२८ और बुध ४।१० हैं। यहाँ पर चन्द्रमा शीघ्रगति ग्रह है, जो कि मन्दगति ग्रह बुध से एक राशि पीछे है। चन्द्रमा से मन्दगति ग्रह बुध चन्द्रमा के दीप्तांश तुल्य आगे है अतः यह भविष्यत् इत्थशाल योग हुआ।

लग्नेश से जिन-जिन भावों के स्वामियों का इत्थशाल योग हो उन-उन भावसम्बन्धी लाभ होता है। लग्नेश, कार्येश परस्पर मित्र हों तो सुखपूर्वक अन्यथा

१. चन्द्र, बुध, शुक्र, सूर्य, भौम, गुरु और शनि उत्तरोत्तर मन्दगति हैं।

कठिनाई से लाभ होता है। इस योग में लग्नेश तथा कार्येश की दृष्टि लग्न तथा कार्य-भाव पर होना नितान्त आवश्यक है।

४. ईशराफ—मन्दगति ग्रह से शीघ्रगति ग्रह अधिक से अधिक एक अंश आगे हो तो ईशराफ योग होता है। यह योग शुभग्रह से हो तो शान्ति, सुख अन्यथा क्लेश होता है।

५. नक्त—लग्नेश तथा कार्येश में जो शीघ्रगति ग्रह हो वह थोड़े अंश पर और मन्दगति ग्रह अधिक अंश पर हो या दोनों की परस्पर दृष्टि न हो तथा अन्य कोई शीघ्रगति दोनों के मध्य में किसी अंश पर स्थित होकर अन्योन्यदृष्टि हो तो नक्त योग होता है।

६. यमय—लग्नेश, कार्येश में जो शीघ्रगति ग्रह हो वह थोड़े अंश पर और मन्दगति ग्रह अधिक अंश पर हो तथा दोनों की आपस में दृष्टि न हो और मध्यवर्ती कोई मन्दगति ग्रह दीप्तांश तुल्यांश तुल्य अन्तर से देखता हो तो यमय योग होता है।

नक्त और यमय योग जिस वर्षकुण्डली में पड़ते हैं उस वर्षकुण्डलीवाला व्यक्ति अन्य लोगों की सहायता से अपने कार्य को सफल करता है।

७. मणऊ—लग्नेश और कार्येश में जो शीघ्रगति ग्रह हो उससे हीनाधिक अंश पर शनि या मंगल स्थित हों तथा उस शीघ्रगति ग्रह को शत्रु दृष्टि से देखते हों तो मणऊ योग होता है। इस योग के होने से व्यक्ति को जीवन-भर में हानि, अपमान आदि सहन करने पड़ते हैं।

८. कम्बूल—लग्नेश और कार्येश का इत्थशाल या मुत्थशिल हो तथा इनमें से एक से या दोनों से चन्द्रमा इत्थशाल अथवा मुत्थशिल योग करे तो कम्बूल योग होता है। इस कम्बूल योग के उत्तम, मध्यम, अधम आदि कई भेद हैं।

उत्तमोत्तम कम्बूल—चन्द्रमा उच्च का या स्वगृह का हो और लग्नेश और कार्येश भी इसी प्रकार स्थिति में हों अथवा दोनों में से एक स्वगृही, उच्च का हो; जिससे कि चन्द्रमा इत्थशाल करता हो तो उत्तमोत्तम कम्बूल योग होता है।

मध्यमोत्तम कम्बूल योग—चन्द्रमा स्वहद्दा, स्वद्रेष्काण अथवा स्वनवांश में हो और लग्नेश, कार्येश उच्च के या स्वगृही हों तो यह मध्यमोत्तम कम्बूल योग कार्यसाधक होता है। इस योग के होने से वर्षपर्यन्त व्यक्ति के समस्त कार्य बिना विघ्न-बाधाओं के अच्छी तरह होते हैं।

उत्तम कम्बूल—चन्द्र अधिकार-रहित हो और लग्नेश, कार्येश स्वगृही या उच्च के हों तो कम्बूल योग होता है। इस योग के होने से दूसरे की प्रेरणा या दूसरे की सहायता से कार्य सिद्ध होते हैं।

अधमोत्तम कम्बूल—चन्द्र नीच या शत्रुराशि का और लग्नेश, कार्येश उच्च के या स्वगृही हों तो उत्तम कम्बूल योग होता है। इस योग के होने से असन्तोष से कार्यसिद्धि होती है।

अधमाधम कम्बूल—चन्द्रमा, लग्नेश और कार्येश नीच या शत्रु के क्षेत्र में हों और इत्थशाल या मुत्थशिल योग करते हों तो अधमाधम कम्बूल योग होता है। इसके होने से महाकष्ट और विपत्ति होती है।

लग्नेश और कार्येश के अधिकार परिवर्तन से कम्बूल योग के और भी कई भेद होते हैं। इन सब योगों का फल प्रायः अनिष्टकारक है।

९. गैरिकम्बूल—लग्नेश और कार्येश का इत्थशाल योग हो और शून्य मार्ग गत चन्द्रमा राशि के अन्तिम २९वें अंश में स्थित हो—आगे की राशि में जानेवाला हो और उससे अग्रिम राशि में स्वगृही या उच्च का लग्नेश, अथवा कार्येश स्थित हो जिससे चन्द्रमा मुत्थशिल योग करे तो गैरिकम्बूल योग होता है। इस योग के होने से अन्य की सहायता से कार्य सफल होता है।

१०. खल्लासर—लग्नेश, कार्येश का इत्थशाल योग होता हो और चन्द्रमा शून्य मार्ग में स्थित हो तो खल्लासर योग होता है। इस योग के रहने से कम्बूल योग नष्ट हो जाता है।

११. रद्द—जो ग्रह अस्त, नीच, शत्रुगृही, वक्री, हीनक्रान्ति, बलहीन होकर इत्थशाल योग करता हो तथा यह कार्येश रूप में केन्द्र में स्थित हो अथवा वक्री होकर आपोक्लिम में से केन्द्र में जाता हो तो रद्द योग होता है। यह कार्यनाशक है।

१२. दुष्फालिकुथ—मन्दगति ग्रह स्वोच्च, स्वगृह आदि के अधिकार में हो और अधिकार रहित शीघ्रगति से इत्थशाल योग करे तो दुष्फालिकुथ योग होता है।

१३. दुत्थोत्थदिवीर—लग्नेश, कार्येश दोनों रद्दयोग में हों और दोनों में से एक किसी अन्य दूसरे स्वगृह आदि अधिकारवान् ग्रह से मुत्थशिल योग करे तो दुत्थोत्थ-दिवीर योग होता है।

१४. तम्बीर—लग्नेश से कार्येश का इत्थशाल योग न हो और इनमें से कोई एक बलवान मार्गी ग्रह राशि के अन्तिम अंश में हो और इसके दीप्तांशवर्ती अग्रिम राशि में कोई स्वगृही या उच्च राशि में स्थित हो तो तम्बीर नाम का योग होता है।

१५. कुत्थयोग—लग्न में स्थित ग्रह बलवान् होता है, इनमें से २।३।४।५।७। ९।१०।११वें स्थान में स्थित ग्रह उत्तरोत्तर हीनबल होते हैं। इसी प्रकार स्वक्षेत्र, स्वोच्च, स्वहद्दा, स्वद्रेष्काण, स्वनवमांश में स्थित, हर्षित आदि अधिकारसम्पन्न ग्रह उत्तरोत्तर बली होते हैं। इन ग्रहों के सम्बन्ध को कुत्थयोग[1] कहते हैं।

१६. दुरफ्फ—३।८।१२वें भाव में स्थित ग्रह; वक्री होनेवाला, वक्री, शत्रुगृही, नीच, पापग्रह से युत, कान्तिहीन, अस्त, बलहीन ग्रह; इसी प्रकार के अन्य निर्बल ग्रह से मुत्थशिल योग करता हो तो दुरफ्फ योग होता है। इस योग का फल अनिष्टकारक होता है।

---

१. जो ग्रह स्वक्षेत्र, स्वोच्च आदि शुभ या अशुभ कोई भी अधिकार में न हो और न किसी ग्रह की दृष्टि हो तो वह शून्य मार्गगत कहलाता है।

सहम साधन

ताजिक शास्त्र में पुण्यादि[1] ५० सहमों का साधन किया गया है। यहाँ कुछ आवश्यक सहमों का गणित लिखा जाता है।

सहम संस्कार

जिसमें घटाया जाये उसे शुद्धाश्रय और जो घटाया जाये उसे शोध्य कहते हैं। यदि इन दोनों के मध्य में लग्न न हो तो एक राशि जोड़ देना चाहिए और मध्य में लग्न न हो तो एक राशि नहीं जोड़ना चाहिए।

उदाहरण—चन्द्रमा कन्या राशि का, सूर्य मकर राशि का और लग्न मेष राशि का है। यहाँ कन्या और मकर के बीच में लग्न की राशि नहीं है, अतः एक जोड़ा जायेगा।

पुण्यसहम का साधन

दिन में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रमा में से सूर्य को घटाये और रात में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य में से चन्द्रमा को घटाकर शेष में लग्न जोड़कर पूर्वोक्त सहम संस्कार करने पर पुण्यसहम होता है।

उदाहरण—प्रस्तुत वर्षकुण्डली का वर्षप्रवेश रात को हुआ है अतएव

७।५।४१।४१ सूर्य में से	०।१८।२८।५० शेष में
६।१६।१२।५१ चन्द्रमा को घटाया	६।२३।५१।३८ लग्न को जोड़ा
०।१८।२८।५० शेष	७।१२।२०।२८ पुण्यसहम हुआ

यहाँ लग्न शोध्य और शुद्धाश्रय के बीच में है क्योंकि चन्द्रमा तुला का और सूर्य वृश्चिक का है तथा लग्न तुला का है जो दोनों के मध्य में पड़ता है, अतएव एक राशि जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

गुरु और विद्या सहम

दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य में से चन्द्रमा को घटाये और रात में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रमा में से सूर्य को घटाकर लग्न जोड़ देने से विद्या और गुरु सहम होते हैं। सहम संस्कार यहाँ पर भी अवश्य करना चाहिए।

उदाहरण—

६।१६।१२।५१ }
७ ।५।४१।४१ } चन्द्रमा में सूर्य को घटाया जा रहा है, क्योंकि वर्षप्रवेश रात में हुआ है।

११।१०।३१।१० शेष में
६।२३।५१।३८ लग्न को जोड़ा

६।४।२२।४८ गुरु और विद्या सहम

१. देखें, ताजिक नीलकण्ठी, पृ. १२५।

यहाँ पर सैक (एक-सहित) नहीं किया गया, क्योंकि लग्न चन्द्रमा और सूर्य के बीच में है।

यश सहम

रात में वर्षप्रवेश हो तो पुण्यसहम में से गुरु सहम को घटाये और दिन में वर्षप्रवेश हो तो गुरु सहम में से पुण्य सहम को घटाकर शेष में लग्न जोड़ना चाहिए तथा पूर्वोक्त सहम संस्कार भी करना चाहिए।

मित्र सहम

दिन में वर्षप्रवेश हो तो गुरु सहम में से पुण्य सहम को घटावे, रात में वर्षप्रवेश हो तो पुण्य सहम में से गुरु सहम को घटाकर शेष में शुक्र को जोड़ संस्कार करने से मित्र सहम होता है।

आशा सहम

दिन में वर्षप्रवेश हो तो शनि में से शुक्र को घटाये और रात में वर्षप्रवेश हो तो शुक्र में से शनि को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ सैकता (एकसहित) करने से आशा सहम होता है।

राज सहम (पिता सहम)

दिन में वर्षप्रवेश हो तो शनि में से सूर्य को घटाये और रात में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य में से शनि को घटाकर लग्न को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से राज सहम होता है। इसका दूसरा नाम पिता सहम भी है।

माता सहम

दिन में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्र में से शुक्र को घटाये और रात में वर्षप्रवेश हो तो शुक्र में से चन्द्र को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ सैकता करने से माता सहम होता है।

कर्म सहम

दिन में वर्षप्रवेश हो तो भौम में से बुध को घटाये और रात में वर्षप्रवेश हो तो बुध में से मंगल को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्ववत् सैकता करने से कर्म सहम होता है।

प्रसूति सहम

रात में वर्षप्रवेश हो तो बुध में से बृहस्पति को घटाये और दिन में वर्षप्रवेश हो तो गुरु में से बुध को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्ववत् सैकता करने से प्रसूति सहम होता है।

शत्रु सहम

दिन में वर्षप्रवेश हो तो भौम में से शनि को घटाये और रात में वर्षप्रवेश हो तो शनि में से भौम को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्ववत् सैकता करने से शत्रु सहम होता है।

बन्धन सहम

दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुण्य सहम में से शनि को घटाये और रात में वर्षप्रवेश हो तो शनि में से पुण्य सहम को घटाकर अवशेष में लग्न को जोड़कर पूर्ववत् सैकता करने से बन्धन सहम होता है।

भ्रातृ सहम[1]

गुरु में से शनि को घटाकर शेष में लग्न को जोड़कर सैकता करने से भ्रातृ सहम होता है।

पुत्र सहम

गुरु में से चन्द्र को घटाकर अवशेष में लग्न को जोड़कर पूर्ववत् सैकता करने से पुत्र सहम होता है।

विवाह सहम

शुक्र में से शनि को घटाकर शेष में लग्न जोड़कर पूर्ववत् सैकता कर देने से विवाह सहम होता है।

व्यापार सहम

मंगल में से बुध को घटाकर शेष में लग्न को जोड़कर पूर्ववत् सैकता करने से व्यापार सहम होता है।

रोग सहम

लग्न में से चन्द्र को घटाकर शेष में लग्न को जोड़कर पूर्वोक्त सैकता करने से रोग सहम होता है। रोग सहम में सर्वदा एक जोड़ा जाता है।

मृत्यु सहम

अष्टम भाव में से चन्द्र को घटाकर शेष में शनि को जोड़कर सैकता करने से मृत्यु सहम होता है।

यात्रा सहम

नवम भाव में से नवमेश को घटाकर शेष में लग्न को जोड़कर सैकता करने से यात्रा सहम होता है।

---

१. यहाँ से दिन-रात के वर्षप्रवेश के सहम साधन में भेद नहीं है।

धन सहम

धन भाव में से लग्नेश को घटाकर अवशेष में लग्न को जोड़कर सैकता कर देने पर अर्थ सहम होता है।

विशेष—इस प्रकार सहमों का साधन कर वर्षकुण्डली में जिस स्थान में जिस सहम की राशि हो उस राशि में उस सहम को रख देना चाहिए। इस प्रकार सहम कुण्डली बन जायेगी।

विंशोत्तरी मुद्दादशा

अश्विनी से जन्म नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या हो उसमें गतवर्षों को जोड़ देना चाहिए। योगफल में से २ घटाकर अवशेष में ९ का भाग देने से १ आदि शेष में क्रमशः सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है।

विंशोत्तरी दशा के वर्षों को ३ से गुणा करने से विंशोत्तरी मुद्दादशा के दिन होते हैं।

उदाहरण—सूर्य ६ × ३ = १८ दिन, चन्द्रमा १० × ३ = ३० दिन अर्थात् १ मास, भौम ७ × ३ = २१ दिन, राहु १८ × ३ = ५४ दिन अर्थात् १ मास २४ दिन, गुरु १६ × ३ = ४८ दिन अर्थात् १ मास १८ दिन, शनि १९ × ३ = ५७ दिन अर्थात् १ मास २७ दिन, बुध १७ × ३ = ५१ दिन अर्थात् १ मास २१ दिन, केतु ७ × ३ = २१ दिन और शुक्र २० × ३ = ६० दिन अर्थात् २ मास की मुद्दादशा है।

विंशोत्तरी मुद्दादशा चक्र

आ.	चं.	भौ.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	ग्र.
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मा.
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दि.

वर्षपत्र में विंशोत्तरी मुद्दादशा लिखने का उदाहरण—

जन्म नक्षत्र विशाखा है, अश्विनी से गणना करने पर १६ संख्या हुई, १६ + ३४ = ५० − २ = ४८ ÷ ९ = ५ ल. ३ शे., भौम दशा में वर्षप्रवेश हुआ अतएव प्रारम्भ में भौमदशा रखकर चक्र बना दिया जायेगा।

विंशोत्तरी मुद्दादशा चक्र

भौ.	रा.	जी.	श.	बु.	के.	शु.	आ.	चं.	ग्र.
०	१	१	१	१	०	२	०	१	मास
२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	१८	०	दिन
२००३	२००३	२००३	२००३	२००४	२००४	२००४	२००४	२००४	२००४
७	७	९	११	१	२	३	५	६	७
५	२६	२०	८	५	२६	१७	१७	५	५

मुद्दा अन्तर्दशा

मुद्दा अन्तर्दशा निकालने का यह नियम है कि जिस ग्रह की दशा में अन्तर निकालना हो उस ग्रह को दशा को निम्नलिखित ध्रुवांकों से गुणा कर देना चाहिए। गुणा करने पर जो गुणनफल आवे उसमें ६० से भाग देने पर अन्तर्दशा के दिनादि होते हैं।

ध्रुवांक—

सूर्य = ४, चन्द्र = ८, भौम = ५, बुध = ७, गुरु = १०, शुक्र = ६, शनि = ९, राहु = ५, केतु = ६

उदाहरण—

सूर्य की अन्तर्दशा निकालनी है, अतः सूर्य मुद्दा की दिन संख्या १८ को उसके ध्रुवांक ४ से गुणा किया। गुणनफल में ६० का भाग दिया तो—

१८ × ४ = ७२; ७२ ÷ ६० = १ दिन, शेष १२ इसमें ६० से गुणा किया और ६० का भाग दिया—१२ × ६० = ७२० घटियाँ, ७२० ÷ ६० = १२ घटी। सूर्य की मुद्दादशा में सूर्यान्तर्दशा १।१२ दिन, घटी हुई। सुविधा के लिए यहाँ समस्त ग्रहों की अन्तर्दशा लिखी जाती है।

मुद्दादशान्तर्गत सूर्यान्तर्दशाचक्र

सू.	चं.	भौ.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहदशा
१	२	१	१	३	२	२	१	१	दिन
१२	२४	३०	३०	०	४२	६	४८	४८	घटी

मुद्दादशान्तर्गत चन्द्रान्तर्दशाचक्र

चं.	भौ.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रहदशा
४	२	२	५	४	३	३	३	२	दिन
०	३०	३०	०	३०	३०	०	०	०	घटी

मुद्दादशान्तर्गत भौमान्तर्दशाचक्र

भौ.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ग्रहदशा
१	१	३	३	२	२	२	१	२	दिन
४५	४५	३०	९	२७	६	६	२४	४८	घटी

मृद्दशान्तर्गत राह्वन्तर्दशाचक्र

रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	भौ.	ग्रहदशा
४	९	८	६	५	५	३	७	४	दिन
३०	०	६	१८	२४	२४	३६	१२	३०	घटी

मृद्दशान्तर्गत गुर्वन्तर्दशाचक्र

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	भौ.	रा.	ग्रहदशा
८	७	५	४	४	३	६	४	४	दिन
०	१२	३६	४८	४८	१२	२४	०	०	घटी

मृद्दशान्तर्गत शन्यन्तर्दशाचक्र

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	भौ.	रा.	गु.	ग्रहदशा
८	६	५	५	३	७	४	४	९	दिन
३३	३९	४२	४२	४८	३६	४५	४५	३०	घटी

मृद्दशान्तर्गत बुधान्तर्दशाचक्र

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	भौ.	रा.	गु.	श.	ग्रहदशा
५	५	५	३	६	४	४	८	७	दिन
४७	६	६	२४	४८	१५	१५	३०	३९	घटी

मृद्दशान्तर्गत केत्वन्तर्दशाचक्र

के.	शु.	सू.	चं.	भौ.	रा.	गु.	श.	बु.	ग्रहदशा
२	२	१	२	१	१	३	३	२	दिन
६	६	२४	४८	४५	४५	१०	९	२७	घटी

मृद्दशान्तर्गत शुक्रान्तर्दशाचक्र

शु.	सू.	चं.	भौ.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	ग्रहदशा
६	४	८	५	५	१०	९	७	६	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

योगिनी मुद्दादशा

अश्विनी से जन्मनक्षत्र तक गिनने से जितनी संख्या हो उसमें ३ और गताब्द संख्या जोड़ने से जो योगफल आये उसमें ८ का भाग देने से १ आदि शेष में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रा, उल्का, सिद्धा और संकटा की दशा होती है।

योगिनी दशा के वर्षों को १० से गुणा करने पर मुद्दा योगिनी दशा की दिनादि संख्या होती है। मंगला १ × १० = १० दिन, पिंगला २ × १० = २० दिन, धान्या ३ × १० = ३० दिन—एक मास, भ्रामरी, ४ × १० = ४० दिन—१ मास १० दिन, भद्रा ५ × १० = ५० दिन—१ मास २० दिन, उल्का ६ × १० = ६० दिन—२ मास, सिद्धा ७ × १० = ७० दिन—२ मास १० दिन और संकटा ८ × १० = ८० दिन—२ मास २० दिन की होती हैं।

योगिनी मुद्दादशा चक्र

मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	ग्रह
०	०	०	१	१	२	२	२	मास
१०	२०	१	१०	२०	०	१०	२०	दिन

उदाहरण—जन्मनक्षत्र विशाखा है, अश्विनी से गिनने पर १६ संख्या हुई। १६ + ३ = १९ + ३४ गताब्द = ५३ ÷ ८ = ६ ल. ५ शे. भद्रा की दशा में वर्षप्रवेश हुआ माना जायेगा।

योगिनी मुद्दादशा चक्र

भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	दशा
१	२	२	२	०	०	१	१	मास
२०	०	१०	२०	१०	२०	०	१०	दिन
२००३	२००३	२००३	२००४	२००४	२००४	२००४	२००४	२००४
७	८	१०	१	३	४	४	५	७
५	२८	२५	५	२५	५	२५	२५	५

मासप्रवेश साधन

वर्षप्रवेश का ही सूर्य प्रथम मास का सूर्य है। इसमें एक राशि जोड़ने से द्वितीय मास का सूर्य होता है। द्वितीय मास के सूर्य में एक राशि जोड़ने से तृतीय मास का सूर्य होता है। इसी स्पष्ट सूर्य के समय मास का प्रवेश होता है। मासप्रवेश का समय साधन करने के लिए मासप्रवेश के समय के स्पष्ट सूर्य के तुल्य अथवा कुछ न्यूनाधिक

स्पष्ट सूर्य पंचांग में देखकर उस पंचांगस्थ स्पष्ट सूर्य और मासप्रवेश के स्पष्ट सूर्य का अन्तर करके जो अंशादि शेष रहें उनकी विकला बना लेनी चाहिए। इन विकलाओं में सूर्य की गति की विकलाएँ बनाकर भाग देने से लब्ध दिन; शेष को ६० से गुणा कर इसी भाजक का भाग देने से लब्ध घटिकाएँ और शेष को ६० से गुणा कर उक्त भाजक का भाग देने पर लब्ध पल आयेंगे। यदि मासप्रवेश का सूर्य पंचांग के सूर्य में से घट गया हो तो आये हुए दिनादि को पंचांग के दिनादि में से घटा देना; अन्यथा जोड़ देना चाहिए।

उदाहरण—प्रस्तुत वर्षकुण्डली के प्रथम मास का स्पष्ट सूर्य ७।५।४१।४१ है, इसमें एक राशि जोड़ी—

७।५।४१।४१
१।

८।५।४१।४१ द्वितीय मासप्रवेश का स्पष्ट सूर्य

सं. २००३ के विश्व पंचांग में ८।५।०।५७ स्पष्ट सूर्य पौष कृष्ण १२ शुक्रवार का ४४।१८ मिश्रमान का दिया है।

८।५।४१।४१ मासप्रवेश के सूर्य में से
८।५ ।०।५७ पंचांगस्थ सूर्य को घटाया

०।४०।४४ इसकी विकलाएँ बनायीं

२४०० + ४४ = २४४४; सूर्य की गति ६१।२३ है, इसकी विकलाएँ
= ६१।२३
६०

३६६० + २३ = ३६८३

२४४४ ÷ ३६८३ = ० लब्धि; २४४४ शेष; २४४४ × ६० = १४६६४० ÷ ३६८३ = ३९ लब्धि; ३००३ शे.; ३००३ × ६० = १८०१८० ÷ ३६८३ = ४५।०।३९।४५ दिनादि आया। यहाँ मासप्रवेश के सूर्य में से ही पंचांग के सूर्य को घटाया है, अतएव पंचांग के दिनादि में जोड़ा—

६।४४।१८
०।३९।४५

७।२४। ३ अर्थात् शनिवार को २४ घटी ३ पल इष्टकाल पर द्वितीय मासप्रवेश होगा। इस इष्टकाल के लग्न, ग्रहस्पष्ट, भावस्पष्ट आदि पूर्ववत् बना लेने चाहिए तथा मासप्रवेश की कुण्डली भी तैयार कर लेनी चाहिए। इस प्रकार द्वादश महीनों की मास-कुण्डलियाँ तैयार कर लेनी चाहिए।

मास प्रवेश और दिनप्रवेश निकालने की अन्य विधि

जन्मकालीन सूर्य जितनी राशि संख्यावाला हो, उसको ग्यारह स्थानों में रखना चाहिए और इसमें क्रमशः एक-एक राशि जोड़ने से मासप्रवेश का इष्टकाल आता है। तात्पर्य यह है कि जन्मकालीन स्पष्ट सूर्य और राशि आदि मिलने पर ही वर्षप्रवेश होता है। जितने समय में सूर्य जन्मकाल के सूर्य के बराबर अंश, कला तथा विकला पर होता है, वही वर्ष का इष्ट समय होता है। यदि एक राशि में अधिक सूर्य वहीं स्पष्ट के बराबर मिले तो वह मासप्रवेश का इष्ट समय होता है। एक-एक राशि बढ़ाते जाने से बारह महीनों का इष्ट होता है और कला-विकला में समानता रहती है।

उक्त स्पष्ट सूर्य में एक-एक अंश बढ़ाते जाने से दिनप्रवेश का इष्ट और दिनप्रवेश दोनों निकल आते हैं।

पंचांग से मासप्रवेश को घटी लाने की रीति

एक राशि जोड़ने से मासप्रवेश का सूर्य होता है। इसी के समीवर्ती पंचांग में स्थित अवधि प्रस्तार तथा मासप्रवेश के सूर्य का अन्तर करे। पुनः इस अन्तर की कला बना ले। उस अवधिस्थ सूर्य की गति से भाग देने पर वार, घटी और पल निकल आयेंगे। इनको अवधिस्थ वार, घटी, पल जोड़ दे या घटा दे। अवधिस्थ सूर्य से यदि मासप्रवेश का सूर्य अधिक हो तो उसे अवधिस्थ वार में जोड़ दे और यदि मासप्रवेश के सूर्य से अवधिस्थ सूर्य अधिक हो तो घटा दे। इसी वार-घटी-पलात्मक समय में मासप्रवेश होता है। दिनप्रवेश निकालने की विधि भी यही है।

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य ९।७।३०।६ है। इसको राशि में एक जोड़ दिया तो दूसरे मास के प्रवेश का सूर्य १०।७।३०।६ हुआ। इसके समीपवर्ती फाल्गुन कृष्ण ९ नवमी शुक्रवार की अवधि में स्थित सूर्य १०।१०।१।३८ है। इन दोनों का अन्तर किया—

१०।१०। १।३८
१०। ७।३०। ६

०। २।३१।३२ हुआ। अब २ अंश को ६० से गुणा कर कलाएँ बनायीं और इसमें ३१ कलाओं को जोड़ा। पश्चात् विकलात्मक मान बनाया—

२×६०=१२०+३१=१५१ कलाएँ

१५१×६०=९०६०, ९०६०+३२=९०९२ यह भाज्य है।

अवधिस्थ सूर्य की गति ६० विगति ३१ है। इसका विकलात्मक मान =

६० × ६० = ३६०० + ३१ = ३६३१ यह भाजक है।

९०९२ ÷ ३६३१ = २, १८२९ शेष

१८२९ × ६० = १०९७४० ÷ ३६३१ = ३०; ८१० शेष

८१० × ६० = ४८६०० ÷ ३६३१ = १३ लब्धि।

२।३०।१३ लब्धि अर्थात् २ दिन ३० घटी १३ पल हुआ।

अब यह सोचना है कि मासप्रवेश के सूर्य से अवधिस्थ सूर्य अधिक है, अतः २।३०।१३ को ऋणचालक जानकर इन वारादि को अवधिस्थ वारादि ६।०।० में घटाया तो ३।२९।४७ वार, घटी, पल हुए। अतएव फाल्गुन कृष्ण पंचमी भौमवार २९ घटी ४७ पल पर द्वितीय मासप्रवेश होगा। इस प्रकार प्रत्येक महीने का मासप्रवेश तैयार किया जा सकता है।

सारणी पर मासप्रवेश का ज्ञान

जिस राशि के जितने अंश पर वर्षप्रवेश का इष्ट वार-घटी-पलात्मक मान हो उसमें सारणी पर से उसी राशि अंश के कोष्ठक में जो वार, घटी पल हैं, उनको जोड़ देने से आगे का मासप्रवेश का इष्टकाल होता है।

उदाहरण—कन्या राशि के ५वें अंश पर घटी-पलात्मक ७।३।५ मान है। सारणी में कन्या राशि के ५वें अंश के समक्ष कोष्ठक में २।२०।२० फल है। इसे पहले-वाले इष्टकाल में जोड़ा—

७। ३। ५

२।२०।२०

९।२३।२५ यही अगले महीने का इष्टकाल है। इष्टकाल पर से लग्न, तन्वादिभाव एवं ग्रहयोग आदि का आनयन कर लेना चाहिए। सुविधा की दृष्टि से मासप्रवेश-बोधक सारणी दी जा रही है। इसपर से मासप्रवेश का इष्टकाल निकाल लेना चाहिए।

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
राशि	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
०	५६	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
मेष	५३	२८	४१	५४	१२	२७	२५	५५	७	१९	५४	४८	२२	३६	५०	५५	०	४०	१८	३६	१७	१९	५७	४७	३८	३९	१९	१९	१९
१	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
वृष	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
	३	१४	७	५०	३	१७	३	१४	७	३५	७	१२	२०	१८	४३	९	३५	५	५६	२०	४६	४२	३७	३३	२९	२५	२१	१७	१३
२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
मिथुन	२८	२७	२६	२८	२७	२६	२७	२८	२७	२६	२७	२८	२७	२६	२७	२८	२७	२६	२७	२६	२७	२८	२७	२६	२७	२८	२७	२८	२८
	२८	१८	१९	२०	२६	२५	२२	७	५४	३३	११	२२	७	५४	३३	११	२२	७	५४	३३	११	२२	७	५४	३३	११	२२	११	९
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
कर्क	२७	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	१
	५८	३२	५६	१३	२५	३७	५०	५२	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	६७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	३३
४	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
सिंह	०	५९	५७	५६	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	२९	२८
	२५	२८	२१	१०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३५	३२	२९	२६	२३	१९	१६	१३	९	६	२	५९	५५	५२	४८	४५	४१	३७
५	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
कन्या	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७
	५८	२७	३६	२४	२२	२०	५०	३३	२२	२१	२०	१९	१८	५९	४०	३४	३०	२६	२२	१७	४५	५५	०	५१	१०	१५	४६	३१	३५

६ तुला	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	५२	५१	५१	५०	४९	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३४	३३	३२	३१	३०	३०	२९	२९
	३३	५६	१	७	५६	२	२	११	२९	२९	३८	५०	२१	१८	३६	४२	२	२०	५७	६	३०	३६	१	३६	३८	३१	३९	२७	४६	११
७ वृश्चिक	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	२८	२७	२६	२६	२६	२५	२५	२४	२४	२३	२३	२२	२२	२१	२१	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	२५	१७	२४	१८	१०	४१	१२	४३	१४	४५	५	२८	५	४१	२७	५३	१६	५	४१	२८	१५	११	७	५१	४७	४३	४२	३९	३५	३०
८ धनु	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२४	२४	२५	२५	२५	२६
	१९	२५	३६	४१	५१	५४	५७	३	१३	३३	४६	४९	२	१५	१८	४७	१५	३६	५१	५५	५९	७	५७	१३	८	३४	२	२९	५६	२३
९ मकर	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	२६	२७	२८	२८	२८	२९	२९	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४३	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
	५६	३६	३	३०	५३	४८	५१	५५	५५	१४	२४	७	४४	५४	५७	३१	५६	५०	३४	८	२	४७	६	५१	४१	४१	३१	११	१७	२३
१० कुम्भ	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१९	२०	२१
	२५	१८	१२	६	०	०	०	११	१५	१४	१३	१२	२०	४१	२२	३३	३५	३१	३९	२	२६	१२	१४	१६	१८	३०	३७	२२	२४	२९
११ मीन	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	२२	२३	२४	२५	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३५	३६	३७	३८	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४७	४८	४९	५१	५२	५३	५३	५४	५५
	३४	२२	३४	४९	३०	३०	४१	४५	४८	५३	१७	३८	४४	५१	१८	५०	१२	१९	५१	५७	५६	५	१४	२३	१७	५०	२३	५८	३४	५४

वर्षेश का फल

पूर्ण बलवान् वर्षेश हो तो सुख, धनप्राप्ति, यशलाभ और निर्बल वर्षेश हो तो नाना प्रकार के कष्ट, धनहानि, शारीरिक रोग होते हैं। वर्षेश ६।८।१२वें स्थानों में स्थित हो तो अनिष्ट फल होता है और इन स्थानों से भिन्न स्थानों में स्थित हो तो शुभ फल होता है।

वर्षेश सूर्य का फल—पूर्णबली सूर्य वर्षेश हो तो प्रतिष्ठा-लाभ, धन, पुत्र, यश का लाभ, कुटुम्बियों को सुख, स्वास्थ्यलाभ, शासन से लाभ, मकान-सुख और सुख-शान्ति होती है। किन्तु यह फल तभी घटता है जब सूर्य जन्मकाल में भी बलवान् हो; जो ग्रह जन्मसमय में निर्बल होता है, उसका फल मध्यम मिलता है।

मध्यमबली सूर्य वर्षेश हो तो अल्पसुख, कलह, स्थानच्युति, भय, अल्प धन-लाभ, सन्तान-लाभ और रोगभय होता है। अल्पबली सूर्य वर्षेश हो तो विदेशगमन, धननाश, शोक, शत्रुभय, आलस, अपयश और कलह आदि फल होते हैं।

चन्द्रमा—पूर्णबली चन्द्रमा वर्षेश हो तो धन, स्त्री, पुत्र, गृह-विलासिता की सामग्री, नाना प्रकार के वैभव और उच्चपद आदि फलों की प्राप्ति होती है।

मध्यबली चन्द्रमा वर्षेश हो तो साधारण सुख, कुटुम्बियों से कलह, सम्मानप्राप्ति, स्थान-त्याग, धनागम और साधारण रोग आदि फल होते हैं। पापग्रह के साथ चन्द्रमा हो तो कफजन्य रोग, कास, ज्वर आदि से पीड़ा होती है।

नष्ट या हीनबली चन्द्रमा वर्षेश हो तो शीतज्वर, कफज्वर, खाँसी, मृत्युतुल्य कष्ट और नाना प्रकार की व्याधियाँ होती हैं।

मंगल—पूर्णबली और वर्षेश हो तो कीर्ति, जयलाभ, नायकत्व, धनलाभ, पुत्रलाभ, सम्मानप्राप्ति और नाना प्रकार के वैभव प्राप्त होते हैं। मध्यबली भौम वर्षेश हो तो रुधिरविकार, घाव, फोड़ा-फुन्सियों के कष्ट से पीड़ा, सम्मान, नायकत्व, अल्प धनलाभ और साधारण सुख प्राप्त होते हैं। हीनबली भौम वर्षेश हो तो शत्रुओं से भय, अपवाद, अग्निभय, शस्त्रघात, विदेशगमन और दुराचरण आदि फल मिलते हैं।

बुध—बलवान् बुध वर्षेश हो तो प्रत्युत्पन्नमतित्व, विद्यालाभ, कलाओं में निपुणता, गणित-लेखन-वैद्यविद्या से विशेष सम्मान और शासनाधिकार प्राप्त होते हैं। मध्यबली बुध वर्षेश हो तो व्यापार से लाभ, मित्रों से प्रेम, यश और विद्या में सफलता आदि फल प्राप्त होते हैं। हीनबली बुध वर्षेश हो तो धर्मनाश, उन्मत्तता, धनहानि, पुत्रमृत्यु, दुराचरण और तिरस्कार आदि फल प्राप्त होते हैं।

गुरु—पूर्णबली गुरु वर्षेश हो तो शत्रुनाश, सन्तान-धन-कीर्ति का लाभ, लोक में विश्वास, उत्तम बुद्धि, निधिलाभ और राजमान्यता आदि फल होते हैं। मध्यमबली वर्षेश हो तो उपर्युक्त फल मध्यम रूप में मिलता है। हीनबली वर्षेश हो तो धन, धर्म और सौख्य हानि, लोकनिन्दा, कलह और रोग आदि फल होते हैं।

शुक्र—पूर्णबली शुक्र वर्षेश हो तो मिष्ठान्न लाभ, विलास की वस्तुओं की प्राप्ति,

प्रतापवृद्धि, विजयलाभ, प्रसन्नता, सुखलाभ, सम्मानप्राप्ति और व्यापार से प्रचुर लाभ होता है। मध्यबली शुक्र वर्षेश हो तो गुप्त रोग, धनहानि, व्यापार से अल्पलाभ, साधारण सुख और यशलाभ आदि फल प्राप्त होते हैं। हीनबली शुक्र वर्षेश हो तो कलह, धननाश, आजीविकारहित और नाना कष्ट आदि फल होते हैं।

शनि—पूर्णबली शनि वर्षेश हो तो नवीन भूमि, नवीन घर तथा खेत-लाभ, बगीचा, तालाब, कुआँ आदि का निर्माण, स्वास्थ्यलाभ, उच्चपद प्राप्ति आदि फल मिलते हैं। मध्यबली शनि वर्षेश हो तो कामुकता, वासना का प्राबल्य, धनहानि और अल्पसुख प्राप्त होते हैं। अल्पबली शनि वर्षेश हो तो धननाश, विपत्ति, शत्रुभय और कुटुम्बियों से कलह आदि फल प्राप्त होते हैं।

मुन्थाफल

मुन्था लग्न में हो तो आरोग्य, सुख, शान्ति; द्वितीय में हो तो धनप्राप्ति, व्यापार से लाभ, अकस्मात् धनलाभ; तृतीय स्थान में हो तो बल, गौरव, पराक्रम की प्राप्ति, यशलाभ, सम्मान; चतुर्थ स्थान में हो तो दुख, कलह, अशान्ति; पंचम स्थान में हो तो आरोग्य, धनलाभ, कुटुम्बियों से प्रेम; छठे स्थान में हो तो रोग, अग्निभय, शत्रुचिन्ता; सप्तम स्थान में हो तो स्त्री को रोग, सन्तान को कष्ट, स्वयं को आधिव्याधि; अष्टम स्थान में हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट; नौवें भाव में हो तो धर्म, धन का लाभ, भाग्य की वृद्धि; दसवें भाव में हो तो मानवृद्धि, शासन में अधिकार, राजमान्यता; ग्यारहवें में हो तो हानि, व्यापार में क्षति एवं व्यय भाव में हो तो रोग, हानि और कष्ट आदि फल प्राप्त होते हैं।

वर्ष-अरिष्ट योग

१—वर्षलग्नेश, अष्टमेश और मुन्थेश ४।८।१२वें स्थान में हों या जन्मलग्नेश अथवा चन्द्रमा अनेक पापग्रहों से युक्त, दृष्ट ८वें स्थान में हो और शनि वर्षलग्न में हो, तो वर्ष अरिष्टकारक होता है।

२—जन्मलग्नेश, त्रिराशीश, मुन्थेश अस्त हों, तथा वर्षलग्नेश और वर्षेश नीच राशि में हों तो वर्ष-अरिष्ट योग होता है।

३—बलवान् अष्टमेश केन्द्र में या वर्षलग्नेश ८वें में अथवा अष्टमेश लग्न में हों और इनपर पापग्रहों की दृष्टि हो तो वर्ष कष्टकारक होता है।

४—शुक्र नीच राशि में या गुरु अन्य ग्रहों के वर्ग में हो अथवा बुध, शुक्र अस्त हों और चन्द्रमा नीच राशि में हो तो अरिष्ट योग होता है।

५—लग्नेश मेष या वृश्चिक राशिगत अष्टम स्थान में मंगल से दृष्ट हो साथ ही साथ शुक्र, बुध अस्त हों तो अरिष्ट योग होता है।

६—धनेश, भाग्येश नीच राशि में तथा वर्षेश निर्बल हो, पापग्रहों से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग होता है।

७—चन्द्र और सूर्य की युति ६।८।१२वें स्थान में हो या दोनों में १२ अंश से अधिक अन्तर न हो तो अरिष्ट योग होता है।

८—वर्षलग्नेश चन्द्र के साथ अष्टम स्थान में हो और अष्टमेश वर्षलग्न में हो तो अरिष्ट योग होता है।

९—लग्नेश, नवमेश वक्री होकर ९वें या ७वें स्थान में स्थित हों और शनि अथवा चन्द्रमा ८वें भाव में हों तो अरिष्ट योग होता है।

१०—वर्षलग्नेश शनि पापग्रहों से युत या दृष्ट ३।४।७वें स्थान में हो तो सन्निपात रोग होता है।

११—चन्द्र और मंगल की युति ८वें स्थान में हो तो नाना रोग होते हैं।

१२—कर्क राशि का शनि वर्षलग्न से ७ या ८वें भाव में हो तथा जन्मकुण्डली में भी इन्हीं भावों में हो तो रोग होते हैं।

अरिष्टभंग योग

१—अरिष्टभंग योग वर्षलग्नेश पंचवर्गी में सबसे अधिक बलवान् होकर १।४।५।७।९।१०वें भाव में हो तो अरिष्टनाशक योग होता है।

२—सप्तमेश गुरु से युत दृष्ट होकर लग्न में हो अथवा त्रिराशीश बलवान् होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो अरिष्टनिवारक योग होता है।

३—उच्चराशि का शनि बलवान् होकर वर्षेश हो तथा वह ३।११वें भाव में स्थित हो तो अरिष्टनाशक योग होता है।

४—बलवान् सुखेश सुखस्थान में शुभग्रहों से युत या दृष्ट हो अथवा शुभग्रह १।४।५।७।९।१०वें भावों में और पापग्रह ३।६।११वें भावों में हों तो अनिष्टनाशक योग होता है।

धनप्राप्ति का विचार

जन्मकुण्डली में गुरु जिस भाव का स्वामी हो, यदि वर्षकुण्डली में वह उसी भाव में बैठा हो और वर्षलग्नेश के साथ मुत्थशिल योग करता हो तो वर्ष-भर व्यक्ति को अर्थलाभ होता है।

वर्षकाल में गुरु धनस्थान में हो और उसको शुभग्रह देखते हों अथवा शुभग्रहों से युक्त हो तो धनलाभ और सम्मान देनेवाला योग होता है।

धनभाव और धनसहम स्थान में बुध, गुरु और शुक्र हों अथवा इन दोनों पर इनकी दृष्टि हो तो प्रचुर धनलाभ होता है।

धनेश और वर्षलग्नेश इन दोनों का मित्रदृष्टि से मुत्थशिल योग हो तो व्यक्ति को बिना प्रयास के धन मिलता है। यदि इन दोनों का मुसरिफ योग हो तो धननाश होता है।

धनभाव का विचार करने के लिए साधारण नियम यह है कि धनेश बलवान्

होकर बली ग्रहों से युत या दृष्ट केन्द्र, त्रिकोण या लाभस्थान में हो और लग्नेश मैत्री तथा इत्थशाल आदि शुभ सम्बन्ध करता हो तो धनलाभ होता है। इसी प्रकार अन्य भावों का विचार करना चाहिए।

स्वास्थ्य विचार

बलवान् वर्षेश, लग्नेश, मुन्थेश तथा मुन्था शुभग्रहों से युक्त, दृष्ट, केन्द्र या त्रिकोण में हों तो शरीर स्वस्थ और सुख एवं उक्त ग्रह नीच, बलहीन, अस्तंगत, शत्रुक्षेत्र में—६।८।१२वें स्थान में पापग्रहों से युत, दृष्ट हों तो महाकष्ट, रोग, पीड़ा एवं शुभ और पापग्रह दोनों से युत या दृष्ट हों तो मिश्रित फल होता है।

इन्हीं नियमों से अन्य भावों का भी विचार कर लेना चाहिए।

मासप्रवेश कुण्डली और ग्रहस्पष्टों से प्रत्येक मास का फलाफल ग्रहों के बल तथा स्थित स्थानानुसार निकाल लेना चाहिए।

सहम फल

सहम राशि का स्वामी अपने उच्च, अपने घर, अपने हद्दा, अपने नवमांश में स्थित हो और लग्न को देखता हो तो बली कहा जाता है। और सहम राशि का स्वामी उच्च का, स्वराशि का होकर भी लग्न को नहीं देखता हो तो निर्बल कहा जाता है। जन्मसमय सूर्य जिस राशि में बैठा हो उसका स्वामी तथा चन्द्रमा जिस राशि में बैठा हो उसका स्वामी; इन दोनों ग्रहों के बलाबल का विचार भी कर लेना आवश्यक है।

सहम का फल अपनी राशि के स्वामी की दशा में प्राप्त होता है।

पुण्य सहम—बली पुण्य सहम शुभग्रह या अपने राशीश से युत या दृष्ट हो तो धर्म और धन की वृद्धि होती है। यदि निर्बल पुण्य सहम पापग्रहों से युत या दृष्ट हो तो संचित धन का नाश और अधर्म की वृद्धि होती है। पुण्य सहम वर्ष कुण्डली में ३।८।१२वें भाव में हो तो धर्म, धन और यश का नाश करता है और शुभग्रहों से दृष्ट या युत हो तो नाना प्रकार की विभूतियों की वृद्धि होती है। जिस वर्ष में पुण्य सहम शुभ फल देनेवाला होता है; उस वर्ष व्यक्ति को सभी प्रकार के सुख होते हैं। उसकी उन्नति सर्वतोमुखी होती है।

कार्यसिद्धि सहम—कार्यसिद्धि सहम शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो व्यक्ति की जय, सम्मान, अर्थलाभ होता है।

विवाह सहम का फल—वर्षकाल में विवाह सहम अपने स्वामी से युत या दृष्ट हो तथा अन्य शुभग्रहों से युत अथवा दृष्ट हो या शुभग्रहों से मुत्थशिल करता हो तो उस वर्षपत्रवाले का विवाह होता है या उसे उस वर्ष स्त्रीसुख की प्राप्ति होती है। विवाह सहम पापग्रहों से युत या अष्टमेश से युत अथवा दृष्ट हो तो विवाह सुख नहीं होता।

यशसहम का फल—वर्षकुण्डली में यशसहम की राशि का स्वामी ८वें स्थान में पापग्रहों से युत या दृष्ट हो तो यश का नाश होता है।

रोग सहम का फल

जिस वर्षकुण्डली में रोग सहम का स्वामी पापग्रह हो या पापग्रहों से युत हो तो व्यक्ति को रोग होता है। यदि रोग सहम का स्वामी अष्टमेश से मुत्थशिल करे तो उस प्राणी का मरण होता है।

इस प्रकार समस्त सहमों का फल शुभग्रह से युत या दृष्ट आदि बलाबलों के अनुसार स्वबुद्धि से जान लेना चाहिए। ६।८।१२वें भाव में सभी सहमों के स्वामियों का रहना हानिकारक होता है। जिस सहम का स्वामी उक्त स्थानों में होता है, उस सहम-सम्बन्धी कार्य उस वर्षपत्रवाले व्यक्ति के बिगड़ जाते हैं।

वर्ष का विशेष फल

जन्मलग्नेश और वर्षलग्नेश के सम्बन्ध से वर्ष का फल अवगत करना चाहिए। ये दोनों शुभग्रह हों, केन्द्र और त्रिकोण में स्थित हों तथा मित्र और शुभग्रहों से दृष्ट हों तो वर्ष अच्छा रहता है। दोनों के पापग्रह होने पर तथा ६।८।१२वें भाव में स्थित होने पर वर्ष अनिष्टकर होता है। पदोन्नति के लिए वर्षलग्नेश या मासलग्नेश का उच्चराशि या मूल त्रिकोण में स्थित रहना आवश्यक है।

मासफल अवगत करने के लिए मासकुण्डली निकालनी चाहिए।

मासाधिपति का निर्णय और मासफल

मासाधिपति का निर्णय करने के लिए अधिकारियों का इस क्रम से विचार करें—(१) मासलग्नपति (२) मुन्थहाधिपति (प्रतिमास में २$\frac{1}{2}$ अंश मुन्था बढ़ता है, इस क्रम से मुन्थहा राशि का स्वामी) (३) जन्मलग्न का स्वामी (४) त्रिराशिपति (५) दिन में मासप्रवेश हो तो सूर्यराशिपति और रात्रि में मासप्रवेश हो तो चन्द्रराशिपति (६) वर्षलग्न का स्वामी। इन छह अधिकारियों में जो बलवान् होकर मासकुण्डली की लग्न को देखता हो, वही मासाधिपति होता है। इस मास स्वामी के शुभाशुभ के अनुसार फल का विचार किया जाता है।

मासफल

मासलग्न का नवांशेश यदि मासलग्नेश तथा नवांश स्वामी के साथ मित्रभाव से स्थित हो, दृष्ट हो और उन दोनों स्वामियों को चन्द्रमा मित्रदृष्टि से देखता हो तो उस मास में नाना प्रकार का सुख मिलता है, शरीर स्वस्थ रहता है, आमदनी उत्तम होती है, प्रभुता बढ़ती है तथा अन्य व्यक्ति उसके अनुयायी बनते हैं।

यदि लग्नांशेश और लग्नेशांशेश दोनों परस्पर में शत्रुभाव से देखते हों और चन्द्रमा भी उन दोनों को शत्रुदृष्टि से देखता हो तो मनोदुख देते हुए रोग उत्पत्ति का योग बनता है। यदि पूर्वोक्त स्वामियों के बीच में कोई एक नीच राशि को प्राप्त हो अथवा अस्त हो तो महीने का पूर्वार्ध अंश कष्टकारक और उत्तरार्ध सौख्यप्रद होता है। यदि उक्त दोनों मासकुण्डली लग्नांशेश और मासकुण्डली लग्नेशांशेश नीच राशि में स्थित हों अथवा अस्तंगत हों अथवा एक नीच राशि में और दूसरा अस्तंगत हो तो उस महीने में मृत्यु योग कहना चाहिए। इस योग का फल तभी ठीक घटता है, जब जन्मकाल और वर्षकाल में अरिष्ट योग होता है और दशा मारकेश ग्रह की चलती है। अन्यथा केवल बीमारी ही समझनी चाहिए।

मासलग्न में जिस भाव के नवांश का स्वामी अपने स्वामी के नवांश स्वामी द्वारा मित्रदृष्टि से देखा जाता हो अथवा युक्त हो और वहीं चन्द्रमा भी यदि भावनवांशस्वामी और भावेशनवांशस्वामी को मित्रदृष्टि से देखता हो तो उस भाव से उत्पन्न सुख उसी महीने में प्राप्त होता है। नीच और अस्त आदि के होने पर—भावेश, भावनवांशेश नीच या अस्तंगत हों तो फल अशुभ प्राप्त होता है। दोनों के नीच या अस्त होने पर अधिक अशुभ और एक के नीच या अस्त होने पर अल्प अशुभ होता है।

वर्षलग्नेश, मासलग्नेश, वर्षेश और मासलग्ननवांशेश ये चारों जिस किसी भाव अथवा भावेश तथा नवांशेश के द्वारा मित्रदृष्टि से देखे जाते हों तो अथवा युक्त हों तो उस भाव का सौख्य प्राप्त होता है।

बारहवें, छठे तथा आठवें भावों के नवांशस्वामी निर्बल हों तो शुभ फल प्राप्त होता है; शेष भावों के नवांशस्वामी बलिष्ठ होने पर शुभ फल देते हैं।

वर्षलग्नेश, मासेश, वर्षेश और मुन्थहेश ये चारों पापग्रहों से युक्त होकर यदि छठे या आठवें स्थान में हों और इन चारों को पापग्रह शत्रुदृष्टि से देखते हों तो उस महीने में नाना प्रकार के कष्ट होते हैं। परिवार के सदस्य भी बीमार पड़ते हैं तथा स्वयं को भी रोग होता है। व्यापार या नौकरी में उक्त योग के होने से क्षति होती है। पुलिस और राजनीतिक कर्मचारियों को अपने अफ़सरों द्वारा डाँट-डपट सहन करनी पड़ती है। लाल और सफ़ेद वस्तुओं के व्यापारियों को विशेष रूप से हानि होती है। मानसिक संकट अधिक रहता है। मुक़दमा आदि में विशेष रूप से परेशान होना पड़ता है।

वर्षलग्नेश, मासेश और वर्षेश यदि ये तीनों बलवान् होकर १।४।७।१०वें भाव तथा त्रिकोण—५।९वें भाव में स्थित हों तो व्यक्ति को उस महीने में सभी प्रकार का सुख प्राप्त होता है। मासलग्नेश एकादश भाव या १।४।७।१०वें भाव में स्थित हों तो भी जातक को सभी प्रकार की सुख-सामग्रियाँ प्राप्त होती हैं। मासेश और मासलग्नेश के दशम या नवम भाव में रहने से विशेष आर्थिक लाभ होता है। राज-सम्मान, प्रतिष्ठा और मानसिक शान्ति प्राप्त होती है।

जिस मास में आठवें भाव में पापग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर चन्द्रमा स्थित हो उस महीने में शत्रुओं के द्वारा विशेष कष्ट प्राप्त होता है। स्वास्थ्य भी बिगड़ता है और नाना प्रकार के अन्य कष्ट भी सहन करने पड़ते हैं।

जिस महीने की मासकुण्डली में प्रवासावस्था में चन्द्रमा हो उसमें प्रवास, नष्टावस्था में हो तो द्रव्यनाश, मृतावस्था में हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट, जयावस्था में हो तो विजय, हास्यावस्था में हो तो विलास, रति अवस्था में हो तो पर्याप्त सुख, क्रीडितावस्था में हो तो सौख्य, प्रसुप्तावस्था में हो तो कलह, भुक्ति अवस्था में हो तो शारीरिक कष्ट, ज्वरावस्था में हो तो भय, कम्पितावस्था में हो तो ज्वर, कास; एवं सुस्थितावस्था में हो तो सुख प्राप्त होता।

मास का फल अवगत करने के लिए मासलग्नेश, चन्द्रमा, मासलग्न और मास-लग्ननवांश के बलाबल का विचार करना चाहिए। जिस महीने में मासलग्नेश केन्द्र, त्रिकोण में स्थित हो, और शुभग्रह की दृष्टि हो, उस महीने में सुख प्राप्त होता है। मानसिक शक्ति मिलती है। इसी प्रकार जिस महीने में चन्द्रमा उच्च का हो अथवा अपनी राशि में लग्न या दशम में स्थित हो, उस महीने में धनधान्य की प्राप्ति होती है। अभीष्ट सिद्धि के लिए इस प्रकार का चन्द्रमा अत्यन्त उपयोगी होता है। यदि दशमेश चर राशि में स्थित हो तो उस महीने में सरकारी सेवा करनेवालों का स्थानान्तरण होता है। दशमेश शुभग्रहों से दृष्ट या युत हो तो पदोन्नतिपूर्वक स्थान परिवर्तन होता है और अशुभ या नीच राशि स्थित ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो अपमानपूर्वक स्थान परिवर्तन होता है।

---

१. विहाय राशिं चन्द्रस्य भागा द्विघ्नाः शरोद्धृताः।
लब्धं गता अवस्थाः स्युर्भोग्यायाः फलमादिशेत्॥

—ताजिकनीलकण्ठी, बनारस १९३९ ई., अ. ८, श्लो. २९

चन्द्रमा की राशि को छोड़कर अंशादि को दो से गुणा कर पाँच का भाग देने पर लब्धगत अवस्था और वर्तमान भोगावस्था होती है। चन्द्रमा की (१) अवासा (२) नष्टा (३) मृता (४) जया (५) हास्या (६) रति (७) क्रीडिता (८) प्रसुप्ता (९) भुक्ति (१०) ज्वरा (११) कम्पिता (१२) सुस्थिता ये बारह अवस्थाएँ मानी गयी हैं। इन अवस्थाओं के अनुसार दैनिक और मासिक फल जाना जा सकता है।

पंचम अध्याय

मेलापक

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि ज्योतिष शास्त्र सूचक है। विवाह के पूर्व वर-कन्या की जन्मपत्रियों को मिलाने का आशय केवल परम्परा का निर्वाह नहीं है, किन्तु भावी दम्पति के स्वभाव, गुण, प्रेम और आचार-व्यवहार के सम्बन्ध में ज्ञात करना है। जबतक समान आचार-व्यवहारवाले वर-कन्या नहीं होते तबतक दाम्पत्य-जीवन सुखमय नहीं हो सकता है। जन्मपत्रियों की मेलनपद्धति वर-कन्या के स्वभाव, रूप और गुणों को अभिव्यक्त करती है। भारतीय संस्कृति में प्रेमपूर्वक विवाह कल्याणकारी नहीं माना गया है। किन्तु दो अपरिचित व्यक्तियों का जीवन-भर के लिए गठबन्धन कर दिया जाता है। यदि ऐसी परिस्थिति में उन दोनों के स्वभाव के बारे में सूचक ज्योतिष द्वारा कुछ जान लिया जाये तो अत्यन्त उपकार उन व्यक्तियों का हो सकता है। अतएव इस वैज्ञानिक मेलन-पद्धति की उपेक्षा करना नितान्त अनुचित है। ज्योतिष नक्षत्र, योग, ग्रह, राशि आदि के तत्त्वों के आधार पर व्यक्ति के स्वभाव, गुण का निश्चय करता है। वह बतलाता है कि अमुक नक्षत्र, ग्रह और राशि के प्रभाव से उत्पन्न पुरुष का अमुक नक्षत्र, ग्रह और राशि के प्रभाव से उत्पन्न नारी के साथ सम्बन्ध करना अनुकूल है। या प्रभाव-शामक सामंजस्य के होने से दोनों के स्वभाव-गुण में समानता है। अतएव मेलन-पद्धति द्वारा वर-कन्या की जन्मपत्रियों का विचार करना चाहिए। यहाँ सर्वप्रथम ग्रह मिलाने की विधि लिखी जाती है।

ज्योतिष शास्त्र में स्त्रीनाशक और पतिनाशक योग बताये गये हैं, जिनमें अधिकांश का उल्लेख तृतीय अध्याय में किया जा चुका है।

जन्मकुण्डली में १।४।७।८।१२वें भाव में पापग्रहों का होना पति या पत्नीनाशक कहा गया है। इन स्थानों में पुरुष की कुण्डली में मंगल होने से समंगल और स्त्री की कुण्डली में मंगल होने से मंगली संज्ञक योग होते हैं। समंगल पुरुष का मंगली स्त्री के साथ सम्बन्ध करना ठीक कहा जाता है, इसी प्रकार मंगली स्त्री का समंगल पुरुष के साथ सम्बन्ध होना अच्छा होता है। ज्योतिष में उपर्युक्त स्थानों में स्थित मंगल सबसे अधिक दोषकारक, उससे कम शनि और शनि से कम अन्य पापग्रह बताये गये हैं। इस योग को चन्द्रमा, शुक्र और सप्तमेश से भी देख लेना चाहिए। स्त्री की कुण्डली में सप्तम और अष्टम स्थान में शनि और मंगल इन दोनों का रहना बुरा माना है। सप्तमेश

और अष्टमेश का एक साथ रहना पति या पत्नी की कुण्डली में अनिष्टकारक होता है। यदि यही योग दोनों की कुण्डली में हो तो अच्छा होता है।

ज्योतिष शास्त्र में एक मत यह है कि वर की कुण्डली में लग्न और शुक्र एवं कन्या की कुण्डली में लग्न और चन्द्रमा से १।४।७।८।१२वें स्थान के पापग्रहों का विचार करते हैं। वर और कन्या के अनिष्टकारी पापग्रहों की संख्या समान या कन्या से वर के ग्रहों की संख्या अधिक होनी चाहिए। कन्या का सातवाँ और आठवाँ स्थान विशेष रूप से देखना चाहिए।

वर की कुण्डली में लग्न से ६ठे स्थान में मंगल, ७वें में राहु और ८वें में शनि हो तो भार्याहन्ता योग होता है, इसी प्रकार कन्या की कुण्डली में उपर्युक्त योग हो तो पतिहन्ता योग होता है।

सौभाग्य विचार

सप्तम में शुभग्रह हों तथा सप्तमेश शुभग्रहों से युत या दृष्ट हो तो सौभाग्य अच्छा होता है। अष्टम स्थान में शनि या मंगल का होना सौभाग्य को बिगाड़ता है। अष्टमेश स्वयं पापी हो या पापी ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो सौभाग्य को ख़राब करता है। सौभाग्य का विचार वर और कन्या दोनों की कुण्डली में कर लेना चाहिए। यदि कन्या का सौभाग्य वर के सौभाग्य से यथार्थ न मिलता हो तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

मिलान करने के अन्य नियम

१—वर के सप्तम स्थान का स्वामी जिस राशि में हो, वही राशि कन्या की हो तो दाम्पत्य-जीवन सुखमय होता है।

२—यदि कन्या की राशि वर के सप्तमेश का उच्च स्थान हो तो दाम्पत्य-जीवन में प्रेम बढ़ता है। सन्तान और सुख होता है।

३—वर के सप्तमेश का नीच स्थान यदि कन्या की राशि हो तो भी वैवाहिक जीवन सुखी रहता है।

४—वर का शुक्र जिस राशि में हो, वही राशि यदि कन्या की हो तो विवाह कल्याणकारी होता है।

५—वर की सप्तमांश राशि यदि कन्या की राशि हो तो दाम्पत्य-जीवन सुख-कारक होता है। सन्तान, ऐश्वर्य की बढ़ती होती है।

६—वर का लग्नेश जिस राशि में हो, वही राशि कन्या की हो या वर के चन्द्रलग्न से सप्तम स्थान में जो राशि हो वही राशि यदि कन्या की हो तो दाम्पत्य-जीवन प्रेम और सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

७—वर की राशि से सप्तम स्थान पर जिन-जिन ग्रहों की दृष्टि हो, वे ग्रह

जिन-जिन राशियों में बैठे हों, उन राशियों में से कोई भी राशि कन्या की जन्मराशि हो तो दम्पति में अपूर्व प्रेम रहता है।

८—जिन कन्याओं की जन्मराशि वृष, सिंह, कन्या या वृश्चिक होती है, उनको सन्तान कम उत्पन्न होती है।

९—यदि पुरुष की जन्मकुण्डली की षष्ठ और अष्टम स्थान की राशि कन्या की जन्मराशि हो तो दम्पति में परस्पर कलह होता है।

१०—वर-कन्या के जन्मलग्न और जन्मराशि के तत्त्वों[1] का विचार करना चाहिए। यदि दोनों की राशियों के एक ही तत्त्व हों तो मित्रता होती है। अभिप्राय यह है कि कन्या की जन्मराशि या जन्मलग्न जलतत्त्ववाली हो और वर की जन्मराशि या जन्मलग्न जल या पृथ्वीतत्त्ववाली हो तो मित्रता और प्रेम समझना चाहिए। तत्त्वों की मित्रता निम्न प्रकार है।

पृथ्वीतत्त्व की मित्रता जलतत्त्व के साथ, अग्नितत्त्व की मित्रता वायुतत्त्व के साथ तथा पृथ्वीतत्त्व की अग्नितत्त्व के साथ, जलतत्त्व की अग्नितत्त्व के साथ और जलतत्त्व की वायुतत्त्व के साथ शत्रुता होती है। तत्त्व के इस विचार को जन्मलग्न और जन्मराशि के साथ अवश्य देख लेना चाहिए।

११—वर-कन्या के लग्नेश और राशीशों के तत्त्वों की मित्रता भी देख लेनी चाहिए। यदि दोनों के लग्नेश एक ही तत्त्व या मित्रतत्त्व के हों अथवा दोनों राशीश भी लग्नेश के समान एक ही तत्त्व या मित्रतत्त्व के हों तो दाम्पत्य-जीवन दोनों का सुख-शान्तिपूर्वक व्यतीत होता है। अन्यथा कलह, झगड़ा और अशान्ति रहती है।

१२—वर और कन्या की कुण्डली में सन्तान भाव का विचार अवश्य करना चाहिए। सन्तान योग तृतीय अध्याय में बताये गये हैं।

ज्योतिष में लग्न को शरीर और चन्द्रमा को मन माना गया है। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। इसीलिए आचार्यों ने जन्मराशि से मेलापक विधि का ज्ञान करना बताया है। गुण मिलान द्वारा वर और कन्या की प्रजनन शक्ति, स्वास्थ्य, विद्या एवं आर्थिक परिस्थिति का ज्ञान करना चाहिए। इस गुण मिलान-पद्धति में निम्न बातें होती हैं—(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट और (८) नाड़ी। इनमें एक-एक अधिक गुण माने गये हैं। अर्थात् वर्ण का १, वश्य का २, तारा का ३, योनि का ४, ग्रहमैत्री का ५, गणमैत्री का ६, भकूट का ७ और नाड़ी का ८ गुण होता है। इस प्रकार कुल ३६ गुण होते हैं। इसमें कम से कम १८ गुण मिलने पर विवाह किया जा सकता है, परन्तु नाड़ी और भकूट के गुण अवश्य होने चाहिए। इनके गुण बिना १८ गुणों में विवाह मंगलकारी नहीं माना जाता है।

---

१. ग्रह और राशियों के तत्त्व तृतीय अध्याय में लिखे गये हैं।

वर्ण जानने की विधि

मीन, वृश्चिक और कर्क ये राशियाँ ब्राह्मण वर्ण हैं। मेष, सिंह और धनु ये राशियाँ क्षत्रिय वर्ण हैं। मिथुन, तुला और कुम्भ ये राशियाँ शूद्र वर्ण हैं। कन्या, वृष और मकर ये राशियाँ वैश्य वर्ण हैं। इस वर्ण-विचार में श्रेष्ठ वर्ण की कन्या त्याज्य होती है।

वर्ण ज्ञात करने का चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२।८।४	१।५।९	६।२।१०	३।७।११

वर्ण गुण बोधक चक्र

वर का वर्ण

कन्या का वर्ण	वर्ण	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

पहले वर और कन्या की राशि मालूम करके वर्ण का ज्ञान करना चाहिए। पश्चात् इस चक्र के अनुसार वर्ण का गुण ज्ञात करना चाहिए।

उदाहरण—इन्दुमती और चन्द्रवंश का वर्ण गुण ज्ञात करना हो तो इन्दुमती की वृष राशि हुई तथा इसका वैश्य वर्ण हुआ और चन्द्रवंश की मीन राशि तथा ब्राह्मण वर्ण हुआ। मिलान किया तो एक गुण आया।

वश्य विचार

आधी मकर, मेष, सिंह, वृष और आधी धनु ये राशियाँ चतुष्पद संज्ञक हैं। वृश्चिक की सर्प संज्ञा है। तुला, मिथुन, कन्या और धनु का पहला भाग ये राशियाँ द्विपद संज्ञक हैं। कर्क राशि कीट संज्ञक है। मकर का उत्तरार्द्ध भाग कुम्भ और मीन ये राशियाँ जलचर संज्ञक हैं।

वश्य बोधक चक्र

मकर का पूर्वार्द्ध, मेष, सिंह, धनु का उत्तरार्द्ध, वृष,	चतुष्पद
कर्क	कीट
वृश्चिक	सर्प
तुला, मिथुन, कन्या, धन का पूर्वार्द्ध	द्विपद
मकर का उत्तरार्द्ध, कुम्भ, मीन	जलचर

वश्य बोधक चक्र

वर का वश्य

कन्या का वश्य	वश्य	च.	की.	स.	द्वि.	ज.
	च.	२	१	१	½	२
	की.	१	२	१	०	१
	स.	१	१	२	०	१
	द्वि.	०	०	०	२	१
	ज.	१	१	१	१	२

उदाहरण—पूर्वोक्त इन्दुमती की वृष राशि होने से चतुष्पद वश्य हुआ और चन्द्रवंश की मीन राशि होने से जलचर वश्य हुआ। अतः कोष्ठक में मिलाने से दो गुण आये।

तारा-विचार

कन्या[1] के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिने और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिने, गिनने से जो आवे उसमें अलग-अलग ९ का भाग देने पर जो शेष बचे उसको ही तारा जानना चाहिए।

तारा गुण-बोधक चक्र

वर की तारा

कन्या की तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

१. उदाहरण—इन्दुमती का कृत्तिका नक्षत्र है और चन्द्रवंश का रेवती नक्षत्र। कृत्तिका से रेवती तक गिनने से २५ संख्या आयी और रेवती से कृत्तिका तक गिनने से

१. वर और कन्या का जन्म नक्षत्र, नक्षत्रों के चरणों के अक्षरों से मालूम करना चाहिए।

४ संख्या आयी। इन दोनों में ९ का भाग दिया तो पहले स्थान में ७ संख्या शेष बची। अतः ७वीं तारा कन्या की हुई और दूसरी जगह ९ का भाग देने से चार शेष बचा। अतः वर की ४थी तारा हुई। इन दोनों को उपर्युक्त कोष्ठक में मिलाने से १॥ गुण तारा का प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सब जगह तारा मिला लेना चाहिए।

योनि-ज्ञानविधि

अश्विनी, शतभिषा की अश्व योनि; स्वाति, हस्त की महिष योनि; पूर्वाभाद्रपद, धनिष्ठा की सिंह योनि; भरणी, रेवती की गज योनि; कृत्तिका, पुष्य की मेष (मेढ़ा) योनि; श्रवण, पूर्वाषाढ़ा की वानर योनि; उत्तराषाढ़ा, अभिजित् की नेवला योनि; रोहिणी, मृगशिरा की सर्प योनि; ज्येष्ठा, अनुराधा की मृग योनि; मूल, आर्द्रा की श्वान योनि; पुनर्वसु, आश्लेषा की बिलाव योनि; पूर्वाफाल्गुनी, मघा की मूषक योनि; विशाखा, चित्रा की व्याघ्र योनि और उत्तराफाल्गुनी और उत्तराभाद्रपद की गो योनि होती है।

योनिवैर-ज्ञानविधि

गो और व्याघ्र का, महिष और अश्व का, कुत्ता और मृग का, सिंह और गज का, वानर और मेढ़ा का, मूषक और बिलाव का, नेवला और सर्प का वैर होता है।

योनि	अश्व	महिष	सिंह	हस्ती	मेष	वानर	नकुल
नक्षत्र	अ. श.	स्वा. ह.	ध. पू. भा.	भ. रे.	पु. कृ.	श्र. पू. षा.	अभि. उ. षा.
योनि	सर्प	मृग	श्वान	बिल्ली	मूषक	व्याघ्र	गौ
नक्षत्र	मृ. रो.	ज्ये. अनु.	मू. आ.	पुन. श्ले.	म. पू. फा.	वि. चि.	उ. भा. उ. फा.

योनि गुण बोधक चक्र

वर

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	बिलाव	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	○	✓	✓	✓	✓	✓
गज	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	○
मेष	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	○	✓	✓
सर्प	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	○	✓
श्वान	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	○	✓	✓	✓
बिलाव	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
मूषक	✓	✓	✓	✓	✓	○	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
गौ	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
महिष	○	✓	○	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
व्याघ्र	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
मृग	✓	✓	✓	✓	○	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
वानर	✓	✓	○	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
नकुल	✓	✓	✓	○	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
सिंह	✓	○	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓

कन्या

उदाहरण—इन्दुमती का कृत्तिका नक्षत्र होने से सर्प योनि हुई और चन्द्रवंश का रेवती नक्षत्र होने से गज योनि हुई। मिलाने से दो गुण प्राप्त हुए। इसी प्रकार अन्य जगह भी मिला लेना चाहिए।

ग्रह-मैत्री

सूर्य के मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा मित्र; बुध सम, शुक्र और शनैश्चर शत्रु हैं। चन्द्रमा के बुध और सूर्य मित्र; मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि सम और शत्रु कोई नहीं है। मंगल के चन्द्रमा, बृहस्पति और सूर्य मित्र; बुध शत्रु; शुक्र और शनैश्चर सम हैं। बुध के शुक्र और सूर्य मित्र; चन्द्रमा शत्रु; बृहस्पति, शनैश्चर और मंगल सम हैं। बृहस्पति के सूर्य, मंगल और चन्द्रमा मित्र; बुध और शुक्र शत्रु तथा शनैश्चर सम हैं। शुक्र के बुध और शनैश्चर मित्र; चन्द्रमा और सूर्य शत्रु तथा मंगल और बृहस्पति सम हैं। शनैश्चर के शुक्र और बुध मित्र; सूर्य, चन्द्रमा और मंगल शत्रु तथा बृहस्पति सम हैं।

ग्रह-मैत्री गुण बोधक चक्र

वर का राशि-स्वामी

कन्या का राशि-स्वामी	रा. स्वा.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
	सू.	५	५	५	४	५	०	०	गुण विवरण
	चं.	५	५	४	१	४	॥	॥	
	मं.	५	४	५	॥	५	३	॥	
	बु.	४	१	॥	५	॥	५	४	
	बृ.	५	४	५	॥	५	॥	३	
	शु.	०	॥	३	५	॥	५	५	
	श.	०	॥	॥	४	३	५	५	

उदाहरण—इन्दुमती की वृष राशि होने से, राशि-स्वामी शुक्र हुआ और चन्द्रवंश की मीन राशि होने से राशि-स्वामी बृहस्पति हुआ। अतः उपर्युक्त कोष्ठक में वर और कन्या के राशि-स्वामियों को मिलाने से $\frac{1}{2}$ गुण आया। इसी प्रकार सब जगह ग्रहमैत्री गुण को लाना चाहिए।

गण जानने की विधि

मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा और विशाखा ये नक्षत्र राक्षसगण; तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा ये नक्षत्र मनुष्यगण; और अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी और पुष्य ये नक्षत्र देवतागण संज्ञक हैं।

गण बोधक चक्र

म.	आश्ले.	ध.	ज्ये.	मू.	श.	कृ.	चि.	वि.	राक्षस
पू. भा.	पू. षा.	पू. फा.	उ. भा.	उ. षा.	उ. फा.	रो.	भ.	आ.	मनुष्य
अनु.	पुन.	मृ.	श्र.	रे.	स्वा.	ह.	अ.	पु.	देवता

गण-गुण बोधक चक्र

वर का गण

	गण	दे.	म.	रा.
कन्या का गण	दे.	६	५	१
	म.	६	६	०
	रा.	०	०	६

उदाहरण—इन्दुमती का कृत्तिका नक्षत्र होने से राक्षस गण हुआ और चन्द्रवंश का रेवती नक्षत्र होने से देवगण हुआ। उपर्युक्त कोष्ठक में वर और कन्या के गण को मिलाने से शून्य गुण आया। इसी प्रकार अन्यत्र भी गण मिलाना चाहिए।

भकूट जानने की विधि और उसका फल

कन्या की जन्मराशि से वर की जन्मराशि तक गिनना चाहिए तथा इसी प्रकार वर की जन्मराशि से कन्या की जन्मराशि तक भी गिनना चाहिए। यदि गिनने से दोनों की राशि छठी और आठवीं हो तो दोनों की मृत्यु, नवमी और पाँचवीं हो तो सन्तान की हानि तथा दूसरी और बारहवीं हो तो निर्धन होते हैं। इससे भिन्न राशियों में दोनों सुखी रहते हैं।

भकूट-गुण बोधक चक्र

वर की राशि

कन्या की राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ	ध.	म.	कुं.	मी.
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिं.	०	०	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
क.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुं.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

उदाहरण—इन्दुमती की वृष राशि और चन्द्रवंश की मीन राशि है। इनको कोष्ठक में मिलाया तो ७ गुण भकूट का हुआ। इसी प्रकार अन्यत्र भी भकूट मिलाना चाहिए।

नाड़ी जानने की विधि

ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा, पुनर्वसु, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी इन नक्षत्रों की आदि नाड़ी; मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद इनकी मध्य नाड़ी और स्वाति, विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती इन नक्षत्रों की अन्त्य नाड़ी होती है।

नाड़ी का फल

यदि आदि और अन्त्य नाड़ी के नक्षत्र वर और कन्या के हों तो विवाह अशुभ होता है। मध्य नाड़ी के नक्षत्र होने पर दोनों की मृत्यु होती है।

नाड़ी बोधक चक्र

अ.	आ	पुन.	उ. फा.	ह.	ज्ये.	मू.	श.	पू. भा.	आदि नाड़ी
भ.	मृ.	पु.	पू. फा.	चि.	अ	पू. षा.	ध.	उ. भा.	मध्य नाड़ी
कृ.	रो.	आश्ले.	म.	स्वा.	वि.	उ. षा.	श्र.	रे.	अन्त्य नाड़ी

नाड़ी-गुण बोधक चक्र

वर की नाड़ी

	नाड़ी	आ.	म.	अ.
कन्या की नाड़ी	आ.	०	८	८
	म.	८	०	८
	अ.	८	८	०

उदाहरण—इन्दुमती का कृत्तिका नक्षत्र होने से अन्त्य नाड़ी हुई और चन्द्रवंश का रेवती नक्षत्र होने से अन्त्य हुई। कोष्ठक में दोनों की नाड़ी मिलायी तो शून्य गुण प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अन्यत्र भी मिलान करें। कुमारी इन्दुमती और कुमार चन्द्रवंश के गुण निम्न प्रकार सिद्ध हुए।

वर्ण-गण-योनि आदि बोधक शतपदचक्र

नक्षत्राणि	अ.	भ	कृ.	रो.	मृ.	आ	पु.	पु.	आश्ले.	म.	पू फा.	उ.फा.	ह.	चि	स्वा	वि	अ.	ज्ये	मू.	पू.षा.	उ.षा	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.
अक्ष.	चू.चे चो.ला.	ली.लू ले.लो	अ.ड उ.ए.	ओ.वा वी.वू.	वे.वो वा.वी.	कु.घ ङ.छ.	के.को हा.ही	हु.हे हो.डा.	डी.डू डे.डो.	म.मी. मू.मे.	मो.टा.टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो रा.री.	रु.रे. रो.ता.	ती.तू ते.तो.	न.नी. नू.ने.	नो.या. वि.वू.	वे.वो. भ.भी.	भू.ध फ.ढ.	भे.भो ज.जी.	खी.खू खे.खो.	ग.गी. गु.गे.	गो.स. सी.सू.	से.सो. द.दी.	दू.थ झ.ञ.	दे.दो. च.ची.
रा	मे.	मे	मे.१ मू.३	वृ	वृ.२ मि.३	मि.	मि.३ क.१	क.	क.	सि.	सि.	सि.१ क.३	क.	क.२ तु.२	तु.	तु.३ वृ.१	वृ.	वृ.	ध	ध	ध.१ म.३	म.	म.२ कुं.२	कुं.	कुं.३ मी.१	मी.	मी.
वर्ण	क्ष	क्ष.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.
वश्य.	च.	च.	च.	च.	च.२ न.२	न	न.३ ज.१	ज.	ज.	व.	व.	व.१ न.३	न.	न.	न.	न.३ की.१	की.	की.	न.	॥न. ३॥च.	च.	१॥च. २॥ज.	ज.२ न.२	न.	न.३ ज.१	ज.	ज.
योनी.	अश्व	गज.	छाग	सर्प	सर्प.	श्वान	मार्जार	छाग	मार्जार.	मूषक.	मूषक.	गौ.	महिष.	व्याघ्र.	महिष.	व्याघ्र.	मृग.	मृग.	श्वान.	मर्कट.	नकुल.	मर्कट	सिंह	अश्व.	सिंह.	गौ	गज.
राशीश.	मं.	मं.	मं.१ शु.३	शु.	शु.२ बु.२	बु	बु.३ चं.१	चं	चं.	सू.	सू.	सू.१ बु.३	बु.	बु.२ शु.२	शु.	शु.३ मं.१	मं.	मं.	बु.	बु.	बु.१ श.२	उ.	श.	श.	श.३ बु.१	बु.	बु.
गण.	दे.	म.	रा.	म.	दे.	म.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.	रा.	दे.	रा.	दे.	रा.	रा.	म	म.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.
नाडी.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.

गणना गुण बोधक चक्र

न.	अ.	भ	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ.	पु. ३	पु. १	पु.	श्ले.	म	पू.फा.	उ.फा. १	उ.फा. ३	ह.	चि. २	चि. २	स्वा.	वि. ३	वि. १	अ.	ज्ये.	मू.	पू.षा. ॥	पू.षा. ३॥	उ.षा. १	उ.षा. ३	ध. १॥	ध. २॥	श. २	श. २	श.	पू.भा. ३	पू.भा. १	उ.भा.	रे.
अ.	२८	३३	२८॥	२८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१८	२२॥	११॥	२७	२०॥	२६	१७॥	११	९	१३	२२॥	२६॥	२३॥	१९॥	२६॥	१५	१३	२६	२७	२४॥	२६	२६	२७	२१	२१	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भ.	३४	२८	२९	१९	२३॥	१३॥	१७	२६	२६	३०॥	२३॥	२४॥	२१	१९	२८	२२॥	१९	६	२४॥	२९॥	२३॥	१९॥	१७॥	१९॥	२०	१९	२०	२७	२८॥	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१६॥	२८
कृ. १	२७॥	२७॥	२८	१६॥	९	१५॥	१९	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१७॥	२१	२२	१५॥	२५॥	१८॥	२७॥	२५॥	९॥	१९॥	२०॥	२६॥	२४॥	१८	१९	१४	१५॥	११॥	१०॥	२५	२५	२७	१९॥	१७॥	१९॥	१३॥
कृ. ३	१८॥	१८॥	१९	२८	१९	२५॥	१६॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१९॥	२३	२४	२१	२२	२३॥	२२॥	१०॥	२४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२०	१२॥	२३॥	९॥	१४	११	१०	२२॥	२१॥	३१	२३॥	२०	२२	१४
रो	२३॥	२३॥	१०	१९	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२६	१३	१२॥	२६॥	२८	२५	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१९	२०	११॥	१७	१९	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१९
मृ. २	२३॥	१३॥	१८॥	२६॥	३४	२८	२०	२५	२३॥	२६	१९	२२	२२॥	१७॥	२५॥	२३॥	२७	१३	१०	२५	९॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	१२	११	१८	२१	२४॥	२४॥	१३	१९	२७	२९॥	२६॥	१०	२७
मृ. २	२७	१८	२१	१८॥	२५॥	२०	२८	३३	३१॥	१९॥	११	१५॥	२४	२०॥	२८॥	२०॥	३६	२१	१४	२७	९॥	१४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२७॥	१७	२७
आ.	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥	२३॥	२९॥	२२॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	१०	१३॥	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२॥	२२॥	२२॥	१७	२०	१२	१६	१६	२७	२७
पु. ३	१९	२६	२२	१९॥	२३॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१६	२३	१६॥	२२॥	२७॥	२१॥	२३॥	२४॥	२५॥	१८॥	२७	२१	१३॥	२०॥	५	१३	२७	२६	२७	२७॥	२२॥	२३॥	१७॥	१८॥	२१	१७	१९॥	२७॥	२८
पु. १	२१॥	२८	२३॥	२०	२४	२५	१९	२०॥	२४॥	२८	३५	२८॥	१५॥	२०	१४॥	१७	१८	२०॥	२०	२७	२०	१९	२६	१०॥	८	२१	२०॥	२१॥	२८॥	२५	२७	२१	१२॥	७	११	१७	२५	२५॥
पु.	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	१७	१०	१८	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	११॥	२२॥	२६	२४	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
आश्ले	२५	२३॥	२३॥	१९	१२	२१	१३	२२	१५	२८॥	२८॥	२८	१५	१५॥	१७॥	२०॥	२२॥	२६	२५॥	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६	२२॥	२६	१६॥	८॥	२२	१३	१३	२७	८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
म.	२१	२१	१७॥	१८॥	१२॥	१२॥	२२॥	२२॥	२१॥	१६॥	१८॥	२६	२८	३०	२६॥	१६॥	१६॥	२२॥	२५॥	११॥	१७॥	२४॥	२६॥	३४	२४	२०	२१	११॥	५॥	५॥	४॥	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१७॥	१८॥	१२
पू. फा.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१७॥	२०॥	२८॥	२७॥	२४॥	१९॥	१६॥	३०	२८	३४	२४	२२॥	८॥	११॥	२४॥	१९॥	२६॥	२४॥	२४॥	१९	१८	१९	२७	२१	१९॥	१८॥	४॥	११॥	१९॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ. फा. १	१६॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८॥	२१॥	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१८	१६॥	१७॥	१७॥	२६॥	१७॥	२४॥	२०॥	१९॥	१०॥	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११॥	१८॥	१२॥	१३॥	१९॥	२६॥	२४॥
उ. फा. ३	१३	२१॥	१६॥	२२	२५	२३॥	३०॥	२२॥	२३॥	२९॥	२८॥	२१॥	२७॥	२५	१९	२८	२५॥	२४॥	१४॥	२५॥	१६॥	१८	२७	१३	१५॥	२९॥	२८॥	२९॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८	२९	२७
ह	१०	२०	१६॥	२१	२६	२६	३३	२३॥	२३॥	१९॥	२८॥	२३॥	१७॥	२२॥	१७	२६	२८	२७	१९	२६॥	१७॥	१९॥	२६	२२	१४	२७	२६	२७॥	२३	२४	२४	१९	१९	८॥	१४॥	१९	२७	२७
चि. २	२३	६	१०	२५॥	२०	१२	१९	२६	२४॥	२०॥	१२॥	२६॥	२३॥	९॥	१५॥	२४॥	२७	२८	२०	१९	२६॥	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७॥	१९	१९	१८	१८	२४	१८॥	२२	११	२१
चि. २	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	२०	१२	२६	२५॥	१०	१७॥	१७॥	२०	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	७॥	२१॥	२८	२४	१३	२१	२५॥	२७	२७	२६	२०	२६	२०॥	१५	४	१३
स्वा.	२७॥	२९॥	१७॥	१२॥	२६॥	३०	२७	२६	२६॥	२८	२८	१५॥	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	२३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३॥	१७	२१	२०	२५	२०॥	२०	१३
वि. ३	२२॥	२२॥	२०॥	२५॥	१०॥	१८॥	१९॥	२१	२१	२२॥	२१॥	१९	१७॥	१९॥	१८॥	१७॥	१८॥	२७॥	२४॥	१८	२८	१८	१७	२१॥	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७॥	१७॥	१३॥	२६॥	२६	२२	१६॥	१३॥	९
वि. १	१६॥	१६॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	१३	१४॥	१४॥	१९	१८	१५॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१९	२८	२३॥	८	१७	२८	२७	११॥	२३॥	१७॥	१६॥	९॥	१२	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१८	९॥
अनु.	२४॥	१४॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२१॥	२६॥	१८	२१	२४॥	२०॥	२१॥	२६	२७	१२	७॥	२२॥	१७	२८	२८	३१	२६॥	१४॥	१४॥	२३	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२०॥	२४	१८	२७
ज्ये	१२	१८॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	१३	३	६	१०॥	२०	२६	३१	२३॥	१६॥	१३	१२	२५॥	२०॥	१७॥	२०॥	३१॥	३०	२८	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२१	२९	१८	११	१०॥	२१	२१
मू.	१२	२०	२४॥	१९	१३	१४	२१	१५	१२	८॥	१७॥	२४	२५	१९	९॥	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२१॥	२५	२१॥	११	१७॥	२५॥	२७
पू.षा. ॥	२१	१९	१८	१२॥	१९	११	१९	२७	२७	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२७	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१८॥	१८॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३॥	८॥	१६॥	२३॥	२१॥	२२॥	२३॥	१२॥
पू.षा. ३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२७	२७	२६	११	११	२६	१९	१८॥	१८॥	१९॥	२७	२७	२८	३४	२४	२४	२३॥	८॥	१५॥	२२॥	२१॥	२२॥	२३॥	१२॥
उ.षा. १	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	२४	२५	२६	२३॥	२४॥	९॥	११॥	२७	२८	२८॥	२७॥	२०	२०	१९	१२	१२॥	२५॥	१९॥	२५॥	३३	३४	२८	१८	१९	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	२१॥	१३॥	१३॥
उ.षा. ३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२२॥	२०॥	२२॥	२२॥	२७	२८॥	१२	६॥	२२	२१	२६	२५	१७॥	२४॥	२१॥	१६॥	१४	२८	२२	१६॥	२६	२५	१९	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	२०॥	१२॥	१२॥
ध. १॥	२८	२७	१४॥	१२	१८	२४॥	२४	२२॥	२६॥	२७	२५	१५	१७॥	१९॥	२०	२४	२५	१९	२६	२३॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४॥	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८॥	२३॥	२१॥	२०॥	२२॥
ध. २॥	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	२३॥	२१	२३॥	२८	२६	१५	६॥	१८॥	२०॥	२३॥	२४॥	१८॥	२५॥	२३	१५	१४	२८	२३	१६	२५	२५॥	१५	२४	२७	२८	३०	२०॥	१८	२३	३३॥	२३॥	२४॥
श. २	२०॥	१०॥	२६	२३॥	२०	१२	८॥	१७॥	१७॥	२२	१३	२८	१८॥	५॥	१२॥	१६	२७॥	२६॥	२४॥	२६	१०	२८	१४	२८	२१	९	९॥	१६॥	२५॥	२८	२१	२८	१८॥	२३॥	२१	२६॥	१५॥	२२॥
श. २	२०	११	२६	३०॥	२७॥	१९	१०	२०	१९	१४	५	२०	२५॥	११॥	१९॥	१७॥	२१	१८	१९	२२	१७॥	२८	१२	२६	२९॥	१७॥	१६॥	१३॥	१८॥	२१	२१	२०	२८	३३	२८॥	१८॥	७॥	१४॥
श.	१५	११	२८	३२॥	२५॥	२५	१८	१०	१०	७॥	१५	२०	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	८॥	२६	२६	१९	[illegible]	२६॥	२१	१९	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	२८॥	२५	११	२८	१९	९	१७॥	१६॥
पू. भा. ३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१७	१३॥	२०॥	१४	१९॥	२५॥	१७॥	१५॥	१७॥	१८॥	१९॥	२८	[illegible]	१३॥	७॥	१२	१९॥	३१॥	२०॥	२९॥	२४॥	२५॥	२५॥	२०॥	२७॥	१९	२८	१८	३३	२०॥
पू. भा. १	१४॥	२२॥	१६॥	१९	२६	२६	२५॥	१८	१८	१८	२५	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१९॥	२२॥	१९॥	[illegible]	२१	२७	२२॥	१५	३१	२२॥	२०॥	२८॥	२४॥	३०॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
उ. भा.	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१९॥	२५॥	२७	२६	१९	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२०॥	२६	९॥	५	१९॥	[illegible]	१९	२०	२२	२४	२२	२२॥	३१॥	२९॥	२८॥	२९॥	२४॥	६	१६	२२॥	३३	२८	३४
रे.	२५	२४॥	११॥	१४	१७	२६	२५॥	२४	२५॥	२४॥	२७	१३	१३	२२	२२	२४॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	[illegible]	१२॥	२७	२२	२७	३०॥	३०	२१	१९	२०	२२॥	२२॥	१४	१६	१८	२०॥	३३	२८

वर	गुण	कन्या
ब्राह्मण वर्ण	१	क्षत्रिय वर्ण
जलचर वश्य	२	चतुष्पद वश्य
चतुर्थी तारा	१॥	सातवीं तारा
गजयोनि	२	सर्पयोनि
राशीश बृहस्पति	॥	राशीश शुक्र
देवगण	०	राक्षसगण
मीनराशि (भकूट)	७	वृषराशि (भकूट)
अन्त्य नाड़ी	०	अन्त्य नाड़ी

इस प्रकार कुल १४ गुण प्राप्त हुए। किन्तु कम से कम १८ गुण होना परमावश्यक था। अतः गुणों की दृष्टि से कुण्डली नहीं मिली।

मुहूर्त विचार

प्राचीन काल से ही प्रत्येक मांगलिक कार्य के लिए शुभ समय का विचार किया जाता रहा है। क्योंकि समय का प्रभाव जड़ और चेतन सभी प्रकार के पदार्थों पर पड़ता है, इसीलिए हमारे आचार्यों ने गर्भाधानादि अन्यान्य संस्कार एवं प्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, यात्रा आदि सभी मांगलिक कार्यों के लिए मुहूर्त का आश्रय लेना आवश्यक बतलाया है। अतएव नीचे प्रमुख आवश्यक मुहूर्त दिये जाते हैं।

सूतिका स्नान मुहूर्त

रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, मृगशिर, हस्त, स्वाति, अश्विनी और अनुराधा इन नक्षत्रों में; रवि, मंगल और बृहस्पति इन वारों में प्रसूता स्त्री को स्नान कराना शुभ है। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, विशाखा, कृत्तिका, मूल और चित्रा इन नक्षत्रों में, बुध और शनि इन वारों में एवं अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी, चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी इन तिथियों में प्रसूता स्त्री को स्नान कराना वर्जित है।

विशेष—प्रत्येक शुभ कार्य में व्यतीपात योग, भद्रा, वैधृति नामक योग, क्षयतिथि, वृद्धितिथि, क्षयमास, अधिकमास, कुलिक, अर्द्धयाम, महापात, विष्कम्भ और वज्र के आदि की तीन-तीन घटियाँ, परिघ योग का पूर्वार्द्ध, शूलयोग की पाँच घटियाँ, गण्ड और अतिगण्ड की छह-छह घटियाँ एवं व्याघात योग की नौ घटियाँ त्याज्य हैं।

स्तन-पान मुहूर्त

अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद और रेवती इन नक्षत्रों; सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन वारों में तथा शुभ लग्नों में स्तनपान कराना चाहिए।

जातकर्म और नामकर्म मुहूर्त

यदि किसी कारणवश जन्म-काल में जातकर्म नहीं किया गया हो तो अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पौर्णमासी, सूर्यसंक्रान्ति तथा चतुर्थी और नवमी छोड़ अन्य तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन वारों में; जन्मकाल से ग्यारहवें या बारहवें दिन में; मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा इन नक्षत्रों में जातकर्म और नामकर्म करना शुभ है। जैन मान्यता के अनुसार नामकर्म जन्मदिन से ४५ दिन तक किया जा सकता है।

दोलारोहण मुहूर्त

रेवती, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी इन नक्षत्रों में तथा सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन वारों में पहले-पहल बालक को पालने में झुलाना शुभ है।

भूम्युपवेशन मुहूर्त

रोहिणी, मृगशिर, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा और उत्तराभाद्रपद इन नक्षत्रों में; चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी को छोड़ शेष तिथियों में एवं सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन वारों में बालक को भूमि पर बैठाना शुभ है।

बालक को बाहर निकालने का मुहूर्त

अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती इन नक्षत्रों में; द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी और त्रयोदशी इन तिथियों में एवं सोम, बुध, शुक्र और रवि इन वारों में बालक को पहले-पहल घर से बाहर निकालना शुभ है।

अन्नप्राशन मुहूर्त

चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी, अष्टमी, अमावस्या और द्वादशी तिथि को छोड़ अन्य तिथियों में; जन्मराशि अथवा जन्मलग्न से आठवीं राशि, आठवाँ नवांश, मीन, मेष और वृश्चिक को छोड़ अन्य लग्नों में; तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्र में; छठे मास से लेकर सम मास में अर्थात् छठे, आठवें, दशवें इत्यादि मासों में बालकों का और पाँचवें मास से लेकर विषम मासों में अर्थात् पाँचवें, सातवें, नवें इत्यादि मासों में कन्याओं का अन्नप्राशन शुभ होता है। परन्तु अन्नप्राशन शुक्लपक्ष में दोपहर के पूर्व करना चाहिए।

अन्नप्राशन के लिए लग्न शुद्धि

लग्न से पहले, चौथे, सातवें और तीसरे स्थान में शुभग्रह हों; दसवें स्थान में कोई ग्रह न हो; तृतीय, षष्ठ और एकादश स्थान में पापग्रह हों और लग्न, आठवें तथा छठे स्थान को छोड़ अन्य स्थानों में चन्द्रमा स्थित हो ऐसे लग्न में अन्नप्राशन शुभ होता है।

अन्नप्राशन मुहूर्त चक्र

नक्षत्र	रो. उ. भा. उ. षा. उ. फा. रे. चि. अनु. ह. पु. अश्वि. अभि. पुन. स्वा. श्र. ध. श.
वार	सो. बु. बृ. शु.
तिथि	२।३।५।७।१०।१३।१५
लग्न	२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११
लग्नशुद्धि	शुभग्रह १।४।७।९।५।३ में; पापग्रह ३।६।११ इन स्थानों में

कर्णवेध मुहूर्त

चैत्र, पौष, आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक, जन्ममास, रिक्तातिथि (४।९।१४), सम वर्ष और जन्मतारा को छोड़कर जन्म से छठे, सातवें, आठवें महीने में अथवा बारहवें या सोलहवें दिन, बुध, गुरु, शुक्र, सोमवार में और श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी और पुष्य नक्षत्र में बालक का कर्णवेध शुभ होता है।

कर्णवेध मुहूर्त चक्र

नक्षत्र	श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुन. अभि.
वार	सो. बु. बृ. शु.
तिथि	१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५
लग्न	२।३।४।६।७।९।१२
लग्नशुद्धि	शुभग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ इन स्थानों में, पापग्रह ३।६।११ इन स्थानों में शुभ होते हैं। अष्टम में कोई ग्रह न हो। यदि गुरु लग्न में हो तो विशेष उत्तम होता है।

चूड़ाकर्म (मुण्डन) का मुहूर्त

जन्म से तीसरे, पाँचवें, सातवें इत्यादि विषम वर्षों में; अष्टमी, द्वादशी, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, प्रतिपदा, षष्ठी, अमावस्या, पूर्णमासी और सूर्य-संक्रान्ति को छोड़ अन्य तिथियों में; चैत्र महीने को छोड़ उत्तरायण में; बुध, चन्द्र, शुक्र और बृहस्पति वारों में; शुभग्रहों के लग्न अथवा नवांश में; जिसका मुण्डन कराना हो उसके जन्मलग्न अथवा जन्मराशि से आठवीं राशि को छोड़कर अन्य लग्न व राशि में, लग्न से आठवें स्थान में शुक्र को छोड़ अन्य ग्रहों के न रहते; ज्येष्ठा, मृगशिर, रेवती, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी और पुष्य नक्षत्र में; लग्न से तृतीय, एकादश और षष्ठ स्थान में पापग्रहों के रहते मुण्डन कराना शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त चक्र

नक्षत्र	ज्ये. मृ. रे. चि. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श.
वार	सो. बु. बृ. शु.
तिथि	२।३।५।७।१०।११।१३
लग्न	२।३।४।६।९।१२
लग्नशुद्धि	शुभग्रह १।२।४।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ होते हैं। पापग्रह ३।६।११ में शुभ हैं। अष्टम में कोई ग्रह न हो।

अक्षरारम्भ मुहूर्त

जन्म से पाँचवें वर्ष में; एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया, षष्ठी, पंचमी और तृतीया तिथि में; उत्तरायण में; हस्त, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, स्वाति, रेवती, पुनर्वसु आर्द्रा, चित्रा और अनुराधा नक्षत्र में; मेष, मकर, तुला और कर्क को छोड़ अन्य लग्न में बालक को अक्षरारम्भ कराना शुभ है।

अक्षरारम्भ मुहूर्त चक्र

नक्षत्र	ह. अश्वि. पु. श्र. स्वा. रे. पुन. चि. अनु.
वार	सो. बु. शु. श.
तिथि	२।३।५।६।१०।११।१२
लग्न	२।३।६।१२ इन लग्नों में परन्तु अष्टम में कोई ग्रह न हो।

विद्यारम्भ का मुहूर्त

मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, मूल, तीनों पूर्वा (पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी), पुष्य, आश्लेषा इन नक्षत्रों में; रवि, गुरु, शुक्र इन वारों में; षष्ठी, पंचमी, तृतीया, एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया इन तिथियों में और लग्न से नवें, पाँचवें, पहले, चौथे, सातवें, दसवें स्थान में शुभग्रहों के रहने पर विद्यारम्भ करना शुभ है। किसी-किसी आचार्य के मत से तीनों उत्तरा, रेवती और अनुराधा में भी विद्यारम्भ करना शुभ कहा गया है।

वाग्दान मुहूर्त

उत्तराषाढ़ा, स्वाति, श्रवण, तीनों पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिका, रोहिणी, रेवती, मूल, मृगशिरा, मघा, हस्त, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों में वाग्दान करना शुभ है।

विवाह मुहूर्त

मूल, अनुराधा, मृगशिर, रेवती, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, स्वाति, मघा, रोहिणी इन नक्षत्रों में और ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख, मार्गशीर्ष, आषाढ़ इन महीनों में विवाह करना शुभ है।

विवाह में कन्या के लिए गुरुबल, वर के लिए सूर्यबल और दोनों के लिए चन्द्रबल का विचार करना चाहिए।

प्रत्येक पंचांग में विवाह के मुहूर्त लिखे रहते हैं। इनमें शुभ-सूचक खड़ी रेखाएँ और अशुभ-सूचक टेढ़ी रेखाएँ होती हैं। ज्योतिष में दस दोष बताये गये हैं, जिस विवाह के मुहूर्त में जितने दोष नहीं होते हैं, उतनी ही खड़ी रेखाएँ होती हैं और दोषसूचक टेढ़ी रेखाएँ मानी जाती हैं। सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त दस रेखाओं का होता है, मध्यम सात-आठ रेखाओं का और जघन्य पाँच रेखाओं का होता है। इससे कम रेखाओं के मुहूर्त को निन्द्य कहते हैं।

गुरुबल विचार

बृहस्पति कन्या की राशि से नवम, पंचम, एकादश, द्वितीय और सप्तम राशि में शुभ; दशम, तृतीय, षष्ठ और प्रथम राशि में दान देने से शुभ और चतुर्थ, अष्टम, द्वादश राशि में अशुभ होता है।

सूर्यबल विचार

सूर्य वर की राशि से तृतीय, षष्ठ, दशम, एकादश राशि में शुभ; प्रथम, द्वितीय, पंचम, सप्तम, नवम राशि में दान देने से शुभ और चतुर्थ, अष्टम, द्वादश राशि में अशुभ होता है।

चन्द्रबल विचार

चन्द्रमा वर और कन्या की राशि से तीसरा, छठा, सातवाँ, दसवाँ, ग्यारहवाँ शुभ; पहला, दूसरा, पाँचवाँ, नौवाँ दान देने से शुभ और चौथा, आठवाँ, बारहवाँ अशुभ होता है।

विवाह में अन्धादि लग्न

दिन में तुला और वृश्चिक; रात्रि में तुला और मकर बधिर हैं। तथा दिन में सिंह, मेष, वृष और रात्रि में कन्या, मिथुन, कर्क अन्ध संज्ञक हैं। दिन में कुम्भ और रात्रि में मीन दो लग्न पंगु होते हैं। किसी-किसी आचार्य के मत से धनु, तुला, वृश्चिक ये अपराह्ण में बधिर हैं; मिथुन, कर्क, कन्या ये लग्न रात्रि में अन्धे हैं; सिंह, मेष, वृष ये लग्न दिन में अन्धे हैं और मकर, कुम्भ, मीन ये लग्न प्रातःकाल तथा सायंकाल में कुबड़े होते हैं।

अन्धादि लग्नों का फल

यदि विवाह बधिर लग्न में हो तो वर-कन्या दरिद्र; दिवान्ध लग्न में हो तो कन्या विधवा; रात्र्यन्ध लग्न में हो तो सन्तति मरण और पंगु में हो तो धन-नाश होता है।

विवाह के शुभ लग्न

तुला, मिथुन, कन्या, वृष एवं धनु लग्न शुभ हैं, अन्य लग्न मध्यम हैं।

लग्न शुद्धि

लग्न से बारहवें शनि, दसवें मंगल, तीसरे शुक्र, लग्न में चन्द्रमा और क्रूर ग्रह अच्छे नहीं होते। लग्नेश, शुक्र, चन्द्रमा छठे और आठवें में शुभ नहीं होते। लग्नेश और सौम्य ग्रह आठवें में अच्छे नहीं होते हैं और सातवें में कोई भी ग्रह शुभ नहीं होता है।

ग्रहों का बल

प्रथम, चौथे, पाँचवें, नवें और दसवें स्थान में स्थित बृहस्पति सब दोषों को नष्ट करता है। सूर्य ग्यारहवें स्थान में स्थित तथा चन्द्रमा वर्गोत्तम लग्न में स्थित नवांश दोषों को नष्ट करता है। बुध लग्न, चौथे, पाँचवें, नवें और दसवें स्थान में हो तो सौ दोषों को दूर करता है। यदि शुक्र इन्हीं स्थानों में हो तो दो सौ दोषों को दूर करता है। यदि इन्हीं स्थानों में बृहस्पति स्थित हो तो एक लाख दोषों को दूर करता है। लग्न का स्वामी अथवा नवांश का स्वामी यदि लग्न, चौथे, दसवें, ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तो अनेक दोषों को शीघ्र भस्म कर देता है।

वधूप्रवेश मुहूर्त

विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर नव, सात, पाँच दिन में वधूप्रवेश शुभ है। यदि किसी कारण से १६ दिन के भीतर वधूप्रवेश न हो तो विषम मास, विषम दिन और विषम वर्ष में वधूप्रवेश करना चाहिए।

तीनों उत्तरा (उत्तराभाद्रपद, उत्तरफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा), रोहिणी, अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशिर, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा और स्वाति नक्षत्र में; रिक्ता (४।९।१४) को छोड़ शुभ तिथियों में और रवि, मंगल, बुध छोड़ शेष वारों में वधूप्रवेश करना शुभ है।

द्विरागमन मुहूर्त

विषम (१।३।५।७) वर्षों में; कुम्भ, वृश्चिक, मेष राशियों के सूर्य में; गुरु, शुक्र, चन्द्र इन वारों में; मिथुन, मीन, कन्या, तुला, वृष इन लग्नों में और अश्विनी, पुष्य, हस्त, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाति, मूल, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा इन नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ है। द्विरागमन में सम्मुख शुक्र त्याज्य है। रेवती नक्षत्र के आदि से मृगशिरा के अन्त तक चन्द्रमा के रहने से शुक्र अन्ध माना जाता है। इन दिनों में द्विरागमन होने से दोष नहीं होता। शुक्र का दक्षिण भाग में रहना भी अशुभ है।

द्विरागमन मुहूर्त चक्र

समय	१।३।५।७।९ विवाह के बाद इन वर्षों में कुं. वृ. मे. के सूर्य में
नक्षत्र	अश्वि. पु. ह. उ. षा. उ. भा. उ. फा. रो. श्र. ध. श. पुन. स्वा. मू. मृ. रे. चि. अनु.
वार और तिथि	बु. बृ. शु. सो.—१।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ इन तिथियों में
लग्न और उनकी शुद्धि	२।३।६।७।१२ इन लग्नों में; लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ इन स्थानों में, शुभग्रह और ३।६।११ में पापग्रह शुभ होते हैं।

यात्रा मुहूर्त

अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण और धनिष्ठा ये नक्षत्र यात्रा के लिए उत्तम; रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद,

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, ज्येष्ठा, मूल और शतभिषा ये नक्षत्र मध्यम एवं भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा ये नक्षत्र निन्द्य हैं। तिथियों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी और त्रयोदशी शुभ बतायी गयी हैं। यात्रा के लिए वारशूल, नक्षत्रशूल, दिक्शूल, चन्द्रवास और राशि से चन्द्रमा का विचार करना आवश्यक है। कहा भी गया है—

"दिशाशूल ले आओ वामें राहु योगिनी पीठ
सम्मुख लेवे चन्द्रमा, लावे लक्ष्मी लूट"

वारशूल और नक्षत्रशूल

ज्येष्ठा नक्षत्र, सोमवार तथा शनिवार को पूर्व; पूर्वाभाद्रपद और गुरुवार को दक्षिण; शुक्रवार और रोहिणी नक्षत्र को पश्चिम और मंगल तथा बुधवार को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दिशा को नहीं जाना चाहिए। यात्रा में चन्द्रमा का विचार अवश्य करना चाहिए। दिशाओं में चन्द्रमा का वास निम्न प्रकार से जाना जाता है।

चन्द्रवास विचार

मेष, सिंह और धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व दिशा में; वृष, कन्या और मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिण दिशा में; तुला, मिथुन और कुम्भ राशि का चन्द्रमा पश्चिम दिशा में; कर्क, वृश्चिक और मीन का चन्द्रमा उत्तर दिशा में वास करता है।

चन्द्र फल

सम्मुख चन्द्रमा धनलाभ करनेवाला, दक्षिण चन्द्रमा सुख-सम्पत्ति देनेवाला, पृष्ठ चन्द्रमा शोक-सन्ताप देनेवाला और वाम चन्द्रमा धनानाश करनेवाला होता है।

यात्रा मुहूर्त चक्र

नक्षत्र	अश्वि. पुन. अनु. मृ. पु. रे. ह. श्र. ध. ये उत्तम हैं। रो. उ. षा. उ. भा. उ. फा. पू. षा. पू. भा. पू. फा. ज्ये. मू. श. ये मध्यम हैं। भ. कृ. आ. आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ये निन्द्य हैं।
तिथि	२।३।५।७।१०।११।१३

चन्द्रवासचक्र

पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर
मेष	मिथुन	वृष	कर्क
सिंह	तुला	कन्या	वृश्चिक
धनु	कुम्भ	मकर	मीन

समयशूलचक्र

पूर्व	प्रातःकाल
पश्चिम	सायंकाल
दक्षिण	मध्याह्नकाल
उत्तर	अर्धरात्रि

दिक्शूल चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
चं.श.	गु.	सू. शु.	मं. बु.

योगिनी चक्र

पूर्व	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	दिशा
९।१	३।११	१३।५	१२।४	१४।६	१५।७	१०।२	३०।८	तिथि

गृहारम्भमुहूर्त

मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, हस्त, स्वाति, रोहिणी, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद इन नक्षत्रों में; चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि इन वारों में और द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी इन तिथियों में गृहारम्भ श्रेष्ठ होता है।

नींव खोदने के लिए दिशा का विचार

देवालय, जलाशय और घर बनाते समय नींव खोदने के लिए दिशा का विचार करना आवश्यक होता है। देवालय की नींव खुदवाने के समय मीन, मेष और वृष का, सूर्य हो तो राहु का मुख ईशानकोण में; मिथुन, कर्क और सिंह में सूर्य हो तो राहु का मुख वायव्यकोण में; कन्या, तुला और वृश्चिक में सूर्य हो तो नैर्ऋत्यकोण में एवं धनु, मकर और कुम्भ में सूर्य हो तो अग्निकोण में राहु का मुख रहता है। गृह बनवाना हो तो सिंह, कन्या और तुला के सूर्य में राहु का मुख ईशानकोण में; वृश्चिक, धनु और मकर के सूर्य में; राहु का मुख वायव्यकोण में; कुम्भ, मीन और मेष राशि के सूर्य में राहु का मुख नैर्ऋत्यकोण में एवं वृष, मिथुन और कर्क राशि के सूर्य में राहु का मुख आग्नेयकोण में रहता है। जलाशय—कुआँ, तालाब खुदवाने के समय मकर, कुम्भ और मीन राशि के सूर्य में राहु का मुख ईशानकोण में; मेष, वृष और मिथुन के सूर्य

में राहु का मुख वायव्यकोण में; कर्क, सिंह और कन्या के सूर्य में राहु का मुख नैर्ऋत्य-कोण में एवं तुला, वृश्चिक और धनु के सूर्य में राहु का मुख आग्नेयकोण में रहता है। नींव या जलाशय आदि खोदते समय मुख भाग को छोड़कर पृष्ठ भाग से खोदना शुभ होता है।

राहुचक्र

राहु	ईशान (पूर्व-उत्तर)	वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	नैर्ऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	आग्नेय (पूर्व-दक्षिण)	शुभ
देवालया-रम्भ	मि. मे. वृ.	मि. क.सिं.	क. तु. वृ.	ध. म. कुं.	सूर्य स्थिति
गृहारम्भ	सिं. क. तु.	वृ. ध. म.	कुं. मी. मे.	वृ. मि. क.	सूर्य स्थिति
जलाशया-रम्भ	म. कुं मी.	मे. वृ. मि.	क. सिं. कन्या	तु. वृ. ध.	सूर्य स्थिति
राहु	आग्नेय (पूर्व और दक्षिण का मध्य)	ईशान (पूर्व और उत्तर का मध्य)	वायव्य (उत्तर और पश्चिम का मध्य)	नैर्ऋत्य (दक्षिण और पश्चिम का मध्य)	पृष्ठ

गृहारम्भ में वृषवास्तु चक्र

गृह निर्माण करते समय शुभाशुभत्व अवगत करने के लिए बैल के आकार का चक्र बनाना चाहिए। सूर्य के नक्षत्र से तीन नक्षत्र उस चक्र के सिर में स्थापित करे। यदि उन तीन नक्षत्रों में घर का आरम्भ किया जाये तो घर में आग लगती है। उनसे आगे के चार नक्षत्र उस चक्र के अगले पैरों पर स्थापित करे। इन नक्षत्रों में घर का आरम्भ होने पर घर में शून्यता रहती है। उनसे आगे के चार नक्षत्र पिछले पैरों पर स्थापित करे। इन नक्षत्रों में गृहारम्भ होने से घर बहुत दिनों तक स्थिर रहता है। उनसे आगे के तीन नक्षत्र पीठ पर स्थापित करे। इन नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इससे आगे के चार नक्षत्र दक्षिण कुक्षि में स्थापित करे। इन नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से लाभ होता है। अनन्तर तीन नक्षत्र पुच्छ में स्थापित करे।

१. देवालये गेहविधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशो विलोमतः।
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे खाते मुखात्पृष्ठविदिक् शुभा भवेत्॥
—मुहूर्तचिन्तामणि, बनारस, सन् १९३९ ई., वास्तुप्रकरण, श्लोक १९

इन नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से स्वामी का नाश होता है। पश्चात् चार नक्षत्र वाम कुक्षि में स्थापित करे। इन नक्षत्रों में गृह बनाने से दरिद्रता रहती है। आगे के तीन नक्षत्र मुख में स्थापित करे। इन नक्षत्रों में घर बनवाने से सर्वदा रोग, पीड़ा और भय व्याप्त रहता है।

वृषवास्तु चक्र

सिर	अग्रपाद	पृष्ठपाद	पृष्ठ	दक्षिण कुक्षि	पुच्छ	वाम कुक्षि	मुख	वृषभ के अंग
३	४	४	३	४	३	४	३	नक्षत्र
दाह	शून्य	स्थिरता	श्री	लाभ	स्वामिनाश	दारिद्र्य	सर्वदा पीड़ा	फल

गृहारम्भ विचार

घर बनाने का आरम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से सात नक्षत्र अशुभ, आगे के ग्यारह नक्षत्र शुभ और इससे आगे के दस नक्षत्र अशुभ माने गये हैं। इस गणना में अभिजित् भी सम्मिलित है।

गृहारम्भ चक्र

७	११	१०	नक्षत्र सूर्य नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	फल

घर के लिए दरवाजे का विचार

कुम्भ राशि के सूर्य के रहते फाल्गुन महीने में; कर्क और सिंह राशि के सूर्य के रहते श्रावण महीने तथा मकर राशि में सूर्य के रहते पौष महीने में घर बनावे तो उस घर का दरवाजा पूर्व या पश्चिम दिशा में शुभ होता है। मेष और वृष राशि में सूर्य के रहते वैशाख महीने में तथा तुला और वृश्चिक राशि में सूर्य के रहते अगहन महीने में घर बनावे तो उसका दरवाजा उत्तर या दक्षिण दिशा में शुभ होता है।

पूर्णमासी से लेकर कृष्णाष्टमी पर्यन्त पूर्व दिशा में, कृष्णपक्ष की नवमी से लेकर चतुर्दशी पर्यन्त उत्तर दिशा में, अमावस्या से लेकर शुक्लाष्टमी पर्यन्त पश्चिम

दिशा में और शुक्लपक्ष की नवमी से शुक्लपक्ष की चतुर्दशी पर्यन्त दक्षिण दिशा में बनाया हुआ घर का द्वार शुभ नहीं होता। द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी और द्वादशी में बनाया हुआ द्वार शुभ होता है। दरवाजे का निर्माण शुक्लपक्ष में करने से शुभफल और कृष्णपक्ष में करने से अनिष्टफल होता है। कृष्णपक्ष में द्वार का निर्माण करने से चोरी होने की आशंका सर्वदा बनी रहती है।

जिस नक्षत्र में सूर्य स्थित हो उससे चार नक्षत्र सिर—उत्तमांग में स्थापित करे। इन नक्षत्रों में घर का दरवाजा लगाया जाये तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसके पश्चात् आगे के आठ नक्षत्र चारों कोनों में स्थापित करना चाहिए। इन नक्षत्रों में दरवाजा लगाने से घर नष्ट हो जाता है। इसके पश्चात् आगे के आठ नक्षत्र शाखा—बाजुओं में स्थापित करना चाहिए। इन नक्षत्रों में घर का दरवाजा लगाने से सुख, सम्पत्ति और वैभव की प्राप्ति होती है। इसके आगे के तीन नक्षत्र देहली में और उससे आगे के चार नक्षत्र मध्य में स्थापित करने चाहिए। देहलीवाले नक्षत्रों में दरवाजा लगाने से स्वामी का मरण और मध्यवाले नक्षत्रों में दरवाजा लगाने से सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

द्वारचक्र

सिर	कोण	बाजू	देहली	मध्य
४	८	८	३	४
लक्ष्मी	उजाड़	सौख्य	स्वामिमरण	सौख्य-सम्पत्ति

गृहारम्भ में निषिद्धकाल

गृहारम्भकाल में यदि सूर्य निर्बल, अस्त या नीच स्थान में हो तो घर के स्वामी का मरण; यदि चन्द्रमा अस्त या नीच स्थान में हो अथवा निर्बल हो तो उसकी स्त्री का मरण होता है। यदि बृहस्पति निर्बल, अस्त या नीच स्थान में हो तो सुख का नाश; यदि शुक्र निर्बल, अस्त या नीच स्थान में हो तो धन का नाश होता है। गृहारम्भ-काल में चन्द्रमा का नक्षत्र या वास्तु का नक्षत्र घर के आगे पड़ता हो तो उस घर में स्वामी की स्थिति नहीं होती और पीछे पड़ता हो तो उस घर में चोरी होती है। जिस नक्षत्र में चन्द्रमा स्थित हो, वह चन्द्र नक्षत्र कहलाता है।

गृह की आयु

जिस गृह के निर्माण के समय बृहस्पति लग्न में, सूर्य छठे स्थान में, बुध सातवें स्थान में, शुक्र चतुर्थ स्थान में और शनि तीसरे स्थान में स्थित हो उस घर की आयु

सौ वर्ष की होती है। जिस घर के आरम्भ में शुक्र लग्न में, सूर्य तीसरे स्थान में, मंगल छठे स्थान में और बृहस्पति पाँचवें स्थान में स्थित हो तो उसकी आयु दो सौ वर्ष होती है। जिसके आरम्भकाल में शुक्र लग्न में, बुध दशम में, सूर्य एकादश में और बृहस्पति केन्द्र में हो उस घर की आयु एक सौ पचीस वर्ष होती है। उच्चराशि का गुरु केन्द्र में स्थित हो और अन्य ग्रह पूर्ववत् स्थित हों तो तीन सौ वर्ष की आयु होती है। गुरु, शुक्र, चन्द्रमा और बुध उच्चराशि के होकर चतुर्थभाव में शुभग्रहों से दृष्ट हों तो घर की आयु दो सौ वर्ष से अधिक होती है। शुक्र मूलत्रिकोण या उच्चराशि का होकर चतुर्थ भाव में अवस्थित हो तो गृहस्वामी सुखी और सन्तुष्ट रहता है तथा घर सौ वर्षों से अधिक काल तक सुदृढ़ बना रहता है। जिस घर के आरम्भ में बृहस्पति चतुर्थ स्थान में, चन्द्रमा दसवें स्थान में और मंगल-शनि एकादश स्थान में स्थित हों तो उस घर की आयु अस्सी वर्ष की होती है।

जिस गृह के आरम्भ में कोई भी ग्रह शत्रु के नवांश में स्थित होकर लग्न या सप्तम अथवा दशम में स्थित हो तो वह घर एक-दो वर्षों में ही दूसरे के हाथ में बेच दिया जाता है।

पिण्डसाधन तथा आय-व्यय-आयु आदि विचार

गृहपति के हाथ प्रमाण घर की लम्बाई और चौड़ाई को गुणा कर गृहपिण्ड निकाल लेना चाहिए। इस पिण्ड को नौ स्थानों में स्थापित कर क्रमशः १, २, ६, ८, ३, ८, ८, ४ और ८ से गुणा कर गुणनफल में ८,७,९,१२,८,२७,१५,२७ और १२० का भाग देने पर शेष क्रमशः आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि, योग और आयु होते हैं। यदि बहुत ऋण और अल्प द्रव्य हो तो गृह अशुभ होता है। गृह की आयु भी उक्त क्रमानुसार जानी जा सकती है। सुविधा के लिए दैर्घ्य और विस्तार चक्र दिया जाता है।

चक्र का विवरण

इस चक्र द्वारा आय, वार, अंश, धन (द्रव्य), ऋण, नक्षत्र, तिथि, योग और आयु निकालने का उद्देश्य यह है कि विषम आयवाला गृह शुभ और सम आयवाला दुख देनेवाला होता है। सूर्य और मंगल के वार, राशि अंशवाले घर में अग्नि का भय रहता है। अतः ये त्याज्य और अन्य ग्रहों के वार, राशि और अंश ग्रहण करने योग्य हैं। इसी प्रकार अधिक धन और न्यून ऋणवाला घर शुभ तथा न्यून धन (द्रव्य) और अधिक ऋणवाला घर अशुभ होता है। नक्षत्र जानने का प्रयोजन यह है कि मकान के नक्षत्र से गृहारम्भ के दिन नक्षत्र तक तथा स्वामी के नक्षत्र तक जिनकी जितनी संख्या हो, उसमें नौ का भाग देने से यदि १।३।५।७ शेष रहें तो मकान अशुभ और यदि २।४।६।८।० शेष रहें तो मकान शुभ होता है। तिथि

का प्रयोजन शुभाशुभत्व की जानकारी प्राप्त करना है। यदि चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी और अमावास्या इनमें से कोई तिथि आती हो तो गृह अशुभ होता है। शेष तिथियों के आने पर घर को शुभ समझा जाता है। योग के सम्बन्ध में भी यह ध्यान रखना चाहिए कि अतिगण्ड, शूल, विष्कम्भ, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात और वैधृति नितान्त अशुभ हैं। शेष योग प्रायः शुभ हैं। आयु का तात्पर्य स्पष्ट है कि अधिक दिन रहनेवाला मकान शुभ और कम दिन रहनेवाला अशुभ होता है।

स्वामी के नक्षत्र से विचार करने का अभिप्राय यह है कि स्वामी तथा घर का यदि एक ही नक्षत्र हो तो मृत्यु होती है, परन्तु यदि राशि एक न हो तो यह दोष नहीं आता है। यहाँ नाड़ी वेध को दोषकारक नहीं माना गया है।

इस सन्दर्भ में राशि ज्ञात करने की विधि यह है कि अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र की मेष राशि; मघा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी की सिंह राशि तथा मूल, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा की धनु राशि होती है। और शेष नक्षत्रों में उचित क्रम से नौ राशियों की अवस्था अवगत कर लेनी चाहिए।

आय, वार, नक्षत्र, तिथि और योग में क्रमशः ध्वज, धूम, सिंह, श्वान, गाय, गर्दभ, हस्ति और काक; रवि, सोम, भौम, बुध, गुरु, शुक्र और शनि; अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती; प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा-अमावस्या एवं विष्कम्भ, प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान्, परिघ, शिव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐन्द्र और वैधृति अवगत करना चाहिए। पिण्ड द्वारा घर का शुभाशुभत्व पूर्णतया जाना जा सकता है।

गृह-निर्माण के लिए सप्तसकार योग

शनिवार, स्वाती नक्षत्र, सिंहलग्न, शुक्लपक्ष, सप्तमी तिथि, शुभयोग और श्रावण मास में गृह निर्माण करने से हाथी, घोड़ा, धन-सम्पत्ति की प्राप्ति के साथ पुत्र-पौत्र आदि की वृद्धि होती है। उक्त योग सप्तसकार योग कहलाता है। इसमें गृह-निर्माण करने का उत्तम फल बताया गया है। गृह निर्माण प्रायः शुक्लपक्ष में श्रेष्ठ होता है, कृष्णपक्ष में गृह-निर्माण करने से चोरी का भय रहता है। श्रावण, वैशाख और अगहन के महीने गृह-निर्माण के लिए उत्तम माने गये हैं।

गृहनिर्माण की भूमि को शुद्ध कर लेना आवश्यक है। अतः सर्वप्रथम उस भूमि—गृहनिर्माणवाली भूमि से शल्य—हड्डी को निकालकर बाहर कर देना चाहिए। शल्य अवगत करने की विधि ज्योतिष शास्त्र में कई प्रकार से बतलायी गयी है। गृहनिर्माण करनेवाला व्यक्ति जब सामने आये और प्रश्न करे तो उसके प्रश्नाक्षरों की संख्या को दूर कर लेना चाहिए। मात्राओं को चार से गुणा कर पूर्वोक्त गुणनफल में जोड़ देना चाहिए। इस योगफल में नौ का भाग देने से विषम शेष १।३।५।७ रहे तो शल्य—हड्डी भूमि में रहती है और सम शेष २।४।६।८ रहे तो भूमि निःशल्य—अस्थि-रहित होती है। प्रश्नाक्षरों के लिए पुष्प, देव, नदी एवं फल का नाम पूछना चाहिए।

शल्य का अस्तित्व रहने पर यदि प्रश्नाक्षरों में पहला अक्षर व हो तो शल्य पूर्व भाग में होता है। पूर्व भाग में भी नौवाँ भाग समझना चाहिए। इस भूमि में डेढ़ हाथ खोदने से मनुष्य की अस्थि प्राप्त होती है। कवर्ग के अन्तर रहने से अग्निकोण में दो हाथ नीचे गधे की अस्थि निकलती है। चवर्ग के अक्षर रहने पर दक्षिण में कमर-भर भूमि खोदने पर मनुष्य का शल्य रहता है। तवर्ग के प्रश्नाक्षर होने से नैर्ऋत्य कोण में कुत्ता का शल्य डेढ़ हाथ नीचे निकलता है। स्वर वर्ण प्रश्नाक्षर होने पर पश्चिम भाग में डेढ़ हाथ नीचे बच्चे की अस्थि निकलती है। ह प्रश्नाक्षर रहने पर वायव्य कोण में चार हाथ नीचे खोदने पर केश, कपाल, अस्थि, रोम आदि पदार्थ निकलते हैं। श प्रश्नाक्षर होने से उत्तर भाग में एक हाथ नीचे खोदने से ब्राह्मण का शल्य उपलब्ध होता है। पवर्ग के प्रश्नाक्षर होने से ईशान कोण में डेढ़ हाथ नीचे खोदने पर गाय की अस्थियाँ मिलती हैं। य प्रश्नाक्षर होने पर मध्य भाग में छाती-भर जमीन खोदने पर भस्म, लोहा, कपास आदि पदार्थ मिलते हैं। मतान्तर से ह य प वर्ण प्रश्नाक्षर होने से मध्य भाग में शल्य उपलब्ध होता है।

शल्योद्धार के सम्बन्ध में विशेष जानकारी अहिबल चक्र के द्वारा प्राप्त करनी चाहिए। भूमि की श्रेष्ठता अवगत करने के लिए सन्ध्या समय एक हाथ लम्बा, चौड़ा और गहरा गड्ढा खोदकर जल से भर देना चाहिए। प्रातःकाल उस गड्ढे में जल शेष रह जाये तो शुभ, निर्जल चौकोर भूमि दिखाई पड़े तो मध्यम और निर्जल फटा हुआ गड्ढा मिले तो जमीन को अशुभ समझना चाहिए। इस विधि को देश-काल के अनुसार ही प्रयोग में लाना श्रेयस्कर होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त चक्र

नक्षत्र	मृ. पु. अनु. उ. फा. उ. भा. उ. षा. ध. श. चि. ह. स्वा. रो. रे.
वार	चं. बु. बृ. शु. श.
तिथि	२।३।५।७।१०।११।१३।१५
मास	वै. श्रा. मा. पौ. फा.
लग्न	२।३।५।६।८।९।११।१२
लग्न-शुद्धि	शुभग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९। इन स्थानों में एवं पाप-ग्रह ३।६।११ इन स्थानों में शुभ होते हैं। ८।१२ स्थान में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त

उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती इन नक्षत्रों में; चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि इन वारों में और द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी इन तिथियों में गृहप्रवेश करना शुभ है।

नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त चक्र

नक्षत्र	उ. भा. उ. षा. उ. फा. रो. मृ. चि. अनु. रे.
वार	चं. बु. गु. शु.
तिथि	२।३।५।६।७।१०।११।१३।
लग्न	२।५।८।११ उत्तम हैं। ३।६।९।१२ मध्यम हैं।
लग्नशुद्धि	लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ इन स्थानों में शुभग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ इन स्थानों में पापग्रह शुभ होते हैं। ४।८ इन स्थानों में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त

शतभिषा, पुष्य, स्वाति, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, मृगशिर, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी इन नक्षत्रों में; चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि इन वारों में और द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी इन तिथियों में जीर्ण गृहप्रवेश करना शुभ है।

जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त चक्र

नक्षत्र	श. पु. स्वा. ध. चि. अनु. मृ. रे. उ. भा. उ. षा. उ. फा. रो.
वार	चं. बु. बृ. शु. श.
तिथि	२।३।५।७।१०।११।१२।१३
मास	का. मार्ग. श्रा. मा. फा. वै. ज्ये.

शान्तिक और पौष्टिक कार्य का मुहूर्त

अश्विनी, पुष्य, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाति, अनुराधा, मघा इन नक्षत्रों में; रिक्ता (४।९।१४), अष्टमी, पूर्णमासी, अमावस्या इन तिथियों को छोड़ अन्य तिथियों में और रवि, मंगल, शनि इन वारों को छोड़ शेष वारों में शान्तिक और पौष्टिक कार्य करना शुभ है।

शान्तिक और पौष्टिक कार्य के मुहूर्त का चक्र

नक्षत्र	अ. पु. ह. उ. षा. उ. फा. उ. भा. रो. रे. श्र. ध. श. पुन. स्वा. अनु. म.
वार	चं. बु. गु. शु.
तिथि	२।३।५।७।१०।११।१२।१३

कुआँ खुदवाने का मुहूर्त

हस्त, अनुराधा, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, रोहिणी, पुष्य, मृगशिर, पूर्वाषाढ़ा इन नक्षत्रों में; बुध, गुरु, शुक्र इन वारों में और रिक्ता (४।९।१४) छोड़ सभी तिथियों में शुभ होता है।

कुआँ खुदवाने के मुहूर्त का चक्र

नक्षत्र	ह. अनु. रे. उ. फा. उ. षा. उ. भा. ध. श. म. रो. पु. मृ. पू. षा.
वार	बु. गु. शु.
तिथि	२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५

दुकान करने का मुहूर्त

रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, हस्त, पुष्य, चित्रा, रेवती, अनुराधा, मृगशिर, अश्विनी इन नक्षत्रों में तथा शुक्र, बुध, गुरु, सोम इन वारों में और रिक्ता, अमावस्या को छोड़ शेष तिथियों में दुकान करना शुभ है।

दुकान करने के मुहूर्त का चक्र

नक्षत्र	रो. उ. षा. उ. भा. उ. फा. ह. पु. चि. रे. अनु. मृ. अश्वि.
वार	शु. गु. बु. सो.
तिथि	२।३।५।७।१०।१२।१३

बड़े-बड़े व्यापार करने का मुहूर्त

हस्त, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, चित्रा इन नक्षत्रों में; शुक्र, बुध, गुरु इन वारों में और द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, एकादशी, त्रयोदशी इन तिथियों में बड़े-बड़े व्यापार-सम्बन्धी कारोबार करना शुभ है।

बड़े-बड़े व्यापारिक कार्य प्रारम्भ करने के मुहूर्त का चक्र

नक्षत्र	ह. पु. उफा. उभा. उषा. चि.
वार	बु. गु. शु.
तिथि	२।३।५।७।११।१३

राजा से मिलने का मुहूर्त

श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, स्वाति इन नक्षत्रों में और रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र इन वारों में राजा से मिलना शुभ है।

वैधर्म्य-विस्तार-आय आदि बोधक चक्र

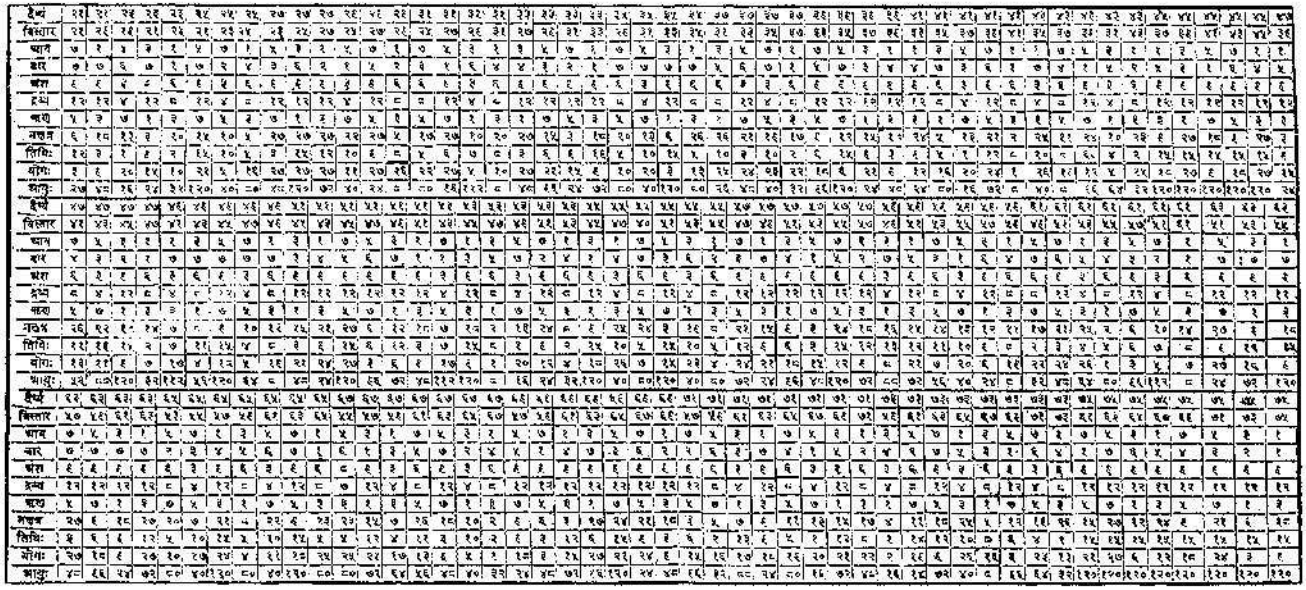

बगीचा लगाने का मुहूर्त

शतभिषा, विशाखा, मूल, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मृगशिर, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य इन नक्षत्रों में तथा शुक्र, सोम, बुध, गुरु इन वारों में बगीचा लगाना शुभ है।

रोगमुक्त होने पर स्नान करने का मुहूर्त

उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, आश्लेषा, पुनर्वसु, स्वाति, मघा, रेवती इन नक्षत्रों को छोड़ शेष नक्षत्रों में; रवि, मंगल, गुरु इन वारों में और रिक्तादि तिथियों में रोगी को स्नान कराना शुभ है।

नौकरी करने का मुहूर्त

हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, मृगशिर, पुष्य इन नक्षत्रों में; बुध, गुरु, शुक्र, रवि इन वारों में और शुभ तिथियों में नौकरी शुभ है।

मुक़दमा दायर करने का मुहूर्त

ज्येष्ठा, आर्द्रा, भरणी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी, मूल, आश्लेषा, मघा इन नक्षत्रों में; तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी, पंचमी, दशमी, पूर्णमासी इन तिथियों में और रवि, बुध, गुरु, शुक्र इन वारों में मुक़दमा दायर करना शुभ है।

मुक़दमा दायर करने के मुहूर्त का चक्र

नक्षत्र	ज्ये. आ. भ. पू. षा. पू. भा. पू. फा. मू. आश्ले. म.
वार	र. बु. गु. शु.
तिथि	३।५।८।१०।१३।१५
लग्न	३।६।७।८।११
लग्नशुद्धि	सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र ये ग्रह १।४।७।१० इन स्थानों में और पापग्रह ३।६।११ इन स्थानों में शुभ होते हैं, परन्तु अष्टम में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

औषध बनाने का मुहूर्त

हस्त, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल, पुनर्वसु, स्वाति, मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा इन नक्षत्रों में और रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र इन वारों में औषध निर्माण करना शुभ है।

मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त

उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी, श्रवण, विशाखा, मृगशिर इन नक्षत्रों में; रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र इन वारों में और द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी, पूर्णिमा इन तिथियों में यन्त्र-मन्त्र सिद्ध करना शुभ होता है।

सर्वारम्भ मुहूर्त

लग्न से बारहवाँ और आठवाँ स्थान शुद्ध हो और कोई ग्रह नहीं हो तथा जन्मलग्न व जन्मराशि से तीसरा, छठा, दसवाँ, ग्यारहवाँ लग्न हो और शुभग्रहों की दृष्टि हो तथा शुभग्रह युक्त हों; चन्द्रमा जन्मलग्न व जन्मराशि से तीसरे, छठे, दसवें, ग्यारहवें स्थान में हो तो सभी कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

मन्दिर-निर्माण का मुहूर्त

पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, मृगशिर, श्रवण, अश्विनी, चित्रा, पुनर्वसु, विशाखा, आर्द्रा, हस्त, धनिष्ठा और रोहिणी इन नक्षत्रों में; सोम, बुध, शुक्र और रवि इन वारों में एवं द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, एकादशी, द्वादशी और त्रयोदशी इन तिथियों में मन्दिर-निर्माण करना शुभ है।

मन्दिर-निर्माण के मुहूर्त का चक्र

मास	माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष, पौष (मतान्तर से)
नक्षत्र	पु. उत्तराफा. उत्तराषा. उत्तराभा. मृ. श्र. अश्वि. चि. पुन. वि. आ. ह. ध. रो. —
वार और तिथि	सोम, बुध, गु. शुक्र, रवि—२।३।५।७।११।१२।१३ ये तिथियाँ

प्रतिमा-निर्माण का मुहूर्त

पुष्य, रोहिणी, श्रवण, चित्रा, धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, हस्त, मृगशिर, रेवती और अनुराधा इन नक्षत्रों में; सोम, गुरु और शुक्र इन वारों में एवं द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, एकादशी और त्रयोदशी इन तिथियों में प्रतिमा-निर्माण करना शुभ है।

प्रतिष्ठा मुहूर्त

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रेवती इन नक्षत्रों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन

वारों में एवं शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी और पूर्णिमा तथा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया और पंचमी इन तिथियों में प्रतिष्ठा करना शुभ है। प्रतिष्ठा के लिए स्थिर संज्ञक राशियाँ लग्न के लिए शुभ बतायी गयी हैं।

प्रतिष्ठा मुहूर्त का चक्र

समय	उत्तरायण में; बृहस्पति, शुक्र और मंगल के बलवान् होने पर
तिथि	शुक्लपक्ष की १।२।५।१०।१३।१५ और कृष्णपक्ष की १।२।५ मतान्तर से शुक्लपक्ष की ७।११
नक्षत्र	पु. उत्तराफा. उ. षा. उ. भा. ह. रे. रो. अश्वि. मू. श्र. ध. पुन. मतान्तर से—चि. स्वा. भ. मू. (आवश्यक होने पर)
वार	सो. बु. गु. शु.
लग्नशुद्धि	२।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नराशियाँ—शुभग्रह १।४।७।५।९।१० में शुभ हैं और पापग्रह ३।६।११ में शुभ हैं, अष्टम में कोई भी ग्रह शुभ नहीं होता है।

मण्डप बनाने का मुहूर्त

सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन वारों में; २।५।७।११।१२।१३ इन तिथियों में एवं मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, श्रवण, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा और उत्तराभाद्रपद इन नक्षत्रों में मण्डप बनाना शुभ है।

होमाहुति का मुहूर्त

सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो उससे तीन-तीन नक्षत्रों का एक-एक त्रिक होता है, ऐसे सत्ताईस नक्षत्रों के नौ त्रिक होते हैं। इनमें पहला सूर्य का, दूसरा बुध का, तीसरा शुक्र का, चौथा शनैश्चर का, पाँचवाँ चन्द्रमा का, छठा मंगल का, सातवाँ बृहस्पति का आठवाँ राहु का और नौवाँ केतु का त्रिक होता है। होम के दिन का नक्षत्र जिसके त्रिक में पड़े उसी ग्रह के अनुसार फल समझना चाहिए। रवि, मंगल, शनि, राहु और केतु इन ग्रहों के त्रिक में हवन करना वर्जित है।

अग्निवास और उसका फल

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेकर अभीष्ट तिथि तक गिनने से जितनी संख्या हो, उसमें एक और जोड़े; फिर रविवार से लेकर इष्टवार तक गिनने से जितनी संख्या हो, उसको भी उसी में जोड़े। जोड़ने से जो राशि आवे उसमें ४ का भाग दे। यदि तीन अथवा शून्य शेष रहे तो अग्नि का वास पृथ्वी में होता है, यह होम करने के लिए उत्तम

होता है। एक शेष में अग्नि का आवास आकाश में होता है, इसका फल प्राणों को नाश करनेवाला बताया गया है और दो शेष में अग्नि का वास पाताल में होता है, इसका फल अर्थनाशक कहा गया है।

प्रश्नविचार

जिस समय किसी भी कार्य के लाभालाभ, शुभाशुभ जानने की इच्छा हो उस समय का इष्टकाल बनाकर प्रश्नकुण्डली, ग्रहस्पष्ट, भावस्पष्ट, नवमांश कुण्डली और चलित कुण्डली बनाकर विचार करना चाहिए। प्रश्नलग्न में चरराशि, बलवान् लग्नेश, कार्येश शुभग्रहों से युत या दृष्ट हों तथा वे १।४।५।७।९।१० स्थानों में हों तो प्रश्नकर्ता जिस कार्य के सम्बन्ध में पूछ रहा है, वह जल्दी पूरा होगा। यदि स्थिर लग्न हो, लग्नेश और कार्येश बलवान् हों तो विलम्ब से कार्य होता है। द्विस्वभाव राशि लग्न में हो तथा १।४।५।७।९।१०वें भाव में बलवान् पापग्रह हों; लग्नेश, कार्येश हीनबल, नीच, अस्तंगत या शत्रुक्षेत्री हों तो कार्य सफल नहीं होता। धन प्राप्ति के प्रश्न में लग्न-लग्नेश, धन-धनेश और चन्द्रमा से; यश प्राप्ति के लिए लग्न, तृतीय, दशम और इनके स्वामी तथा चन्द्रमा से; सुख, शान्ति, गृह, भूमि आदि की प्राप्ति के लिए लग्न, चतुर्थ, दशम स्थान, इनके स्वामी और चन्द्रमा से; परीक्षा में यश प्राप्ति के लिए लग्न, पंचम, नवम, दशम स्थान, इनके स्वामी और चन्द्रमा से; विवाह के लिए लग्न, द्वितीय, सप्तम स्थान, इन स्थानों के स्वामी और चन्द्रमा से; नौकरी, व्यवसाय और मुक़दमा में विजय प्राप्त करने के लिए लग्न-लग्नेश, दशम-दशमेश, एकादश-एकादशेश और चन्द्रमा से; बड़े व्यापार के लिए लग्न-लग्नेश, द्वितीय-द्वितीयेश, सप्तम-सप्तमेश, दशम-दशमेश, एकादश-एकादशेश और चन्द्रमा से; लाभ के लिए लग्न-लग्नेश, एकादश-एकादशेश और चन्द्रमा से एवं सन्तान प्राप्ति के लिए लग्न-लग्नेश, द्वितीय-द्वितीयेश, पंचम-पंचमेश और गुरु से विचार करना चाहिए।

रोगी के स्वस्थ, अस्वस्थ होने का विचार

प्रश्नलग्न में पापग्रह की राशि हो, लग्न पापग्रह से युत या दृष्ट हो या अष्टम स्थान में चन्द्रमा अथवा पापग्रह हों तो रोगी का मरण होता है।

प्रश्नलग्नकुण्डली में पापग्रह आठवें या बारहवें स्थान में हो या चन्द्रमा १।६।७।८वें स्थान में हो तो शीघ्र ही रोगी की मृत्यु होती है। चन्द्रमा लग्न में, सूर्य सप्तम में, मंगल मेष राशिस्थ वृश्चिक के नवमांश में; चन्द्रमा से युक्त हो तो रोगी का शीघ्र मरण होता है। प्रश्नलग्न से सातवें स्थान में पापग्रह हों तो रोगी को महाकष्ट और शुभग्रह हों तो रोगी स्वस्थ होता है। सप्तम स्थान में शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हों तो मिश्रित फल होता है।

लग्नेश निर्बल हो, अष्टमेश बली हो और चन्द्रमा छठे या आठवें भाव में हो अथवा अष्टम में शनि मंगल से दृष्ट हो तो रोगी की मृत्यु होती है। आठवें में सूर्य हो

तो रक्तपित्त, बुध हो तो सन्निपात, राहु से युक्त सूर्य आठवें में हो तो कुष्ट, राहु से युक्त शनि आठवें में हो तो वायुविकार एवं चन्द्रमा और शुक्र आठवें में हो तो सन्निपात होता है।

लग्नेश बलवान् और अष्टमेश निर्बल हो तो रोगी का रोग जल्दी अच्छा हो जाता है।

नक्षत्रानुसार रोगी के रोग की अवधि का ज्ञान

स्वाति, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी, आर्द्रा और आश्लेषा में जिस व्यक्ति को रोग हो उसकी मृत्यु होती है। रेवती और अनुराधा में रोग हो तो रोग अधिक दिन तक जाता है; भरणी, श्रवण, शतभिषा और चित्रा में रोग हो तो ११ दिन तक रोग; विशाखा, हस्त और धनिष्ठा में हो तो १५ दिन तक रोग; मूल, कृत्तिका और अश्विनी में हो तो ९ दिन तक; मघा में हो तो ७ दिन तक रोग; मृगशिरा और उत्तराषाढ़ा में हो तो एक महीना रोग रहता है। भरणी, आश्लेषा, मूल, कृत्तिका, विशाखा, आर्द्रा और मघा नक्षत्र में किसी को सर्प काटे तो उसकी मृत्यु होती है।

शीघ्र मृत्यु योग

आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, भरणी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी, विशाखा, धनिष्ठा और कृत्तिका नक्षत्र; रवि, मंगल और शनि ये वार एवं चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, एकादशी और षष्ठी इन तिथियों के योग में रोगग्रस्त होनेवाले व्यक्ति की मृत्यु होती है।

चोरज्ञान

प्रश्नलग्न स्थिर राशि हो या स्थिर राशि के नवमांश में प्रश्नलग्न हो अथवा अपने वर्गोत्तम नवमांश की प्रश्नलग्न राशि हो तो बन्धु, स्वजातीय, उच्चजातीय व्यक्ति या दास को चोर समझना चाहिए।

प्रश्नलग्न प्रथम द्रेष्काण में हो तो चोरी गयी चीज घर के द्वार के पास; द्वितीय द्रेष्काण में हो तो घर के मध्य में और तृतीय द्रेष्काण में हो तो घर के पीछे के भाग में होती है।

लग्न में पूर्ण चन्द्र हो और उसके ऊपर गुरु की दृष्टि हो तथा शीर्षोदय राशि ३।५।६।७।८।११ लग्न में हों तथा लग्न में बलवान् और शुभग्रह स्थित हों और लग्नेश, सप्तमेश, दशमेश, लाभेश, बलवान् चन्द्रमा परस्पर मित्र हों या इत्थशाल आदि शुभ योग करते हों तो चोरी गयी वस्तु की पुनः प्राप्ति हो जाती है।

बली या पूर्ण चन्द्र लग्न में, शुभग्रह शीर्षोदय या एकादश में हों तथा शुभग्रह से युत या दृष्ट हों तो नष्टधन—चोरी गया धन मिल जाता है। पूर्ण चन्द्र लग्न में हो,

गुरु या शुक्र की उसपर दृष्टि अथवा शुभग्रह ११वें भाव में हों तो भी चोरी गया धन मिल जाता है।

प्रश्नकाल में जो ग्रह केन्द्र में हो उसकी दिशा में चोरी की वस्तु को कहना चाहिए। यदि केन्द्र में दो या बहुत से ग्रह हों तो उनमें से जो बली हो उस ग्रह की दिशा में नष्टधन कहना चाहिए। यदि केन्द्र में ग्रह नहीं हो तो लग्न राशि की दिशा में चोरी गयी वस्तु बतलानी चाहिए।

सप्तम स्थान में शुभग्रह हो या लग्नेश सप्तम स्थान में बैठा हो अथवा क्षीण चन्द्रमा सप्तम भवन में हो तो चोरी गयी या भूली हुई वस्तु मिलती नहीं है। सप्तमेश और चन्द्रमा सूर्य के साथ स्थित हों तो चोरी गयी वस्तु मिलती नहीं। ३।५।७।११वें स्थान में शुभग्रह हों तो प्रश्नकर्ता का धन मिल जाता है।

लग्न पर सूर्य, चन्द्रमा की दृष्टि हो तो आत्मीय चोर होता है; लग्नेश और सप्तमेश लग्न में हों तो कुटुम्ब का व्यक्ति चोर होता है। सप्तमेश २।१२वें स्थान में हो तो नौकर चोर होता है। मेष प्रश्न लग्न हो तो ब्राह्मण चोर, वृष हो तो क्षत्रिय चोर, मिथुन लग्न हो तो वैश्य चोर, कर्क लग्न हो तो शूद्र चोर, सिंह लग्न हो तो अन्त्यज चोर, कन्या लग्न हो तो स्त्री चोर, तुला लग्न हो तो पुत्र, भाई या मित्र चोर, वृश्चिक हो तो नौकर, धनु हो तो स्त्री या भाई चोर, मकर हो तो वैश्य, कुम्भ हो तो मनुष्येतर प्राणी चूहा आदि और मीन हो तो ऐसे ही भूली हुई समझना चाहिए।

चर प्रश्न लग्न हो तो दो अक्षर के नामवाला चोर, स्थिर हो तो चार अक्षर के नामवाला चोर और द्विस्वभाव लग्न हो तो तीन अक्षर के नामवाला चोर होता है।

ज्योतिष में एक सिद्धान्त यह भी बताया गया है कि प्रश्नलग्न चर हो तो चोर के नाम का पहला अक्षर संयुक्त होता है, जैसे द्वारिका, व्रजरत्न आदि। स्थिर लग्न हो तो कृदन्त—पदसंज्ञक वर्ण चोर के नाम का प्रथम अक्षर होता है, जैसे मंगलसेन, भवानी शंकर इत्यादि। द्विस्वभाव लग्न हो तो स्वरवर्ण चोर के नाम का प्रथम अक्षर होता है, जैसे ईश्वरीप्रसाद, उजागरसिंह, उग्रसेन इत्यादि। चोर का विशेष स्वरूप लग्न के द्रेष्काण के अनुसार जानना चाहिए।

प्रश्नलग्नानुसार चोर और चोरी की वस्तु का विचार

मेषलग्न में वस्तु चोरी गयी हो अथवा प्रश्नकाल में लग्न हो तो चोरी की वस्तु पूर्व दिशा में समझनी चाहिए। चोर ब्राह्मण जाति का व्यक्ति होता है और उसका नाम स अक्षर से आरम्भ होता है। नाम में दो या तीन ही अक्षर होते हैं।

वृषलग्न में वस्तु चोरी गयी हो अथवा प्रश्नकाल में मेष लग्न हो तो चोरी की वस्तु पुर्व दिशा में समझनी चाहिए। चोरी करनेवाला व्यक्ति क्षत्रिय जाति का होता है और उसके नाम में आदि अक्षर म रहता है तथा नाम चार अक्षरों का रहता है।

---

१. देखें, बृहज्जातक का द्रेष्काणाध्याय।

मिथुन लग्न में चोरी गयी वस्तु अथवा प्रश्नकाल में मिथुन लग्न के होने से चोरी की वस्तु आग्नेयकोण में रहती है। चोरी करनेवाला व्यक्ति वैश्य वर्ण का होता है और उसका नाम ककार से आरम्भ होता है। नाम में तीन वर्ण होते हैं।

कर्क लग्न में वस्तु के चोरी जाने पर अथवा प्रश्नकाल में कर्क लग्न के होने पर चोरी की वस्तु दक्षिण दिशा में मिलती है और चोरी करनेवाला शूद्र या अन्त्यज होता है। इसका नाम तकार से आरम्भ होता है और नाम में तीन वर्ण होते हैं।

प्रश्नकाल या चोरी के समय में सिंह लग्न के होने पर चोरी की वस्तु नैर्ऋत्य कोण में पायी जाती है। चोरी करनेवाला सेवक (नौकर) होता है और यह अन्त्यज या अन्य किसी निम्नश्रेणी की जाति का रहता है। चोर का नाम नकार से आरम्भ होता है तथा नाम तीन या चार वर्णों का रहता है।

प्रश्नकाल या चोरी के समय में कन्या लग्न हो तो चोरी गयी वस्तु पश्चिम दिशा में समझनी चाहिए। चोरी करनेवाला कोई पुरुष नहीं होता, बल्कि चोरी करनेवाली कोई नारी होती है। इसका नाम मकार से आरम्भ होता है और नाम में कई वर्ण पाये जाते हैं। कन्या लग्न में बुध और चन्द्रमा का नवांश हो तो ब्राह्मणी चोर होती है और मंगल का नवांश होने पर क्षत्रियाणी चोर होती है। शुक्र का नवांश होने पर वैश्य जाति की स्त्री चोर और शनि-रवि का नवांश होने पर शूद्रा या अन्य अन्त्यज जाति की स्त्री चोरी करती है।

तुला लग्न होने पर चोरी गयी वस्तु पश्चिम दिशा में समझनी चाहिए। चोरी करनेवाला पुत्र, मित्र, भाई या अन्य कोई सम्बन्धी ही होता है। इसका नाम भी मकार से आरम्भ रहता है और नाम में तीन वर्ण होते हैं। तुला लग्न में गुरु, चन्द्र और बुध का नवांश हो तो चोरी करनेवाला परिवार का ही व्यक्ति होता है। मंगल और रवि के नवांश में दूर का सम्बन्धी चोरी करता है तथा शनि के नवांश में आया हुआ अतिथि या अन्य परिचित व्यक्ति—जिससे केवल जान-पहचान का ही सम्बन्ध होता है, चोरी करता है।

तुला लग्न में चोरी गयी हुई वस्तु बड़ी कठिनाई से प्राप्त होती है।

वृश्चिक लग्न होने पर चोरी गयी हुई वस्तु पश्चिम दिशा में समझनी चाहिए। इस प्रश्नलग्न के होने पर चोरी की वस्तु घर से सौ-डेढ़ सौ गज की दूरी पर ही रहती है। चोर घर का नौकर ही होता है और इसका नाम सकार से आरम्भ रहता है। नाम चार अक्षरों का होता है। इस लग्न का नवांश यदि गुरु या शुक्र का हो तो चोरी की वस्तु मिल जाती है तथा चोरी करनेवाला किसी उत्तम वर्ण का होता है। बुध के नवांश के होने पर चोरी करनेवाला कोई पड़ोसी भी हो सकता है तथा यह पड़ोसी गौरवर्ण का होता है और इसका क़द ५ फ़ीट ६ इंच का रहता है। देखने में भव्य और बातूनी होता है।

प्रश्नकाल में धनु लग्न हो या धनु का नवांश हो तो चोरी गयी वस्तु वायुकोण

में रहती है। चोरी करनेवाली नारी होती है तथा इसका नाम सकार से आरम्भ होता है और नाम में कुल चार वर्ण पाये जाते हैं। मंगल का नवांश रहने पर चोरी करनेवाली युवती होती है और बुध के नवांश में चोरी किसी कन्या के द्वारा की जाती है। शुक्र के नवांश में चोरी करनेवाले की आयु ७-८ वर्ष की होती है तथा यह चोरी किसी ब्राह्मण या अन्त्यज के बालक द्वारा ही की जाती है। धनु लग्न के होने पर गुरु त्रिकोण या केन्द्र में स्थित हो तो चोरी की गयी वस्तु उपलब्ध नहीं होती। यह चोरी किसी आत्मीय द्वारा ही की गयी होती है। शनि का नवांश प्रश्नकाल में रहने से चोरी पुरुष और नारी दोनों के द्वारा मिलकर की जाती है। पुरुष का नाम 'ह' या 'र' अक्षर से आरम्भ होता है और नारी का स से। धनु लग्न में साधारणतः चोरी गयी वस्तु मिलती नहीं। यदि प्रश्नकाल में धनु लग्न के अन्तिम छह अंश शेष रह गये हों तो प्रयास करने से चोरी में गयी वस्तु मिलती है।

प्रश्नकाल में मकर लग्न हो तो चोरी की वस्तु उत्तर दिशा में समझनी चाहिए। चोरी करनेवाला वैश्य जाति का व्यक्ति होता है। नाम का आदि अक्षर स और चार वर्णों का नाम होता है। मकर लग्न में शनि का ही नवांश हो तो चोरी की वस्तु उपलब्ध नहीं होती है। गुरु के नवांश के रहने से किसी धर्मस्थान, मन्दिर, कूप या अन्य किसी तीर्थस्थान में वस्तु को समझना चाहिए।

प्रश्नकाल में कुम्भ लग्न के होने पर चोरी गयी वस्तु उत्तर या उत्तर-पश्चिम के कोने में रहती है। इस प्रश्न लग्न के अनुसार चोरी करनेवाला कोई व्यक्ति नहीं होता; बल्कि मूषकों (चूहों) के द्वारा ही वस्तु इधर-उधर कर दी जाती है। इसकी प्राप्ति एक महीने के भीतर हो सकती है। प्रश्नकाल में बुध का नवांश हो तो चक्की या चारपाई के पीछे वस्तु की स्थिति समझनी चाहिए। शुक्र और चन्द्रमा के नवांश में चोरी की वस्तु की स्थिति शयनकक्ष में या शयनकक्ष के बगलवाले कमरे में समझनी चाहिए।

मीन लग्न में वस्तु की चोरी हुई हो अथवा प्रश्नकाल में मीन लग्न हो तो ईशानकोण में वस्तु की स्थिति रहती है। चोरी करनेवाला शूद्र या अन्त्यज होता है और चुराकर वस्तु को जमीन के नीचे रख देता है। इसका नाम 'व' अक्षर से आरम्भ होना चाहिए और नाम में तीन अक्षर रहते हैं। मीन लग्न में तृतीय नवांश के होने पर चोर स्त्री भी होती है। यह घर का कार्य करनेवाली नौकरानी या अन्य कोई परिचित महिला ही रहती है।

वर्गानुसार चोर और चोरी की वस्तु का विचार

प्रश्नकाल में फल, पुष्प, देव, नदी, तीर्थ एवं पर्वत का नामोच्चारण कराके प्रश्नाक्षर ग्रहण करने चाहिए। प्रातःकाल में आवे तो पुष्प का नाम; मध्याह्न में फल का नाम; अपराह्न में दिन के तीसरे पहर में देवता का नाम और सायंकाल में नदी

या पहाड़ का नाम पूछकर प्रश्नाक्षर ग्रहण करने चाहिए। अ वर्ग के वर्ण प्रश्नाक्षर हों अथवा प्रश्नाक्षरों में अवर्ग के वर्गों की प्रधानता हो तो ब्राह्मण चोर होता है। चोर पुरुष न होकर कोई नारी होती है और चोरी गयी वस्तु मिल जाती है। प्रश्नाक्षर में क वर्ग के वर्ण प्रधान हों तो क्षत्रिय जाति का व्यक्ति चोर होता है। इस प्रकार के प्रश्नाक्षरों के होने पर पुरुष चोरी करते हैं और चोरी की वस्तु बहुत दूर पहुँच जाती है। प्रयास करने पर इस प्रकार के प्रश्नाक्षरों की वस्तु प्राप्त होती है। चोर व्यक्तियों का क़द मध्यम दर्जे का होता है और एक व्यक्ति के दाहिने अंग में किसी अस्त्र की चोट का चिह्न रहता है अथवा वह पैर का लँगड़ा होता है। च वर्ग के प्रश्नाक्षर होने पर चोर वैश्य वर्ण का व्यक्ति होता है। चोरी करनेवाला अत्यन्त कापुरुष, सन्तानहीन, व्यसनी एवं दुराचारी होता है। ट वर्ग के वर्ण प्रश्नाक्षर होने से शूद्र जाति का व्यक्ति चोर होता है और चोरी करनेवाला नपुंसक होता है। इस प्रकार के प्रश्नाक्षरों से यह सूचना भी मिलती है कि चोर का सम्बन्ध पुराना है और उसका विश्वास होता चला आ रहा है। उसके गाल या मस्तक पर मस्सा अथवा तिल का दाग भी है।

त वर्ग के प्रश्नाक्षरों के होने से चोरी करनेवाला अन्त्यज होता है। चोरी के समय उसकी सहायता दो-तीन व्यक्ति करते हैं या चोरी करने में उनकी भी सहमति रहती है। यह चोरी अत्यन्त विश्वसनीय व्यक्तियों से मिलकर की जाती है। चोरी गये पदार्थ घर से आधा मील की दूरी पर रहते हैं तथा रुपये खर्च करने पर वे पदार्थ मिल भी जाते हैं।

प वर्ग के वर्ण प्रश्नाक्षर हों तो घर की दासी या नौकरानी चोर होती है। चोरी का सामान भी मिल जाता है। चोरी करनेवाली निम्न श्रेणी की होती है तथा उसकी आयु ४५-५० वर्ष की होती है। चोरी में इसे किसी से सहायता प्राप्त नहीं होती है, पर इसकी जानकारी घर के किसी न किसी व्यक्ति को अवश्य रहती है।

य वर्ग के वर्ण प्रश्नाक्षर होने पर चोर शूद्र वर्ण का व्यक्ति होता है। बहुत सम्भव है कि यह घर का कोई नौकर ही रहता है अथवा उस घर से उसका सम्बन्ध रहता है। इन प्रश्नाक्षरों से यह भी ज्ञात होता है कि चोर किसी नौकरानी से भी मिला है और चोरी में उसने भी सहायता प्रदान की है।

श वर्ग के वर्ण प्रश्नाक्षर हों तो चोरी करनेवाला वैश्य जाति का व्यक्ति होता है। इस व्यक्ति के सिर पर बाल कम होते हैं और इसके बाल झड़ जाते हैं तथा खोपड़ी दिखलाई पड़ती है। इसका क़द मध्यम होता है और अवस्था ३५ या ४० वर्ष के बीच की होती है। चोर अपने व्यवसाय में अत्यन्त प्रवीण होता है तथा चोरी करने का उसका अभ्यास रहता है। उसके दाहिने कन्धे पर लहसुन या किसी शस्त्र का चिह्न अंकित रहता है।

नक्षत्रानुसार चोरी गयी वस्तु की प्राप्ति का विचार

रोहिणी, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा और रेवती ये नक्षत्र अन्धलोचन संज्ञक हैं। इनमें खोयी या चोरी गयी वस्तु पूर्व दिशा में होती है और शीघ्र मिल जाती है। मृगसिर, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, शतभिषा और अश्विनी इन नक्षत्रों की मन्दलोचन संज्ञा है। इनमें खोयी या चोरी गयी वस्तु पश्चिम दिशा में होती है और अधिक प्रयत्न करने पर मिलती है। आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित्, पूर्वाभाद्रपद और भरणी इन नक्षत्रों की काणलोचन या मध्यलोचन संज्ञा है। इनमें खोयी या चोरी गयी वस्तु दक्षिण दिशा में होती है और उस वस्तु की प्राप्ति नहीं होती, किन्तु बहुत दिनों के बाद समाचार उसके सम्बन्ध में सुनने को मिलते हैं। पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद और कृत्तिका सुलोचन संज्ञक हैं। इन नक्षत्रों में खोयी या चोरी गयी वस्तु उत्तर दिशा में रहती है और कभी भी प्राप्त नहीं होती तथा न उसके सम्बन्ध में कभी समाचार ही मिलते हैं।

मघा से उत्तराफाल्गुनी पर्यन्त नक्षत्रों में खोयी हुई वस्तु पास ही में मिल जाती है, उसके लिए विशेष झंझट नहीं करना पड़ता। हस्त से धनिष्ठा पर्यन्त नक्षत्रों में खोयी हुई वस्तु अन्य व्यक्ति के हाथ में दिखलाई पड़ती है। शतभिषा से भरणी पर्यन्त नक्षत्रों में खोयी हुई वस्तु अपने घर में ही दिखलाई पड़ती है। कृत्तिका से आश्लेषा पर्यन्त नक्षत्रों में खोयी हुई वस्तु देखने में नहीं आती, कहीं दूर चली जाती है।

प्रवासी प्रश्न विचार

प्रश्नकुण्डली में शुक्र और गुरु २।३ स्थानों में हो तो प्रवासी विलम्ब से; यदि ये ग्रह १।४ स्थान में हों तो जल्दी ही घर वापस आता है। ६।७वें स्थान में कोई ग्रह हो, केन्द्र में गुरु हो और त्रिकोण में बुध अथवा शुक्र हो तो जल्दी ही प्रवासी लौटता है। लग्न में चर राशि हो या चन्द्रमा चर अथवा द्विस्वभाव राशि में चर नवमांश का होकर स्थित हो तो प्रवासी लौट आता है। यदि स्थिर लग्न हों तो वह वापस नहीं आता। लग्नेश २।३।८।९वें स्थान में हो तो प्रवासी लौटकर रास्ते में ठहरा हुआ होता है। २।३।५।६।७वें स्थान में वक्रीग्रह हों, केन्द्र में गुरु या बुध हो और त्रिकोण में शुक्र हो तो प्रवासी जल्दी वापस आता है।

प्रश्नकर्ता के प्रश्नाक्षरों की संख्या को ६ से गुणा कर जो गुणनफल हो, उसमें एक जोड़ने से जो आवे उसमें ७ का भाग दे। एक शेष रहे तो प्रवासी आधे मार्ग में, दो शेष रहे तो घर के समीप, तीन शेष रहे तो घर पर, चार शेष रहे तो लाभयुक्त, पाँच शेष रहे तो रोगी, छह शेष रहे तो पीड़ित और शून्य शेष रहे तो आने को तत्पर होता है।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

सन्तान की प्राप्ति होगी या नहीं, इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, जिस तिथि को पृच्छक आया हो उस तिथि-संख्या को चार से गुणा कर एक जोड़ देना। इस योगफल में दिन संख्या और योग संख्या—रविवार, सोमवार आदि; विष्कम्भ, प्रीति आदि योग संख्या—उस दिन जो वार और योग हो उसकी संख्या जोड़ देना। इस योगफल में दो से भाग देना, तब जो लब्धि हो उसको तीन से गुणा कर चार से भाग देना। यदि भाग करते समय एक शेष रहे तो विलम्ब से सन्तान की सम्भावना, दो शेष रहने पर सन्तान का अभाव और शून्य शेष रहने पर सन्तान की शीघ्र प्राप्ति होती है।

दिन संख्या—(रविवार आदि के क्रम से) तीन से गुणा कर उसमें तिथि-संख्या जोड़ देना और योगफल में दो का भाग देने से एक शेष रहने पर सन्तान की प्राप्ति सम्भव और शून्य शेष रहने पर सन्तान प्राप्ति का अभाव समझना चाहिए।

प्रश्नलग्न के अनुसार सन्तान सम्बन्धी प्रश्नों में लग्नेश और पंचमेश तथा लग्न और पंचम के सम्बन्ध का विचार करना चाहिए। लग्नेश और पंचमेश परस्पर में एक-दूसरे को देखते हों तो सन्तान सात और परस्पर में दृष्टि न हो तो सन्तान का अभाव समझना चाहिए। इस प्रसंग में यह ज्ञातव्य है कि लग्न और पंचम पर लग्नेश और पंचमेश की दृष्टि का होना तथा शुभग्रहों के साथ इत्थशाल योग का रहना सन्तान-प्राप्ति के लिए आवश्यक है। दृष्टि न होने पर सन्तानाभाव समझना चाहिए। प्रश्नलग्न, जन्मलग्न और चन्द्रमा से पंचम स्थान में सिंह, वृष, वृश्चिक और कन्या राशियाँ स्थित हों तो प्रश्नकर्ता को विलम्ब से सन्तान-लाभ होता है। यदि पंचम भाव में पापग्रह हों अथवा पापदृष्ट ग्रह हों तो भी विलम्ब से सन्तान-प्राप्ति होती है। यदि प्रश्न के समय अष्टम भाव में सूर्य और शनि सिंह, मकर या कुम्भ राशि में स्थित हों तो सन्तान का अभाव समझना चाहिए। चन्द्र और बुध अष्टम स्थान में स्थित हों तो विलम्ब से एक सन्तान की प्राप्ति होती है। चन्द्रमा के बलवान् होने से कन्या सन्तान होती है। यदि अष्टम में केवल बुध स्थित हो तो सन्तान का अभाव रहता है। शुक्र और गुरु अष्टम स्थान में स्थित हों तो सन्तान उत्पन्न होने के अनन्तर उसकी मृत्यु हो जाती है। मंगल अष्टम में हो तो गर्भपात हो जाता है। प्रश्नलग्न में अष्टमेश अष्टम भाव में स्थित हों तो पृच्छक को सन्तान-लाभ नहीं होता। शुक्र और सूर्य अष्टम स्थान में स्थित हों तथा पापग्रह द्वितीय, द्वादश और अष्टम स्थान में हों तो सन्तान-लाभ नहीं होता तथा पृच्छक को कष्ट भी होता है। यदि द्वादश भाव का स्वामी केन्द्र में हो और उसे शुभग्रह देखते हों तो एक दीर्घजीवी बालक उत्पन्न होता है। पंचमेश अथवा लग्नेश मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशियों में स्थित हों तो एक पुत्र की प्राप्ति होती है। यदि उक्त ग्रह वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशियों में स्थित हों तो कन्या की प्राप्ति होती है। लग्न से विषम स्थान में शनि स्थित हो तो पुत्रलाभ और वही सम

स्थान में स्थित हो तो कन्या की प्राप्ति होती है। पंचम भाव का स्वामी लग्नेश या चन्द्रमा से इत्थशाल करता हो और शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो पृच्छक को सन्तान-लाभ होता है।

लाभालाभ प्रश्न

प्रश्नकालीन कुण्डली बनाने के अनन्तर विचार करना—यदि लग्नेश और अष्टमेश दोनों आठवें स्थान में हों तथा ये दोनों एक ही द्रेष्काण में स्थित हों तो पृच्छक को अवश्य लाभ होगा। प्रश्नकाल में लग्न में सौम्य ग्रहों का वर्ग हो तो ग्रहभाव की अपेक्षा शुभ फल समझना चाहिए। लग्न में चन्द्रमा और लाभभाव में गुरु या शुक्र हो तथा लाभभाव के ऊपर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो पृच्छक को विशेष रूप से लाभ होता है। लग्नेश और लाभेश एक साथ हों तो भी लाभ होता है। लग्नेश और लाभेश का इत्थशाल योग होने पर भी लाभ होता है। यदि लग्नेश चन्द्रमा से दृष्ट होकर लाभ स्थान में स्थित हो तो दूसरों की सहायता से लाभ होता है। दशमेश और चन्द्रमा का इत्थशाल होने पर भी लाभ की प्राप्ति होती है। कर्माधिपति का लग्नेश के साथ रहना, उसके साथ इत्थशाल होना एवं कर्माधिपति और लाभेश का योग होना भी लाभ का सूचक है। लाभेश और अष्टमेश का योग और इत्थशाल होने पर भी लाभ नहीं होता। जिस-जिस स्थान पर चन्द्रमा की दृष्टि हो उस-उस स्थान से पुण्य की वृद्धि तथा कर्म की सिद्धि होती है। अष्टम भाव पर चन्द्रमा की दृष्टि रहने से लाभ नहीं होता तथा धर्म-कर्म का भी ह्रास होता है। लग्नेश षष्ठ या अष्टम में हो तो लाभ नहीं होता तथा नाना प्रकार के कष्ट भी सहन करने पड़ते हैं। लग्नेश द्वादश भाव में स्थित हो तो व्यय अधिक होता है और लाभ कुछ नहीं। पृच्छक की प्रश्नकुण्डली में लग्न में बुध स्थित हो और चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा पापग्रहों की बुध पर दृष्टि हो तो शीघ्र ही लाभ होता है।

प्रश्नलग्न में जो राशि हो उसकी कला बनाकर उस पिण्ड को छाया के अंगुलों से गुणा करें और सात से भाग दे तो जो शेष बचे उसे एक स्थान में रखे। यदि शुभ-ग्रह का उदयांक हो तो प्रश्नकर्ता के कार्य की सिद्धि कहना और अन्य ग्रह का उदयांक हो तो कार्यसिद्धि का अभाव समझना चाहिए।

वाद-विवाद या मुक़दमे का प्रश्न

विवाद के प्रश्न में यदि लग्न में पापग्रह हो तो प्रश्नकर्ता निश्चयतः उस मुक़दमा में विजयी होगा। सप्तम भाव में नीच ग्रह के रहने से मुक़दमे में विजय लाभ नहीं होता। लग्न और सप्तम में क्रूर ग्रहों के रहने से मुक़दमा वर्षों चलता है और कई वर्ष के पश्चात् वादी की विजय होती है। लग्नेश, पंचमेश और शुभग्रह केन्द्र में हों तो सन्धि हो जाती है। लग्नेश, सप्तमेश और षष्ठेश छठे स्थान में हों तो परस्पर कलह

कुछ अधिक दिनों तक चलती है; पर अन्त में विजयलाभ होता है। मुक़दमे के प्रश्न में लग्न, पंचम और षष्ठ तथा इन स्थानों के स्वामियों से विचार करना चाहिए। लग्न के निर्बल होने से विजय की सम्भावना नहीं रहती। लग्नेश और पंचमेश भी हीनबल हों या इनके ऊपर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो नाना प्रकार के कष्ट सहन करने पड़ते हैं तथा मुक़दमे में पराजय होती है। चन्द्रमा लग्न या पंचम को देखता हो तथा उसका लग्नेश या पंचमेश के साथ इत्थशाल योग हो तो भी विजयलाभ होता है।

पृच्छक से किसी फूल का नाम पूछकर उसकी स्वर संख्या को व्यंजन संख्या से गुणा कर दें; गुणनफल में पृच्छक के नाम के अक्षरों की संख्या जोड़कर योगफल में ९ का भाग दें। एक शेष में शीघ्र कार्यसिद्धि, ०।२।५ में विलम्ब से कार्यसिद्धि और ४।६।८ शेष में कार्यनाश तथा अवशिष्ट शेष में कार्य मन्दगति से होता है।

पृच्छक के नाम के अक्षरों को दो से गुणा कर गुणनफल में ७ जोड़ दे। इस योगफल में तीन का भाग देने पर सम शेष में कार्यनाश और विषम शेष में कार्यसिद्धि समझना चाहिए।

पृच्छक से एक से लेकर नौ तक की अंक संख्या में से कोई भी अंक पूछना चाहिए + बतायी गयी अंक संख्या को उसके नाम की अक्षर संख्या से गुणा कर देना चाहिए। इस गुणनफल में तिथि-संख्या और प्रहर संख्या को जोड़ देना चाहिए। तिथि की गणना शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से होती है, अतः शुक्लपक्ष की प्रतिपदा की संख्या १, द्वितीया २ इसी प्रकार अमावस्या की ३० मानी जाती है। वार संख्या रविवार की १, सोमवार २, मंगल ३ इसी प्रकार उत्तरोत्तर बढ़ती हुई शनि की ७ संख्या मानी गयी है। उपर्युक्त योग संख्या में ८ का भाग देने पर ०।१।७ शेष में कार्यसिद्धि, मतान्तर से १।७ में विलम्ब से सिद्धि, २।४।६ में सिद्धि और ३।५ शेष में विलम्ब से सिद्धि होती है।

पृच्छक यदि ऊपर देखता हुआ प्रश्न करे तो कार्यसिद्धि और ज़मीन को देखता हुआ प्रश्न करे तो विलम्ब से कार्यसिद्धि होती है। ज़मीन देखते समय उसकी दृष्टि किसी गड्ढे या नीचे स्थान की ओर हो तो कार्यसिद्धि नहीं होती। अपने शरीर को खुजलाते हुए प्रश्न करे तो विलम्ब से कार्यसिद्धि; ज़मीन खरोंचता हुआ प्रश्न करे तो कार्य असिद्धि एवं इधर-उधर देखता हुआ प्रश्न करे तो विलम्ब से कार्यसिद्धि होती है।

मेष, मिथुन, कन्या और मीन लग्न में प्रश्न किया गया हो तो कार्यसिद्धि; तुला, कर्क, सिंह और वृष लग्न में प्रश्न किया गया हो तो विलम्ब से सिद्धि एवं वृश्चिक, धनु, मकर और कुम्भ में प्रश्न किया गया हो तो प्रायः कार्य की सिद्धि नहीं होती। मतान्तर से धनु और कुम्भ लग्न में प्रश्न किये जाने पर कार्यसिद्धि मानी गयी है। मकर लग्न में प्रश्न करने पर कार्यसिद्धि नहीं होती। यदि लग्नेश चतुर्थ, पंचम और दशम भाव में से किसी भी स्थान में स्थिर हो तो कार्य की सिद्धि होती है। चन्द्रमा या चतुर्थेश या दशमेश में से कोई भी हो तो कार्य सफल होता है। दशम भाव में

उच्च का मंगल या सूर्य हो तो अवश्य ही कार्यसिद्धि होती है। दशमेश का चन्द्रमा अथवा लग्नेश के साथ इत्थशाल योग हो और चन्द्रमा को उसके ऊपर दृष्टि हो तो कार्य सिद्ध होता है। लग्न स्थान में मंगल हो और उसपर गुरु की दृष्टि हो तो कार्य सिद्ध होता है। शनि का नवांश लग्न में हो तथा लग्न में राहु अथवा केतु में से कोई एक ग्रह स्थित हो तो कार्य सफल नहीं होता। दशम या दशमेश पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो कार्य का नाश होता है। पंचमेश और चतुर्थेश दशम भाव में हो तो बड़ी सफलता के साथ कार्य सिद्ध होता है। चतुर्थेश या दशमेश का वक्री होना कार्यसिद्धि में बाधक है।

भोजन सम्बन्धी प्रश्न

आज मैंने कितनी बार भोजन किया है और कैसा भोजन किया है, इस प्रश्न के उत्तर को समझने के लिए लग्न स्वभाव का विचार करना चाहिए। यदि प्रश्नलग्न स्थिर हो तो एक बार भोजन, द्विस्वभाव हो तो दो बार भोजन और चर लग्न हो तो कई बार भोजन किया है, यह समझना चाहिए। यदि चन्द्रमा लग्न में हो तो नमकीन, मंगल हो तो कड़ुवा तथा खट्टा, गुरु हो तो मीठा, सूर्य हो तो तिक्त, शुक्र हो तो स्निग्ध और बुध लग्न में हो तो समस्त रसों का भोजन किया है। शनि लग्न में हो तो कषायला भोजन किया है, यह कहना चाहिए। भोजन के सम्बन्ध में चन्द्रमा, गुरु, मंगल से भी विचार करना चाहिए। ज्योतिष में सूर्य का कटु रस, चन्द्रमा का नमकीन, मंगल का तिक्त, बुध का मिश्रित, गुरु का मधुर, शुक्र का खट्टा और शनि का कषायला रस कहा है। जो ग्रह लग्न में हो अथवा लग्न को देखता हो, उसी के अनुसार भोजन का रस समझना चाहिए। चन्द्रमा जिस ग्रह के साथ इत्थशाल योग कर रहा हो, उस ग्रह का रस भोजन में प्रधान रूप से रहता है। लग्न में राहु या शनि सूर्य से दृष्ट हों तो भोजन अच्छा नहीं मिलता या अभाव रहता है।

विवाह प्रश्न

प्रश्नलग्न से विवाह के सम्बन्ध में विचार करते समय सप्तमेश का लग्नेश अथवा चन्द्रमा के साथ इत्थशाल योग हो तो शीघ्र ही विवाह होता है। यदि लग्नेश अथवा चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो भी शीघ्र विवाह होता है। सप्तमेश का जिस ग्रह के साथ इत्थशाल योग हो और वह ग्रह निर्बल, पापयुक्त या पापदृष्ट हो तो विवाह नहीं होता अथवा बहुत बड़ी परेशानी के बाद विवाह होता है। सप्तम भाव में पापग्रह हों अथवा अष्टमेश हो तो विवाह होने के पश्चात् पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु होती है तथा विवाह अत्यन्त अशुभ माना जाता है। सप्तम स्थान पर अथवा सप्तमेश पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो विवाह तीन महीने के मध्य में हो जाता है। लग्नेश, सप्तमेश तथा चन्द्रमा इन तीनों ग्रहों के स्वभाव, गुण, स्थान, दृष्टि आदि के द्वारा विवाह प्रश्न का उत्तर देना चाहिए।

कार्यसिद्धि-असिद्धि प्रश्न

पृच्छक का मुख जिस दिशा में हो उस दिशा की अंक संख्या (पूर्व १, पश्चिम २, उत्तर ३, दक्षिण ४); प्रहर संख्या (जिस प्रहर में प्रश्न किया गया है, उसकी संख्या—तीन-तीन घण्टे का एक प्रहर होता है। प्रातःकाल सूर्योदय से तीन घण्टे तक प्रथम प्रहर, आगे तीन-तीन घण्टे पर एक-एक प्रहर की गणना कर लेनी चाहिए।); वार संख्या (रविवार १, सोमवार २, मंगलवार ३, बुधवार ४, बृहस्पतिवार ५, शुक्रवार ६, शनिवार ७) और नक्षत्र संख्या (अश्विनी १, भरणी २, कृत्तिका ३, रोहिणी ४ इत्यादि गणना) को जोड़कर योगफल में आठ का भाग देना चाहिए। एक अथवा पाँच शेष रहे तो शीघ्र कार्यसिद्धि; छह अथवा चार शेष में तीन दिन में कार्य-सिद्धि; तीन अथवा सात शेष में विलम्ब से कार्यसिद्धि एवं शून्य शेष में कार्य की सिद्धि नहीं होती।

पृच्छक से एक से लेकर एक सौ आठ अंक के बीच की एक अंक संख्या पूछनी चाहिए। इस अंक संख्या में १२ का भाग देने पर १।७।९ शेष बचे तो विलम्ब से कार्यसिद्धि; ८।४।५।१० शेष में कार्यनाश एवं २।६।०।११ शेष में कार्यसिद्धि होती है।

गर्भस्थ सन्तान पुत्र है, या पुत्री का विचार

१—प्रश्नकुण्डली में लग्न में सूर्य, गुरु या मंगल हो अथवा ये ग्रह ३।५।७।९वें स्थान में हों तो पुत्र और अन्य कोई ग्रह इन स्थानों में हो तो कन्या होती है।

२—प्रश्नलग्न विषम राशि या विषम नवमांश में हो और लग्न में सूर्य, गुरु तथा चन्द्रमा बलवान् होकर स्थित हों तो पुत्र का जन्म होता है। समराशि या सम-राशि के नवमांश में ये ग्रह स्थित हों तो कन्या का जन्म होता है। गुरु और सूर्य विषम राशि में हों तो पुत्र; चन्द्रमा, शुक्र और मंगल समराशि में हों तो कन्या का जन्म होता है।

३—शनि लग्न के सिवा अन्य विषम राशि में स्थित हो तो पुत्र एवं द्विस्वभाव लग्न पर बुध की दृष्टि हो तो यमल सन्तान उत्पन्न होती है।

४—लग्न में पुरुष राशि हो और बलवान् पुरुष ग्रह की उसपर दृष्टि हो तो पुत्र; समराशि हो और स्त्री ग्रह की दृष्टि हो तो कन्या का जन्म होता है।

५—पंचमेश और लग्नेश समराशि में हों तो कन्या; विषमराशि में हों तो पुत्र उत्पन्न होता है। लग्नेश, पंचमेश एक साथ बैठे हों अथवा एक-दूसरे को देखते हों अथवा परस्पर एक-दूसरे के स्थान में हों तो पुत्रयोग होता है।

६—पुरुषग्रह—सूर्य, मंगल, गुरु बलवान् हों तो पुत्रजन्म और स्त्रीग्रह—चन्द्र, शुक्र बलवान् हों तो कन्या का जन्म होता है। प्रश्नकुण्डली में ३।५।९।११वें स्थान में सूर्य, मंगल और गुरु हों तो पुत्र का जन्म अथवा ५।९वें भाव में बलवान् गुरु बैठा हो तो पुत्र का जन्म होता है।

७—पृच्छक जिस दिन पूछ रहा है, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेकर उस दिन तक की तिथिसंख्या, प्रहरसंख्या, वारसंख्या, नक्षत्रसंख्या को जोड़कर, योगफल में से एक घटाकर सात का भाग देने से विषम अंक शेष रहे तो पुत्र और सम अंक शेष रहे तो कन्या होती है।

८—गर्भिणी के नाम के अक्षरों में वर्तमान तिथिसंख्या तथा पन्द्रह जोड़कर ९ का भाग देने से विषम अंक शेष रहे तो पुत्र और सम अंक शेष रहे तो कन्या होती है।

९—तिथि, वार, नक्षत्र-संख्या में गर्भिणी के नाम के अक्षरों को जोड़कर सात का भाग देने से एकादि शेष में रविवार, सोमवार आदि होते हैं। इस प्रक्रिया से रवि, भौम और गुरुवार निकले तो पुत्र; शुक्र, चन्द्र और बुधवार निकले तो कन्या एवं शनिवार निकले तो क्षीण सन्तति समझना चाहिए।

१०—गर्भिणी के नाम के अक्षरों में २० का अंक, वर्तमान तिथिसंख्या और ४ का अंक जोड़कर ९ का भाग देने से सम अंक शेष रहे तो कन्या और विषम अंक शेष रहे तो पुत्र उत्पन्न होता है।

११—यदि प्रश्नकर्ता प्रश्न करते समय अपने दाहिने अंग का स्पर्श करते हुए प्रश्न करे तो पुत्र और बायें अंग का स्पर्श करते हुए प्रश्न करे तो कन्या का जन्म होता है।

मूक प्रश्न विचार

यदि प्रश्नलग्न मेष हो तो प्रश्नकर्ता के मन में मनुष्यों की चिन्ता, वृष हो तो चौपायों या मोटर की चिन्ता, मिथुन हो तो गर्भ की चिन्ता, कर्क हो तो व्यवसाय की चिन्ता, सिंह हो तो जीव की चिन्ता, कन्या हो तो स्त्री की चिन्ता, तुला हो तो धन की चिन्ता, वृश्चिक हो तो रोगी की चिन्ता, मकर हो तो शत्रु की चिन्ता, कुम्भ हो तो स्थान की चिन्ता और मीन हो तो दैव सम्बन्धी चिन्ता समझनी चाहिए।

१—लग्नेश या लाभेश से जिस स्थान में चन्द्रमा बैठा हो उसी भाव की चिन्ता पृच्छक के मन में होती है।

२—बलवान् चन्द्रमा से जिस स्थान में लग्नेश बैठा हो उस भाव का प्रश्न जानना चाहिए।

३—जिस स्थान में चन्द्रमा बैठा हो उस स्थान का प्रश्न या उच्च और सबसे अधिक बलवान् ग्रह जिस भाव में बैठा हो उस भाव का प्रश्न जानना चाहिए।

४—लाभेश से जो ग्रह बलवान् (निसर्ग, काल, चेष्टा, दृष्टि, दिशा आदि बल से युक्त) हो उससे चन्द्रमा जिस भाव में हो उस भाव-सम्बन्धी प्रश्न प्रश्नकर्ता के मन में जानना चाहिए।

५—यदि लग्न में बलवान् ग्रह हो तो अपने विषय में, तीसरे स्थान में बलवान् ग्रह हो तो भाई के विषय में, पंचम स्थान में हो तो सन्तान के विषय में, चतुर्थ स्थान में हो तो माता और मौसी के विषय में, छठे स्थान में हो तो शत्रु के विषय में, सप्तम स्थान में हो तो स्त्री के विषय में, नवम स्थान में हो तो धर्म या भाग्य के विषय में, दशम में हो तो राजा के विषय में प्रश्न समझना चाहिए।

६—सूर्य अपने घर का हो तो राजा, राज्य के सम्बन्ध में अपनी या पिता की चिन्ता; चन्द्रमा स्वगृही हो तो जल, खेत, गढ़ा, धन और माता की चिन्ता; मंगल स्वगृही हो तो शत्रुभय, राजभय, भूमि, जमींदारी की चिन्ता; बुध स्वगृही हो तो खेत, आयुध, चाचा और स्वामी की चिन्ता; गुरु स्वगृही हो तो धर्म, मित्र, विद्या, गुरु और शासन के सम्बन्ध में चिन्ता; शुक्र स्वगृही हो तो अच्छी बातों की चिन्ता और शनि हो तो घर और भूमि की चिन्ता पृच्छक के मन में होती है।

७—चन्द्रमा लग्न में हो तो मार्ग या शत्रु की चिन्ता; धन में हो तो क्षेत्र, धन, भोज्य पदार्थों की चिन्ता; तीसरे स्थान में हो तो प्रवास की चिन्ता; चतुर्थ स्थान में हो तो घर और माता के विषय में चिन्ता; पंचम में हो तो सन्तान की चिन्ता; षष्ठ में हो तो रोगचिन्ता; सप्तम में हो तो स्त्री की चिन्ता; अष्टम स्थान में हो तो मृत्यु की चिन्ता; नवम में हो तो यात्रा की; दशम में हो तो खेत, कार्यसिद्धि की; एकादश में हो तो वस्त्र-लाभ की; और बारहवें में हो तो चोरी गयी वस्तु के लाभ की चिन्ता पृच्छक के मन में होती है।

८—मंगल बलवान् हो तो अपने विषय में; गुरु बलवान् हो तो स्त्री के विषय में; चन्द्रमा बलवान् हो तो माता के विषय में; शुक्र बलवान् हो तो वंश के विषय में; शनि बलवान् हो तो शत्रु के विषय में और सूर्य बलवान् हो तो पिता के विषय में प्रश्न पृच्छक के मन में होता है।

मुष्टिका प्रश्न विचार

प्रश्नसमय मेष लग्न हो तो मुट्ठी की वस्तु का लाल रंग; वृष लग्न हो तो पीला; मिथुन हो तो नीला; कर्क हो तो गुलाबी; सिंह हो तो धूमिल; कन्या हो तो नीला; तुला हो तो पीला; वृश्चिक हो तो लाल; धनु हो तो पीला; मकर तथा कुम्भ में कृष्ण वर्ण और मीन में पीला वर्ण होता है। वस्तु का विशेष स्वरूप लग्नेश के स्वरूप, गुण और आकृति से कहना चाहिए।

केरल मतानुसार प्रश्न विचार

प्रातःकाल पृच्छक आये तो उसके प्रश्नाक्षरों को या बालक के मुख से किसी पुष्प का नाम, मध्याह्न में बालक के मुख से फल का नाम, दिन के तीसरे पहर में बालक के मुख से देव का नाम और सायंकाल में नदी या तालाब का नाम ग्रहण करना

चाहिए। बालक के अभाव में प्रश्नकर्ता के मुख से ही पुष्पादि का नाम ग्रहण करना चाहिए। जो पृच्छक का प्रश्नवाक्य हो उसके स्वर और व्यंजनों का विश्लेषण कर निम्न प्रकार से पिण्ड बना लेना चाहिए।

अ = १२, आ = २१, इ = ११, ई = १८, उ = १५, ऊ = २२, ए = १८, ऐ = ३२, ओ = २५, औ = १९, अं = २५, क = १३, ख = ११, ग = २१, घ = ३०, ङ = १०, च = १५, छ = २१, ज = २३, झ = २६, ञ = २६, ट = १०, ठ = १३, ड = २२, ढ = ३५, ण = ४५, त = १४, थ = १८, द = १७, ध = १३, न = ३५, प = २८, फ = १८, ब = २६, भ = १७, म = ८६, य = १६, र = १३, ल = १३, व = ३५, श = २६, ष = ३५, स = ३५, ह = १२।

मात्रा-वर्ण ध्रुवांक चक्र

अ	१२	क	१३	ठ	१३	ब	२६
आ	२१	ख	१२	ड	२२	भ	२७
इ	११	ग	२१	ढ	३५	म	८६
ई	१८	घ	३०	ण	४५	य	१६
उ	१५	ङ	१०	त	१४	र	१३
ऊ	२२	च	१५	थ	१८	ल	१३
ए	१८	छ	२१	द	१७	व	३५
ऐ	३२	ज	२३	ध	१३	श	२६
ओ	२५	झ	२६	न	३५	ष	३५
औ	१९	ञ	२६	प	२८	स	३५
अं	२५	ट	१७	फ	१८	ह	१२

लाभालाभ के प्रश्न में पिण्ड-संख्या में ४२ क्षेपक का अंक जोड़ देना चाहिए और जो योगफल आये उसमें तीन का भाग देने पर १ शेष बचे तो पूर्ण लाभ, २ शेष बचे तो अल्प लाभ और शून्य शेष बचे तो हानि कहना चाहिए।

उदाहरण—गोपाल प्रातःकाल लाभालाभ का प्रश्न पूछने के लिए आया, इसलिए उससे किसी फूल का नाम पूछा, उसने चमेली का नाम लिया। 'चमेली' प्रश्न-वाक्य में च् + अ + म् + ए + ल् + ई ये स्वर और व्यंजन हैं। मात्रा और वर्ण ध्रुवांक पर से पिण्ड बनाया—

च् = १५, अ = १२, म् = ८६, ए = १८, ल् = १३, ई = १८, १५ + १२ + ८६ + १८ + १३ + १८ = १६२ पिण्डांक, इसमें क्षेपांक जोड़ा। १६२ + ४२ = २०४ ÷ ३ = ६८ लब्ध, शेष ०। यहाँ शून्य शेष रहा है, अतएव हानि फल समझना चाहिए।

जय-पराजय—पिण्डांक में ३४ जोड़कर तीन का भाग देने से १ शेष रहे तो जय, २ शेष में सन्धि और शून्य में पराजय कहनी चाहिए।

सुख-दुख—पिण्डांक में ३८ जोड़कर २ का भाग देने से एक शेष में सुख और शून्य में दुख समझना चाहिए।

गमनागमन—यात्रा के प्रश्न में पिण्डांक में ३३ जोड़कर ३ का भाग देने से १ शेष रहे तो तत्काल यात्रा, दो शेष में यात्रा का अभाव और शून्य शेष में पीड़ा और कष्ट समझना चाहिए।

जीवन-मरण—किसी रोगी या अन्य किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में कोई पूछे कि अमुक जीवित रहेगा या मरेगा अथवा जीवित है या मर गया है? तो इस प्रकार के प्रश्न में पिण्डांक में ४० जोड़कर ३ का भाग देने से एक शेष रहने से जीवित; दो रहने से कष्टसाध्य और शून्य शेष रहने से मृत समझना चाहिए।

वर्षाप्रश्न—वर्षा होगी या नहीं? इस प्रकार के प्रश्न में पिण्डांक में ३२ जोड़कर ३ का भाग देने से एक शेष में वर्षा, दो में अल्पवृष्टि और शून्य शेष में वर्षा का अभाव ज्ञात करना चाहिए।

गर्भ का प्रश्न—गर्भ है या नहीं, इस प्रकार के प्रश्न में पिण्डांक में २६ जोड़कर ३ का भाग देने से एक शेष रहे तो गर्भ, दो शेष में सन्देह और शून्य शेष में गर्भ का अभाव समझना चाहिए।

उदाहरण—देवदत्त अपने मुकदमा के सम्बन्ध में पूछने आया कि मैं उसमें विजय प्राप्त करूँगा या नहीं? उसके मुख से फल का नाम उच्चारण कराया तो उसने नीबू का नाम लिया। इस प्रश्न-वाक्य का पिण्डांक बनाने के लिए स्वर-व्यंजनों का विश्लेषण किया तो—

न् + ई + ब् + ऊ = ३५ + १८ + २६ + २२ = १०१ पिण्डांक। जय-पराजय का प्रश्न होने के कारण पिण्डांक में ३४ जोड़ा तो—

१०१ + ३४ - १३५ ÷ ३ = ४५ लब्ध, शेष शून्य रहा। अतएव यहाँ मुकदमे में पराजय समझना चाहिए। इसी प्रकार उपर्युक्त सभी प्रकार के प्रश्नों के उदाहरण समझ लेना चाहिए।

प्रकारान्तर से पुत्र-कन्या प्रश्न—यदि कोई प्रश्न करे कि कन्या होगी या पुत्र? तो प्रश्न समय के तिथि, वार, नक्षत्र और योग को जोड़कर उसमें नाम की अक्षर संख्या को भी जोड़कर ७ से भाग देना चाहिए। भाग देने से सम अंक—२।४।६ शेष रहें तो कन्या और विषम अंक—१।३।५।७ शेष रहें तो पुत्र का जन्म कहना चाहिए।

प्रश्नपिण्डांक में ३ का भाग देने से १ शेष में पुत्र का जन्म, २ में कन्या का जन्म और ० में गर्भ का अभाव समझना चाहिए।

उदाहरण—प्रश्नकर्ता का प्रश्नवाक्य यमुना नदी है, इसका विश्लेषण किया तो—य् + अ + म् + उ + न् + आ हुआ। १६ + १२ + ८६ + १ + ३५ + २१ = १८५ पिण्डांक, १८५ ÷ ३ = ६१ लब्ध, २ शेष, यहाँ दो शेष रहा है, अतः कन्या का जन्म समझना चाहिए।

कार्यसिद्धि की समय-मर्यादा—कोई पूछे हमारा कार्य कब तक होगा ? ऐसे प्रश्न में उस समय भी तिथिसंख्या, वारसंख्या और नक्षत्रसंख्या का योग कर, योगफल को ३ से गुणा कर ६ और जोड़ दें। इस योगफल में ९ का भाग देने से १ शेष में पक्ष, २ में मास, ३ शेष में ऋतु, ४ शेष में अयन अर्थात् ६ मास, ५ शेष में दिन, ६ शेष में रात, ७ शेष रहे तो प्रहर, ८ शेष में घटी और ९ शेष रहे तो एक मिनट में कार्य होने की अवधि समझना चाहिए।

उदाहरण—हरि पूछने आया कि मेरा कार्य कितने समय में होगा ? जिस दिन हरि आया उस दिन सप्तमी तिथि[1], गुरुवार और मघा नक्षत्र था। इन तीनों की संख्या का योग किया ७ + ५ + १० = २२, २२ × ३ = ६६ + ६ = ७२, ७२ ÷ ९ = ८ ल. ९ शे., १ मिनट में अर्थात् तत्काल ही पृच्छक का कार्य सिद्ध होगा।

विवाह प्रश्न—पृच्छक पूछे कि मेरा या अन्य किसी का विवाह होगा अथवा नहीं ? यदि होगा तो कम परिश्रम से होगा या अधिक से ? इस प्रकार के प्रश्न की पिण्डांक-संख्या में ८ से भाग देने पर १ शेष रहे तो अनायास ही विवाह, २ शेष रहे तो कष्ट से विवाह, ३ शेष रहें तो विवाह का अभाव, ४ शेष में जिस कन्या के साथ विवाह होनेवाला है उसकी मृत्यु, ५ में किसी कुटुम्बी की मृत्यु, ६ शेष में विवाह के समय राजभय, ७ शेष रहे तो दम्पति का मरण अथवा ससुर का मरण और ८ शेष रहें तो सन्तान की मृत्यु समझनी चाहिए।

उदाहरण—पृच्छक का प्रश्न-वाक्य यमुना है जिसकी पिण्डांक संख्या १८५ है, इसमें ८ से भाग दिया—

१८५ ÷ ८ = ३२ लब्ध, १ शेष। यहाँ १ शेष रहा है अतः आसानी से बिना कष्ट के विवाह होगा, ऐसा फल कहना चाहिए।

चमत्कार प्रश्न

१—जन्मपत्री मृतक की है, या जीवित की—इस प्रश्न में जन्मलग्न, अष्टम स्थान की राशि और प्रश्नलग्न इन तीनों की संख्या को जोड़कर जन्मकुण्डली के अष्टमेश की राशिसंख्या से गुणा कर लग्नेश की राशिसंख्या से भाग देने पर विषम अंक १।३।५।७।९।११ शेष रहें तो जीवित की और सम अंक २।४।६।८।१०।१२ शेष रहें तो मृतक की पत्रिका होती है।

उदाहरण—प्रश्नलग्न तुला, जन्मलग्न मीन, अष्टमेश की राशि ९, लग्नेश की राशि ५ है।

७ + १२ + ७ = २६ × ९ = २३४ ÷ ५ = ४६ लब्ध ४ शेष। अतएव मृतक की जन्मपत्रिका कहनी चाहिए।

---

१ तिथि गणना प्रतिपदा से, नक्षत्र गणना अश्विनी से और वार गणना रविवार से ली जाती है।

२—जन्मलग्न, प्रश्नलग्न और जन्मकुण्डली के अष्टमेश की राशि; इन तीनों को जोड़ने से जो योगफल आवे उसमें अष्टमेश की राशि से गुणा करना चाहिए और गुणनफल में प्रश्न-समय में सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उसकी संख्या से भाग देना चाहिए। सम शेष में मृतक की जन्मपत्री और विषम शेष में जीवित की जन्मपत्री होती है।

उदाहरण—जन्मल. १२+७ प्रश्नल.+अष्टमेश रा. ९=१२+७+९=२८

२८×९=२५२, प्रश्नसमय में सूर्य ५ राशि का है अतः ५ से भाग दिया तो—२५२÷५=५० लब्ध २ शेष। सम शेष रहने से मृतक की जन्मपत्री समझनी चाहिए।

१—पुरुष-स्त्री की जन्मपत्री का विचार—राहु और सूर्य जिस राशि पर हों उस राशि की अंकसंख्या तथा लग्नांक संख्या को जोड़कर ३ का भाग देने से शून्य और १ शेष में स्त्री की और २ शेष में पुरुष की जन्मपत्री होती है।

उदाहरण—राहु कन्या राशि, सूर्य कर्क राशि में और लग्न धनु राशि है। ६+४+९=१९÷३=६ लब्ध १ शेष। स्त्री की जन्मपत्री है।

२—जन्मलग्न को छोड़ अन्यत्र विषम स्थान में शनि स्थित हो और पुरुषग्रह बलवान् हो तो पुरुष की कुण्डली; इससे विपरीत हो तो स्त्री की कुण्डली समझनी चाहिए।

दम्पति की मृत्यु का ज्ञान—स्त्री-पुरुष में किसकी मृत्यु पहले होगी, इसका विचार करने के लिए नामाक्षर संख्या को तिगुना करना और मात्रा संख्या को चौगुना कर, दोनों संख्याओं को जोड़कर ३ का भाग देने पर १ शून्य शेष रहे तो पुरुष की पहले मृत्यु और २ शेष रहे तो स्त्री की पहले मृत्यु होती है।

पुरुष-स्त्री की जन्मराशि-संख्या को जोड़कर ३ का भाग देने से ० और १ शेष रहे तो पहले पुरुष की मृत्यु एवं २ शेष रहे तो पहले स्त्री की मृत्यु होती है। इस प्रकार प्रश्नों का फल निकाल लेना चाहिए।

इस प्रकार भारतीय ज्योतिष के व्यावहारिक सिद्धान्त वैदिक काल से आज तक उत्तरोत्तर विकसित होते चले आ रहे हैं। ऋग्वेद, कृष्ण यजुर्वेद, अथर्ववेद, शतपथ ब्राह्मण, मुण्डकोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, तैत्तिरीय ब्राह्मण, मैत्रायणी संहिता, काठक संहिता, अनुयोगद्वार सूत्र एवं समवायांग आदि में प्राचीन काल में ही ज्योतिष की महत्त्वपूर्ण चर्चाएँ लिखी गयी हैं। मेरा विश्वास है कि भारतीय वाङ्मय का ऐसा एक भी ग्रन्थ नहीं है, जिसमें ज्योतिष का उपयोग न किया गया हो। यह विज्ञान निरन्तर विकसित होता हुआ अपनी प्रभारश्मियों को दर्शनादि शास्त्रों पर विकीर्ण करता रहा है।

मैंने अथाह ज्योतिष-सागर में से कतिपय रत्नों को निकालकर राष्ट्रभाषा के प्रेमी पाठकों के समक्ष रखने का प्रयत्न किया है। यद्यपि इन रत्नों के साथ फेन भी मिलेगा; जिससे इनकी चमक मटमैली प्रतीत होगी, तो भी व्यावहारिक जीवनोपयोगी ज्ञान को ये अवश्य आलोकित करेंगे, इसमें सन्देह नहीं।

ज्योतिष के सैद्धान्तिक गणित को मैंने इसमें नहीं छुआ है। अवसर मिलने पर एक स्वतन्त्र पुस्तक ग्रहण, ग्रहों की गतियाँ एवं उनके बीज संस्कार आदि पर लिखूँगा। हिन्दी भाषा के प्रेमी पाठक इस आनन्दवर्द्धक विषय का आस्वादन करें यही मेरी आकांक्षा है।

ॐ शान्तिः ! ॐ शान्तिः !! ॐ शान्तिः !!!

लेखन में प्रयुक्त ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

अकलंक संहिता—अकलंकदेवकृत, हस्तलिखित, जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा
अथर्व ज्योतिष—सुधाकर सोमाकर भाष्य सहित, मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स काशी
अथर्ववेद—सायण भाष्य
अथर्ववेद संहिता—हिन्दी भाष्य
अद्भुततरंगिणी—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
अद्भुतसागर—बल्लालसेन विरचित, प्रभाकरी यन्त्रालय, काशी
अद्वैतसिद्धि—गवर्नमेण्ट संस्कृत लाइब्रेरी, मैसूर
अनन्तफलदर्पण—हस्तलिखित
अर्घकाण्ड—दुर्गदेव, हस्तलिखित
अर्घप्रकाश—निर्णयसागर प्रेस, बम्बई
अर्हच्चूडामणिसार—भद्रबाहु स्वामी, महावीर ग्रन्थमाला, घुलियान
अलबरूनीज़ इण्डिया—अँगरेजी
आचाराङ्ग सूत्र—आगमोदय समिति
आयज्ञानतिलक संस्कृत टीका—भट्टवोसरि, जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा
आयसद्भाव प्रकरण—मल्लिषेण, जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा
आरम्भसिद्धि—हेमहंसगणि टीका सहित, लब्धिसूरीश्वर जैन ग्रन्थमाला, छाणी
आर्यभटीय—व्रजभूषणदास ऐण्ड सन्स, बनारस
आर्य सिद्धान्त—व्रजभूषणदास ऐण्ड सन्स, बनारस
इण्डिया ह्वाट कैन इट टीच अस— अँगरेजी
उत्तरकालामृत—अँगरेजी अनुवाद, बेंगलोर
ऋग्वेद—सायणभाष्य सहित, पूना
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका
ऋग्वेदिक इण्डिया
ऋग्वेद अँगरेजी अनुवाद—मैक्समूलर
ऋग्वेद ज्योतिष—सोम-सुधाकर भाष्य
एवरी डे एस्ट्रोलाजी—बी. ए. ऐयर, तारापोरेवाला सन्स ऐण्ड को., बम्बई

एस्ट्रोनामी इन ए नटशेल—गैरट पी. सर्विस विरचित तारापोरेवाला सन्स ऐण्ड को., बम्बई
एस्ट्रोनामी—टीमस हीथ, तारापोरेवाला सन्स ऐण्ड को., बम्बई
एस्ट्रोनामी—टेट्स विरचित तारापोरेवाला सन्स ऐण्ड को., बम्बई
एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ ब्रिटैनिका—
ऐतरेय ब्राह्मण—सायण भाष्य, सं. काशीनाथ
एन्सेण्ट ऐण्ड मिडिएवल इण्डिया—
करण कुतूहल—बनारस
करण प्रकाश—चौखम्बा संस्कृत सीरीज, काशी
काठक संहिता—
कालजातक—हस्तलिखित
केरल प्रश्नरत्न—वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई
केरल प्रश्न संग्रह—,, ,, ,,
केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि—भारतीय ज्ञानपीठ, काशी
केवलज्ञानहोरा—चन्द्रसेन मुनि, जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा
खण्डनखाद्य—ब्रह्मगुप्त, कलकत्ता विश्वविद्यालय
खेटकौतुक—सुखसागर, ज्ञान प्रचारक सभा, लोहावट (मारवाड़)
गणकतरंगिणी—सुधाकर द्विवेदी, गवर्नमेण्ट संस्कृत कॉलेज, काशी
गणितसार संग्रह—महावीराचार्य
गर्गमनोरमा—वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
गर्गमनोरमा—सीताराम झा की टीका, बनारस
गौरीजातक—हस्तलिखित
ग्रहलाघव—सुधामंजरी टीका, बनारस
ग्रहलाघव—सुधाकर टीका
चन्द्रार्क ज्योतिष—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
चन्द्रोन्मीलन प्रश्न—हस्तलिखित, जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा
चन्द्रोन्मीलन प्रश्न—बृहद्ज्योतिषार्णव के अन्तर्गत
चमत्कार चिन्तामणि—भाव प्रबोधिनी टीका, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, काशी
छान्दोग्योपनिषद्—निर्णय सागर प्रेस, बम्बई
छान्दोग्य ब्राह्मण—हिन्दी भाष्य
जातकतत्त्व—महादेवशर्मा, रतलाम
जातक पद्धति—केशवीय, वामनाचार्य संशोधन सहित, काशी
जातकपारिजात—परिमल टीका, चौखम्बा, काशी
जातकाभरण—ढुण्ढिराज, बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा

आतंकक्रोड़पत्र—शशिकान्त झा, मुजफ़्फ़रपुर
ज्योतिर्गणित कौमुदी—रजनीकान्त, बम्बई
ज्योतिष तत्त्वविवेक निबन्ध—बम्बई
ज्योतिर्विवेकरत्नाकर—कर्मवीर प्रेस, जबलपुर
ज्योतिषसार—हस्तलिखित, नया मन्दिर, दिल्ली
ज्योतिषसार संग्रह—(प्राकृत) भगवानदास टीका, नरसिंह प्रेस, २०१ हरिसन रोड, कलकत्ता
ज्योतिष श्याम संग्रह—वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
ज्योतिष सिद्धान्तसार संग्रह—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
ज्योति सागर— ,, ,,
ज्योतिष सिद्धान्तसार—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
ज्ञानप्रदीपिका—जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा
ठाणाङ्ग—हस्तलिखित, आरा
तत्त्वार्थसूत्र—पन्नालाल बाकलीवाल टीका
ताजिक-नीलकण्ठी—शक्तिधर टीका
त्रिलोक प्रज्ञप्ति—जीवराज ग्रन्थमाला, शोलापुर
त्रिलोकसार—माधवचन्द्रत्रैविद्य संस्कृत टीका, बम्बई
दशाफल दर्पण—महादेव पाठक, भुवनेश्वरी प्रेस, रतलाम
दैवज्ञकामधेनु—ब्रजभूषणदास ऐण्ड सन्स, काशी
दैवज्ञ कल्पद्रुम—धौलपुर
दैवज्ञ मनोरम—चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, काशी
नरपतिजयचर्या—निर्णय सागर प्रेस, बम्बई
नारचन्द्र ज्योतिष—हस्तलिखित, जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा
नारचन्द्र ज्योतिष प्रकाश—रतीलाल-प्राणभुवनदास, चूड़ीवाला, हीरापुर, सूरत
निमित्तशास्त्र—ऋषिपुत्र, शोलापुर
पञ्चाङ्गतत्त्व—निर्णय सागर प्रेस, बम्बई
पञ्चसिद्धान्तिका—डॉ. थीबो तथा सुधाकर टीका
पञ्चाङ्गफल—ताड़पत्रीय, जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा
पाशाकेवली—हस्तलिखित, जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा
प्रश्नकुतूहल—वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
प्रश्नोपनिषद्—हस्तलिखित, जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा
प्रश्नकौमुदी—वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
प्रश्नचिन्तामणि—,, ,,
प्रश्ननारदीय—बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा

प्रश्न वैष्णव—वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
प्रश्नसिद्धान्त—वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
प्रश्नसिन्धु—मनोरंजन प्रेस, बम्बई
बृहद्ज्योतिषार्णव—बम्बई
बृहज्जातक—मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स, काशी
बृहत्पाराशरी—मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स, काशी
बृहत्संहिता—वी. जे. लॉजरस कम्पनी, काशी
ब्रह्मसिद्धान्त—ब्रजभूषणदास ऐण्ड सन्स, काशी
भविष्यज्ञान ज्योतिष—तिलकविजय रचित, कटरा खुशालराम, देहली
भावप्रकरण—विमलगणि विरचित, सुखसागर ज्ञानप्रचारक सभा, लोहावट (मारवाड़)
भावकुतूहल—ब्रजवल्लभ हरिप्रसाद, कालबादेवी रोड, रामबाड़ी, बम्बई
भावनिर्णय—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरिदेव, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
मण्डलप्रकरण—मुनि चतुरविजय कृत, आत्मानन्द जैन सभा, भावनगर
महाभारत—आदिपर्व और वनपर्व, हिन्दी टीका
मानसागरी पद्धति—निर्णय सागर प्रेस, बम्बई
मानसागरी पद्धति—चौखम्बा संस्कृत सीरीज, काशी
मुहूर्त चिन्तामणि—पीयूषधारा टीका
मुहूर्त चिन्तामणि—मिताक्षरा टीका
मुहूर्त मार्तण्ड—चौखम्बा संस्कृत सीरीज, काशी
मुहूर्तदर्पण—आरा
मुण्डकोपनिषद्—निर्णय सागर प्रेस, बम्बई
मुहूर्त संग्रह—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
मुहूर्तसिन्धु—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
मुहूर्तगणपति—चौखम्बा संस्कृत सीरीज, काशी
यजुर्वेद संहिता—वाजसनेय-माध्यन्दिन-संहिता, संस्कृत भाष्य
यन्त्रराज—महेन्द्रगुरु रचित, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई
रिष्टसमुच्चय—दुर्गदेव रचित, गोधा ग्रन्थमाला, इन्दौर
लघुजातक—मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स, काशी
वर्षप्रबोध—मेघविजयगणि कृत, भावनगर
विद्यामाधवीय—गवर्नमेण्ट संस्कृत लाइब्रेरी, मैसूर
विवाहवृन्दावन—मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स, काशी
वैजन्ती गणित—राघायन्त्रालय, बीजापुर
शतपथ ब्राह्मण—सत्यव्रत सामश्रमी, सायण भाष्य सहित

समरसार—वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
समवायांग—जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा, हस्तलिखित भण्डार
सर्वानन्दकरण—लोकसंग्रह मुद्रणालय, पूना
सामवेद—सायण भाष्य, दुर्गादास, लाहिड़ी
सारावली—कल्याणवर्मा विरचित, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई
सुगम ज्योतिष—देवीदत्त जोशीकृत, मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स, काशी
सूर्यसिद्धान्त—सुधाकर भाष्य सहित